इटली की लोक कथाऐं–3

अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title : Italy Ki Lok Kathayen-3 (Folktales of Italy-3)
Cover Page picture: Colosseum, Rome, Italy
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: http://sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of Italy

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

इटली की लोक कथाऐं–3

इटली देश यूरोप महाद्वीप के दक्षिण पश्चिम की तरफ भूमध्य सागर के उत्तरी तट पर स्थित है। पुराने समय में यह एक बहुत ही शक्तिशाली राज्य था। रोमन साम्राज्य अपने समय का एक बहुत ही मशहूर राज्य रहा है। उसकी सभ्यता भी बहुत पुरानी है – करीब 3000 साल पुरानी। इसका रोम शहर 753 बी सी में बसाया हुआ बताया जाता है पर यह इटली की राजधानी 1871 में बना था। इटली में कुछ शहर बहुत मशहूर हैं – रोम, पिसा, फ्लौरैन्स, वेनिस आदि। यहाँ की टाइबर नदी बहुत मशहूर है। यूरोप में लोग केवल लन्दन, पेरिस और रोम शहर ही घूमने जाते हैं।

रोम में रोम का कोलोज़ियम और वैटिकन सिटी में वहाँ का अजायबघर सबसे ज़्यादा देखे जाते हैं। पिसा में पिसा की झुकती हुई मीनार संसार के आदमी द्वारा बनाये गये आठ आश्चर्यों में से एक है। इटली का वेनिस शहर नहरों में बसा हुआ एक शहर[1] है। इस शहर में अधिकतर लोग इधर से उधर केवल नावों से ही आते जाते हैं। यहाँ कोई कार नहीं है कोई सड़क पर चलने वाला यातायात का साधन नहीं है, केवल नावें हैं और नहरें हैं। शायद तुम्हें मालूम नहीं होगा कि असल में वेनिस शहर कोई शहर नहीं है बल्कि 118 द्वीपों को पुलों से जोड़ कर बनाया गया जमीन का एक टुकड़ा है इसलिये ये नहरें भी नहरें नहीं हैं बल्कि समुद्र का पानी है और वह समुद्र का पानी नहर में बहता जैसा लगता है।

इटली का रोम कैसे बसा? कहते हैं कि रोम को बसाने वाला वहाँ का पहला राजा रोमुलस था। रोमुलस और रेमस दो जुड़वाँ भाई थे जो एक मादा भेड़िया का दूध पी कर बड़े हुए थे। दोनों ने मिल कर एक शहर बसाने का विचार किया पर बाद में एक बहस में रोमुलस ने रेमस को मार दिया और उसने खुद राजा बन कर 7 अप्रैल 753 बीसी को रोम की स्थापना की। इटली के रोम शहर में संसार का मशहूर सबसे बड़ा कोलोज़ियम[2] है जहाँ 5000 लोग बैठ सकते हैं। पुराने समय में यहाँ लोगों को सजाऐं दी जाती थीं।

इटली के अन्दर वैटीकन सिटी है जो ईसाई धर्म के कैथोलिक लोगों का घर है पर यह एक अपना अलग ही देश है। वहाँ इसके अपने सिक्के और नोट हैं। इसकी अपनी सेना है। पोप इस देश का राजा है। इसका अजायबघर बहुत मशहूर है। यह संसार का सबसे छोटा देश है क्षेत्र में भी और जनसंख्या में भी – 842 आदमी केवल 4 वर्ग मील के क्षेत्र में बसे हुए।

इटली की बहुत सारी लोक कथाऐं हैं। इटली की सबसे पहली लोक कथाऐं 1353 में लिखी गयी थीं दूसरी 1550 में और तीसरी 1634 में लिखी गयी थी।[3] इतालो कैलवीनो[4] का लोक कथाओं का यह संग्रह जिसमें से हमने ये लोक कथाऐं ली हैं इटैलियन भाषा में 1956 में संकलित कर के प्रकाशित किया गया था। इनका सबसे पहला अंग्रेजी अनुवाद 1962 में छापा गया। उसके बाद सिलविया मल्कही[5] ने इनका अंग्रेजी अनुवाद 1975 में प्रकाशित किया। फिर मार्टिन ने इनका अंग्रेजी अनुवाद 1980 में किया। ये लोक कथाएँ हम मार्टिन की पुस्तक से ले कर अपने हिन्दी भाषा भाषियों के लिये यहाँ हिन्दी भाषा में प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को पसन्द आयेंगी।

---

[1] City of Canals

[2] Colosseum

[3] There are three the earliest, main and very famous books from Italy – Decamerone (1353 – first translation by John Payne published in 1886), Nights of Straparola (1550), Pentamerone (1634),

[4] “Italian Folktales” by Italo Calvino, 1965. This book was translated by George Martin. San Diego, Harcourt Brace Jovanovich, Publishers. 1980. 300 p.

[5] Sylvia Mulcahy

इतालो ने इस पुस्तक में दो सौ लोक कथाऐं संकलित की हैं। हमने उन दो सौ लोक कथाओं में से एक सौ पच्चीस लोक कथाऐं चुनी हैं। फिर भी क्योंकि वे बहुत सारी लोक कथाऐं हैं इसलिये वे सब पढ़ने की आसानी के लिये एक ही पुस्तक में नहीं दी जा रही हैं। ये सब लोक कथाऐं पुस्तक में लिखी हुए कम से ही यहाँ दी गयीं हैं। इस पुस्तक के पहले संकलन यानी "इटली की लोक कथाऐं–**1**"[6] में इतालो की पुस्तक की **1–23** नम्बर तक की बीस कथाऐं दी गयी थीं। इसके दूसरे भाग में **24–55** नम्बर तक की बीस कथाऐं दी गयी थीं। [7]

तुम सब लोगों को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि वे दोनों ही पुस्तकें बहुत पसन्द की गयीं। तो अब यह प्रस्तुत है तुम्हारे हाथों में इटली की लोक कथाओं का तीसरा संकलन – "इटली की लोक कथाऐं–**3**"।[8] इस संकलन में हम उस पुस्तक की नम्बर **56–81** नम्बर तक की ग्यारह लोक कथाऐं प्रकाशित कर रहे हैं। हमें आशा ही नहीं बल्कि पूरा विश्वास है कि यह तीसरा संकलन भी तुम लोगों को पहले दो संकलनों की तरह बहुत पसन्द आयेगा और मजेदार लगेगा।

---

[6] "Italy Ki Lok Kathayen-1" – 20 folktales (No 1-21), by Sushma Gupta in Hindi languge
[7] "Italy Ki Lok Kathayen-2" – 20 folktales (No 22-50), by Sushma Gupta in Hindi language
[8] "Italy Ki Lok Kathayen-3" – 11 folktales (No 51-72), by Sushma Gupta in Hindi language

1 सात सिर वाला राक्षस[9]

एक बार एक मछियारा था जिसके कोई बच्चा नहीं था हालाँकि उसकी शादी को कई साल हो गये थे।
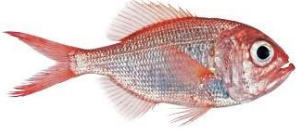
एक दिन उस मछियारे ने अपना जाल उठाया और मछली पकड़ने के लिये पास वाली एक झील पर गया। वहाँ उस दिन उसने एक बहुत बड़ी और सुन्दर मछली पकड़ी।

जैसे ही उसने वह मछली पानी से बाहर निकाली उस मछली ने मछियारे से प्रार्थना की वह उसको छोड़ दे। उसने कहा कि अगर वह उसको छोड़ देगा तो वह उसको एक ऐसे तालाब का पता बतायेगी जहाँ वह बहुत जल्दी से और बहुत सारी मछली पकड़ पायेगा।

मछली को बोलते हुए सुन कर मछियारा डर गया और तुरन्त ही उसने उसको वहीं पानी में छोड़ दिया। मछली ने फिर उसको उस तालाब का पता बताया जहाँ वह बहुत जल्दी से और बहुत सारी मछली पकड़ सकता था और वह खुद तुरन्त ही पानी में गायब हो गयी।

[9] The Dragon with Seven Heads. Tale No 58. A folktale from Italy from its Bologna area.

मछियारा मछली के बताये गये तालाब पर गया और दो तीन बार में ही उसने इतनी सारी मछलियाँ पकड़ लीं कि वह एक गधे के बोझ के बराबर हो गयीं।

जब वह घर लौटा तो उसकी पत्नी ने पूछा कि उसने इतनी सारी मछली इतनी जल्दी से कैसे पकड़ लीं। मछियारे ने जो कुछ झील भी पर हुआ था सब कुछ उसको विस्तार में बता दिया।

इस पर उसकी पत्नी बहुत नाराज हो कर बोली — "तुम तो बहुत ही सीधे हो। तुमने इतनी सुन्दर मछली को कैसे जाने दिया? कल याद कर के उस मछली को पकड़ लेना और घर ले आना। कल मैं उसका सूप बनाऊँगी। उसका सूप तो बड़ा मजेदार बनना चाहिये।"

अपनी पत्नी को खुश करने के लिये अगले दिन वह उसी झील पर फिर वापस गया और मछली पकड़ने के लिये अपना जाल फेंका। उस दिन भी वह बोलती मछली उसके जाल में आ गयी और उस दिन भी उसने उसकी प्रार्थना पर उसको छोड़ दिया।

पिछले दिन की तरह से उस मछियारे ने उस दिन भी उसी तालाब में से फिर से बहुत सारी मछलियाँ पकड़ीं और फिर जब वह घर लौट कर आया तो उसने अपनी पत्नी को बताया कि उस दिन क्या हुआ था तो वह फिर से बहुत बहुत नाराज हुई।

उसने अपनी कमर पर हाथ रखे और अपने पति को घर से बाहर निकाल कर कहा — "ओ बेवकूफ बैल, खरदिमाग[10], क्या तुमको पता नहीं चल रहा कि खुशकिस्मती तुमसे दूर भाग रही है?

तुम ऐसी मछली को छोड़ कैसे सकते हो? या तो तुम मुझे वह बड़ी मछली कल ला कर दे दो वरना पछताओगे कि तुम उसको ले कर क्यों नहीं आये। आया समझ में?"

सुबह को वह मछियारा फिर उसी झील पर गया। उसने फिर अपना जाल फेंका और उस बड़ी मछली को फिर से पकड़ लिया। आज उसने उस मछली की प्रार्थना पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया।

बस वह उसको ले कर सीधा घर गया। उसकी पत्नी ने उससे वह मछली ले ली। वह मछली अभी भी ज़िन्दा थी सो उसने उसको ताजा पानी से भरे एक टब में डाल दिया।

दोनों पति पत्नी उसके पास खड़े खड़े उसको देखते रहे और बात करते रहे कि उसको किस तरह से बनाया जाये ताकि वह सब से ज़्यादा स्वादिष्ट बने।

इसी समय उस मछली ने अपना सिर पानी में से बाहर निकाला और बोली — "क्योंकि मैं अब मरने से नहीं बच सकती इसलिये मैं तुम लोगों से कुछ कहना चाहती हूँ।"

---

[10] Translated for the word "Blockheaded"

मछियारे और उसकी पत्नी ने कहा कि "बोलो" तो मछली बोली — "जब मैं मर जाऊँ, पक जाऊँ और काट दी जाऊँ तो मेरा माँस इस औरत को खाने के लिये दे देना।

मेरा रस घोड़ी को पिला देना। मेरा सिर कुत्ते को खिला देना। मेरी तीन सबसे बड़ी हड्डियाँ बागीचे में गाड़ देना और मेरा गौल ब्लैडर[11] रसोई में एक लट्ठे से टाँग देना। तुम्हारे बच्चे हो जायेंगे। अगर तुम्हारे बच्चों में से किसी भी बच्चे को कोई भी दुख होगा तो मेरे गौल ब्लैडर से खून टपकने लगेगा।"

इसके बाद मछियारे की पत्नी ने उसे काट कर पका लिया। दोनों ने जैसा कि मछली ने उनसे कहा था वैसा ही किया। उसका माँस उस औरत ने खा लिया। उसका रस घोड़ी को पिला दिया। उसका सिर कुत्ते को खिला दिया। उसकी तीन सबसे बड़ी हड्डियाँ बागीचे में गाड़ दीं और उसका गौल ब्लैडर रसोई में एक लट्ठे से टाँग दिया।

कुछ समय बीत गया तो एक ही रात में उस औरत को, उस घोड़ी को और उस कुतिया को सबको तीन तीन नर बच्चे हुए। मछियारा बोला — "ओह, नौ बच्चे एक ही रात में।"

वे तीनों बच्चे आपस में इतने एक से लगते थे कि अगर उनके गले में कोई पट्टा न बाँधा जाये तो उनको अलग अलग करना मुमकिन नहीं था।

---

[11] Gall Bladder – a part of the body

मछली की जो तीन हड्डियाँ बागीचे में बोयी गयीं थीं उनसे तीन सुन्दर तलवारें पैदा हुईं। मछियारे के तीनों लड़के जब बड़े हो गये तो उसने उनको हर एक को एक एक घोड़ा, एक एक कुत्ता और एक एक तलवार और अपनी तरफ से एक एक बन्दूक भेंट में दे दी।

कुछ दिनों बाद उसका सबसे बड़ा बेटा गरीबी में रहता रहता थक गया तो उसने बाहर जा कर अपनी किस्मत आजमाने का विचार किया। वह अपने घोड़े पर चढ़ा, अपना कुत्ता, तलवार और बन्दूक उठायी और सबको विदा कहा।

अपने भाइयों से उसने कहा — "अगर उस लट्ठे से लटके गौल ब्लैडर से खून टपके तो तुम लोग मुझे ढूँढने निकल पड़ना। क्योंकि उस समय मैं या तो मर गया होऊँगा या फिर किसी भारी मुसीबत में फँस गया होऊँगा।" और वह वहाँ से चला गया।

बहुत दिनों तक वह अनजानी जगहों से गुजरता रहा। आखिर में वह एक बड़े शहर के दरवाजे पर आया। उसने देखा कि सारा शहर दुख में डूबा हुआ है।

वह उस शहर में घुसा तो उसने देखा कि उस शहर के सब रहने वाले शोक मना रहे हैं और काले कपड़े पहने घूम रहे हैं। उसने खाना खाने के लिये उस शहर में एक सराय ढूँढी और उस सराय के मालिक से इस दुख और शोक की वजह पूछी।

सराय के मालिक ने उसको बताया कि एक सात सिर वाला राक्षस है जो यहाँ रोज पुल पर तीसरे पहर में आता है। उस समय अगर उसको कोई कुँआरी लड़की खाने के लिये न दी जाये तो वह शहर के अन्दर घुस आता है और जो कोई भी उसके रास्ते में आता है उसको मार डालता है।

रोज ही बहुत सारे लोग मारे जाते हैं। आज राजा की बेटी का बारी है। आज उस राक्षस के खाने के लिये उसको उस पुल पर दोपहर को होना चाहिये।

राजा ने मुनादी भी पिटवा रखी है कि जो कोई राजा की बेटी को इस सात सिर वाले राक्षस से बचायेगा वह उसी से अपनी बेटी की शादी कर देगा।

वह लड़का बोला — "राजा की बेटी को और सारे शहर को बचाने का कोई न कोई रास्ता तो होना ही चाहिये। मेरे पास एक मजबूत तलवार है, एक कुत्ता है, एक घोड़ा है, और एक बन्दूक है। मैं राजा से मिलना चाहूँगा।"

शहर वाले उसको तुरन्त ही राजा के पास ले गये। उसने राजा से उस राक्षस को मारने की इजाज़त माँगी।

राजा बोला — "ओ साहसी लड़के, ध्यान रखो कि तुमसे पहले और भी कई लोग उस राक्षस को मारने की कोशिश कर चुके हैं और इस कोशिश में मारे जा चुके हैं। बेचारे लोग। मुझे उन पर तरस आता है।

पर अगर तुम अपनी ज़िन्दगी को खतरे में डाल कर उस राक्षस को मारना चाहते हो तो तुम ऐसा कर सकते हो। और अगर तुमने उस राक्षस को मार दिया तो मैं अपनी बेटी की शादी तुमसे कर दूँगा और मरने के बाद अपना राज्य भी तुमको दे जाऊँगा।"

वह लड़का बोला — "राजा साहब, मैं उस राक्षस को मारना चाहता हूँ आप अपनी बेटी को निडर हो कर पुल पर भेजिये।"

यह कह कर उस निडर नौजवान ने अपना कुत्ता लिया और घोड़ा लिया और उस पुल पर जा कर बैठ गया जहाँ वह राक्षस आने वाला था। ठीक बारह बजे राजा की बेटी सिर से पाँव तक काली सिल्क की पोशाक पहने अपनी दासियों के साथ वहाँ आ गयी।

जब वे सब पुल पर आधी दूर चल कर आ गयीं तो उसकी दासियाँ उसको वहाँ उसी के भरोसे छोड़ कर आँखों में आँसू लिये वहाँ से लौट गयीं। उसने इधर उधर देखा तो पुल पर एक आदमी को एक कुत्ते के साथ बैठा पाया।

वह बोली — "ओ कुलीन नौजवान, तुम यहाँ क्या कर रहे हो? क्या तुमको मालूम नहीं कि एक राक्षस यहाँ बस किसी भी समय मुझे खाने के लिये आने वाला है। और अगर उसने तुमको यहाँ देख लिया तो वह तुमको भी खा जायेगा।"

उस लड़के ने जवाब दिया — "मुझे उसके बारे में अच्छी तरह मालूम है राजकुमारी जी और मैं यहाँ तुमको उसी से बचाने और फिर तुमसे शादी करने के लिये ही आया हूँ।"

राजकुमारी बोली — "ओ गरीब नौजवान, तुम भाग जाओ यहाँ से, नहीं तो उस राक्षस को आज मेरी बजाय दो दो लोग खाने को मिल जायेंगे। वह राक्षस बहुत ताकतवर है। तुम उसको मारने की सोच भी कैसे सकते हो।"

उधर वह नौजवान राजकुमारी को देखते ही उससे प्यार करने लगा था। वह बोला — "तुम्हारे प्यार के लिये तो मैं अपनी ज़िन्दगी को भी खतरे में डाल सकता हूँ। और नहीं तो क्या होगा मेरा?"

अभी वह यह सब कह कर ही चुका था कि महल की घड़ी ने बारह बजाये। जमीन काँपने लगी और एक सात सिर वाला राक्षस धुँए और आग की लपटों में से निकल कर आता दिखायी दिया।

वहाँ से निकल कर वह सीधा राजकुमारी की तरफ बढ़ा। उसके सातों मुँह खुले हुए थे और वह खुशी से सीटी बजा रहा था क्योंकि उसने देख लिया था कि आज उसको एक की बजाय दो आदमी खाने को मिल रहे थे।

वह नौजवान बिजली की सी तेज़ी से अपने घोड़े पर चढ़ गया और उस राक्षस की तरफ बढ़ा। उसने अपने कुत्ते को भी राक्षस के ऊपर हमला करने को कहा।

अपनी तलवार लहराते हुए उसने उस राक्षस के एक के बाद एक सात में से छह सिर काट डाले। इसके बाद राक्षस ने सुस्ताने के

लिये कुछ समय माँगा। वह लड़का भी बहुत हाँफ रहा था सो बोला — "ठीक है हम कुछ देर के लिये सुस्ता लेते हैं।"

पर राक्षस ने क्या किया कि उसने अपना सातवाँ सिर जमीन पर रगड़ा और वह फिर से अपने सातों सिरों के साथ उठ कर खड़ा हो गया।

यह देख कर उस नौजवान ने सोच लिया कि उसको उसके सातों सिर एक साथ ही काटने होंगे तभी वह मरेगा। सो वह राक्षस की तरफ दौड़ा और अपनी तलवार तब तक चलाता रहा जब तक कि उसके सातों सिर कट कर जमीन पर नहीं गिर गये।

उसके बाद उसने अपनी तलवार से उसके सातों सिरों की सातों जीभें काट लीं। फिर उसने राजकुमारी से पूछा — "तुम्हारे पास कोई रूमाल है क्या?"

राजकुमारी ने उसको एक रूमाल दे दिया। उस रूमाल में उसने वे सातों जीभें रख लीं और अपने घोड़े पर चढ़ कर अपनी सराय आ गया जहाँ उसने खाना खाया था।

वहाँ आ कर वह नहाया धोया और अपने कपड़े बदल कर राजा के पास जाने के लिये तैयार हुआ।

जैसा कि उसकी किस्मत में लिखा था – उस पुल के पास एक बहुत ही चालाक और नीच कोयला बेचने वाला[12] रहता था। वह दूर से ही यह लड़ाई देख रहा था।

---

[12] Translated for the word "Coalman"

उसने सोचा आज मैं इस नौजवान को बेवकूफ बनाता हूँ। इसने जो ये कटे हुए सिर यहाँ नीचे छोड़ दिये हैं मैं इनका इस्तेमाल कर के राजकुमारी से शादी करता हूँ।

वह वहाँ गया, उसने सातों सिर उठाये, एक थैले में रखे और राजा के महल की तरफ चल दिया। साथ में उसने राक्षस के खून से सना हुआ बड़ा वाला चाकू भी अपने हाथ में ले लिया।

वहाँ जा कर वह बोला — "राजा साहब देखिये, आपके सामने यह राक्षस को मारने वाला खड़ा है। और ये हैं उसके सातों सिर जो मैंने इस चाकू से एक एक कर के काटे हैं। अब आप अपना शाही वायदा निभायें और अपनी बेटी की शादी मुझसे कर दें।"

राजा तो उस बदसूरत आदमी को देख कर सन्न रह गया। उसको उस आदमी की कहानी की सचाई पर शक हो रहा था।

उसको पूरा विश्वास था कि वह साहसी नौजवान मारा गया और आखिरी पल में जब उसने राक्षस को मार दिया होगा तो यह कोयले वाला आदमी वहाँ पहुँच गया होगा और उसके सिर ले कर यहाँ चला आया है।

पर शाही वायदा तो टाला नहीं जा सकता था सो राजा बोला — "अगर ऐसे ही हुआ है जैसा कि तुम बता रहे हो तो मेरी बेटी तुम्हारी है तुम उसे ले जा सकते हो।"

इस समय राजकुमारी ने जो उस समय दरबार में ही थी और यह सब सुन रही थी चिल्लाना शुरू कर दिया — "यह झूठ बोल रहा है

पिता जी। यह वह नहीं है जिसने उस राक्षस को मारा। वह तो अभी आने वाला होगा।”

इस बात पर कुछ गर्मागर्म बहस होने लगी पर वह कोयला बेचने वाला आदमी अपनी कहानी पर डटा रहा और उसे साबित करने के लिये उसने वे सातों सिर वहाँ रखे हुए थे।

राजा के पास उसकी बात न मानने की कोई वजह नहीं थी क्योंकि राक्षस के सातों सिर वहाँ मौजूद थे।

उसके पास और कोई चारा भी नहीं था सो उसने अपनी बेटी को शान्त रहने के लिये और जा कर शादी के लिये तैयार होने के लिये कहा। उसी समय राजा ने अपनी बेटी की शादी की घोषणा भी कर दी।

तीन दिन में शादी होने वाली थी और तीनों दिन एक शानदार दावत होने वाली थी। उन तीनों दिनों के आखीर में शादी हो जाने वाली थी।

इस बीच वह नौजवान जिसने सचमुच में राक्षस को मारा था राजा के महल में आया। पर राजा के चौकीदारों ने उसको किसी भी कीमत पर अन्दर नहीं जाने दिया।

उसी समय उसने एक शाही मुनादी पीटने वाले को सुना। वह कह रहा था कि राजकुमारी की शादी एक कोयले वाले आदमी के साथ होने वाली है।

उस नौजवान ने राजा के चौकीदारों से बहुत कहा कि वे उसको अन्दर जाने दें पर उन्होंने उसको अन्दर नहीं जाने दिया। कुछ ही देर में वह कोयला बेचने वाला आदमी बाहर आया। उसने उस नौजवान को वहॉ देखा तो उन चौकीदारों को उस नौजवान को बाहर निकालने का हुक्म दे दिया।

चौकीदारों ने उस नौजवान को महल से बाहर निकाल दिया। अब उस नौजवान के पास और कोई चारा नही था कि वह वहॉ से वापस सराय चला जाये।

गुस्से में उसने उस शादी को रोकने का, उस कोयला बेचने वाले की पोल खोलने का और अपने को उस राक्षस को मारने वाला साबित करने का कोई तरीका ढूँढने का निश्चय किया।

दरबार में मेज सजी हुई थी और सारे कुलीन लोग वहॉ मौजूद थे। राजकुमारी के पास वह कोयला बेचने वाला मखमल की पोशाक पहने बैठा हुआ था।

क्योंकि वह कोयला बेचने वाला आदमी बहुत ही ठिगना था इसलिये उसको दूसरे लोगों के बराबर में लाने के लिये उसके नीचे सात गद्दियॉ रखी हुई थीं।

सराय में बैठ कर काफी दिमाग लड़ाने के बाद उस नौजवान ने अपने कुत्ते को उठाया जो उसके पैरों के पास सो रहा था।

वह उससे बोला — "सुन ओ मेरे वफादार कुत्ते, दौड़ कर राजकुमारी के पास महल में जा और जा कर उस अकेली को ही प्यार करना, और किसी को नहीं।

और जब वे सब खाना खाने बैठें तो मेज पर रखा सारा खाना बिगाड़ देना और भाग आना। और हॉ ध्यान रखना पकड़े नहीं जाना।"

जो उस कुत्ते को मालिक ने उससे कहा वह उसने सब समझ लिया और वहॉ से दौड़ लिया। महल में आ कर उसने राजकुमारी को ढूँढा और उसकी गोद में अपने पंजे रख दिये। उसने ऊॅह ऊॅह की और उसके हाथों और चेहरे को चाटा।

राजकुमारी ने उस कुत्ते को पहचान लिया और वह उसको देख कर बहुत खुश हुई। उसको सहलाते हुए उसने उसके कान में फुसफुसा कर उससे पूछा कि उसको बचाने वाला कहॉ है।

वह कोयला बेचने वाला आदमी राजकुमारी के कुत्ते को सहलाने पर शक कर रहा था कि वह उसको क्यों सहला रही थी सो उसने दावत वाले कमरे से उस कुत्ते को बाहर निकालने का हुक्म दे दिया।

उस समय वहॉ पर सूप परसा जा रहा था। कुत्ते ने मेज के मेजपोश का एक कोना पकड़ा और खींच दिया। इससे मेज पर रखी सारी चीज़ें नीचे आ गिरीं। सारा सूप बिखर गया। सारा फर्श खराब हो गया और प्लेटें और गिलास आदि सब टूट गये।

यह सब कर के वह सीढ़ियों से इतनी तेज़ी से नीचे भाग गया कि कोई उसको देख भी नहीं सका कि वह गया किधर, पकड़ना तो दूर की बात थी। सारे मेहमान भौचक्के से देखते रह गये। दावत रुक गयी जिससे सब लोगों में एक खलबली मच गयी।

जब दूसरे दिन दावत का इन्तजाम हुआ तो नौजवान ने अपने कुत्ते से कहा — "जाओ और फिर से वही सब कर के आओ।"

राजकुमारी ने जब कुत्ते को वापस आया देखा तो वह बहुत खुश हुई पर वह कोयले वाला फिर से शक करने लगा और डर गया। उसने फिर ज़ोर दिया कि उस कुत्ते को कोड़े मार कर कमरे से बाहर निकाल दिया जाये।

इस बार राजकुमारी कुत्ते को लिये हुए उठ खड़ी हुई और कोयला बेचने वाला आदमी अपने नीचपने के बावजूद उससे कुछ नहीं कह सका।

इस बार भी जब सूप परसा जा रहा था कुत्ते ने उस मेज का मेजपोश पकड़ कर खींच दिया और सब कुछ नीचे गिरा दिया। चौकीदार और नौकर उसके पीछे पीछे भागे भी पर इससे पहले कि वे उसके पास भी आते वह वहाँ से गायब हो गया।

तीसरी दावत के ठीक पहले नौजवान ने कहा — "फिर जाओ और वही सब एक बार फिर कर के आओ पर इस बार राजा के चौकीदारों को यहाँ तक अपने पीछे पीछे आने देना।"

कुत्ते ने फिर वही किया और इस बार राजा के चौकीदारों को अपना पीछा कराते हुए मालिक के कमरे तक ले आया। वहाँ आ कर चौकीदारों ने उस नौजवान को पकड़ लिया और उसको राजा के पास ले गये।

राजा ने तुरन्त ही उस नौजवान को पहचान लिया और उससे पूछा — "क्या तुम वही आदमी नहीं हो जो उस दिन मेरी बेटी को उस राक्षस से बचाना चाहते थे?"

नौजवान बोला — "जी सरकार। निश्चित रूप से मैं वही आदमी हूँ। और मैंने राजकुमारी जी को बचाया भी है तभी तो वह आपके सामने हैं।"

यह सुन कर कोयला बेचने वाला आदमी चिल्लाया — "ऐसा नहीं है। उस राक्षस को मैंने खुद ने अपने दोनों हाथों से मारा है और इसको साबित करने के लिये मैं उसके सात सिर भी ले कर आया हूँ।"

कह कर उसने वे सातों सिर मँगवाये और मँगवा कर राजा के पैरों पर रख दिये।

तुरन्त ही नौजवान राजा से बोला — "हो सकता है कि यह आदमी उस राक्षस के सात सिर ले कर आया हो पर क्योंकि वे बहुत भारी थे इसलिये मैं तो उन सिरों को वहीं छोड़ आया था।

हॉ मैं उन सात सिरों की सात जीभ काट कर ले आया हूँ। यह देखने के लिये कि ये जीभें उन्हीं सिरों की हैं या नहीं, आप देखें कि इस आदमी के लाये सातों सिरों में उनकी जीभें हैं या नहीं।"

राजा ने उस कोयला बेचने वाले के लाये सातों सिर देखे तो उनमें से तो किसी भी सिर में एक भी जीभ नहीं थी। यह देख कर कोयला बेचने वाला तो सकते में आ गया। उसको तो कुछ समझ में ही नहीं आया क्योंकि उसको तो यह सब कुछ पता ही नहीं था।

तब नौजवान ने अपनी जेब से एक रूमाल निकाला जिसमें वह सातों जीभ रख कर लाया था और वह रूमाल राजा के पैरों पर रख दिया। फिर उसने राजा को अपनी लड़ाई का पूरा हाल बताया।

फिर भी उस कोयले वाले आदमी ने हार नहीं मानी। उसने कहा — "अगर यह जीभें इन्हीं मुॅहों की हैं तो वह नौजवान उनको इन मुॅहों के अन्दर रख कर दिखाये।"

सो उस नौजवान ने एक एक कर के उन मुॅहों में जीभ रखनी शुरू की। जैसे जैसे वह एक एक जीभ उन मुॅहों में रखता गया उस कोयला बेचने वाले आदमी ने अपने नीचे से एक एक गद्दी निकाल कर बाहर फेंकनी शुरू कर दी।

जब उस नौजवान ने सातवीं जीभ सातवें मुॅह में रखी तो वह कोयले वाला आदमी तो इतना नीचा हो गया कि वह किसी को दिखायी भी नहीं दे रहा था क्योंकि वह मेज के नीचे तक पहुॅच गया था। बस वह वहॉ से भाग लिया।

पर राजा के हुक्म से उसको पकड़ लिया गया और उसको शहर के चौराहे पर फाँसी चढ़ा दिया गया।

अब राजा, दुलहिन, दुलहा और मेहमान सब लोग खुशी खुशी खाना खाने और शादी की रस्में पूरी करने बैठे। शादी हो गयी।

XXXXXXX

रात हो गयी और सभी सोने चले गये। सुबह को जब वह नौजवान सो कर उठा तो उसने खिड़की खोली। बाहर झाँका तो उसको अपने सामने एक बहुत बड़ा जंगल दिखायी दिया जिसमें बहुत सारी चिड़ियें चहचहा रही थीं।

उस जंगल को देख कर उसे लगा कि इस जंगल में उसको शिकार के लिये जरूर जाना चाहिये।

उसकी पत्नी ने उसको बहुत मना किया कि वह शिकार के लिये वहाँ न जाये क्योंकि वह जंगल जादुई था। जो कोई भी उस जंगल में जाता था वह फिर वहाँ से कभी घर वापस नहीं आता था।

पर जितना ही वह नौजवान उस जंगल के बारे में सुनता जाता उसको वहाँ के खतरों से खेलने की इच्छा और बढ़ती जाती थी।

सो उसने अपना घोड़ा लिया, कुत्ता लिया और अपनी तलवार और बन्दूक ली और शिकार के लिये चल दिया।

वहाँ जा कर उसने बहुत सारी चिड़ियें मारीं कि तभी वहाँ गरज और बिजली की चमक के साथ एक बहुत बड़ा तूफान आ गया और ज़ोर से बारिश होने लगी।

बारिश इतनी ज़्यादा थी कि वह पूरा का पूरा भीग गया। साथ में अँधेरा होने की वजह से वह उस जंगल में रास्ता भी भूल गया। कि तभी उसको एक गुफा दिखायी दी। उस तूफान से बचने के लिये वह उस गुफा में घुस गया।

उस गुफा के अन्दर संगमरमर की बहुत सारी मूर्तियाँ भिन्न भिन्न मुद्राओं में खड़ी हुई थीं। पर वह नौजवान इतना ज़्यादा थका हुआ था कि इस सब पर ध्यान देने का उसके पास समय ही नहीं था।

अपने आपको गर्म करने के लिये उसने कुछ लकड़ियाँ इकट्ठी की और चकमक पत्थर[13] की सहायता से आग जला ली। उसकी गर्मी में उसने अपने कपड़े भी सुखाये और खाने के लिये कुछ चिड़ियाँ भी भूनी।

तभी एक बुढ़िया भी पानी से बचने के लिये उस गुफा में आ गयी। वह भी बहुत भीगी हुई थी। ठंड के मारे उसके दाँत किटकिटा रहे थे। उसने उस नौजवान से प्रार्थना की कि वह उसे अपनी आग के पास बैठने दे।

---

[13] Translated for the word "Flintstone". When these stones are hit at each other they produce fire a fire can be started from them.

नौजवान ने कहा — "हॉ हॉ क्यों नहीं। आप यहॉ आराम से बैठें।"

वह बुढ़िया वहॉ बैठ गयी। उसने उस नौजवान को उसकी भुनी हुई चिड़ियों के लिये नमक और घोड़े के खाने के लिये भूसा दिया। एक हड्डी कुत्ते के लिये और तलवार को चिकना करने के लिये चिकनाई भी दी।

पर जैसे ही उस नौजवान ने उस बुढ़िया की नमक लगी चिड़िया खायी, उसके घोड़े ने भूसा खाया और उसके कुत्ते ने हड्डी खायी और तलवार को चिकनाई लगी सब मूर्तियों में बदल गये।

उधर राजकुमारी अपने पति के लौटने का इन्तजार करती रही पर फिर सोच लिया कि शायद वह मर गया होगा। राजा के हुक्म से सारा शहर दुख में डूब गया।

XXXXXXX

इस बीच उस मछियारे के घर में जबसे वह सबसे बड़ा लड़का घर छोड़ कर गया था उसका पिता और उसके दोनों छोटे भाई रोज उस गौल ब्लैडर की तरफ देखते जो एक लट्ठे से छत से लटका हुआ था।

एक दिन उन्होंने देखा कि रसोई के फर्श पर खून पड़ा है जो गौल ब्लैडर से टपक रहा था।

इस पर दूसरे वाले लड़के ने कहा — "मेरा बड़ा भाई या तो मर गया है या फिर किसी मुश्किल में है। मैं उसको देखने जाता हूँ।"

और विदा कह कर वह भी अपने घोड़े पर चढ़ा, अपना कुत्ता साथ लिया, तलवार और बन्दूक उठायी और चल दिया।

रास्ते में वह लोगों से पूछता गया कि अगर किसी ने उसके भाई को देखा हो। वह उनसे पूछता — "क्या तुमने किसी ऐसे आदमी को देखा है जो देखने में मेरे जैसा लगता हो?"

जो भी उसका यह सवाल सुनता हँसता — "यह तो बड़ा अच्छा मजाक है। क्या तुम वही नहीं हो जो यहाँ कुछ दिन पहले घोड़े पर चढ़ कर आये थे?"

इससे उस बीच वाले लड़के को कम से कम यह पता चल गया कि उसका बड़ा भाई इधर आया था सो वह उसी दिशा में चलता रहा।

चलते चलते वह भी उसी राजा के शहर में आ निकला जिसमें उसके भाई ने सात सिरों वाला राक्षस मारा था। वहाँ उसने देखा कि शहर के सब लोग काली पोशाक पहने घूम रहे हैं।

लेकिन जब शहर वालों ने उसे देखा तो वे ख़ुशी से चिल्लाये — "अरे यह तो यह आ गया। अरे यह तो यह आ गया। यह तो मरा नहीं है। हमारा राजकुमार ज़िन्दाबाद।"

वह उसे पकड़ कर राजा के पास उसके दरबार में ले गये। राजकुमारी भी वहीं बैठी थी। सबने उसको सबसे बड़ा लड़का ही समझा।

राजा ने उसको इतने दिन तक बिना कुछ बताये गायब रहने के लिये बहुत डॉटा। इस बीच वाले लड़के ने भी बिना परेशान हुए राजा से माफी मॉगी और राजकुमारी से भी सुलह कर ली।

उन सबके सवालों के जवाब उसने इतनी अच्छी तरह से दिये कि उसको अपने भाई के बारे में सब पता चल गया – उसकी शादी के बारे में, उसके गायब होने के बारे में आदि आदि।

उस रात जब वह बीच वाला लड़का सोने के लिये गया तो उसने म्यान में से अपनी तलवार निकाल कर उसका फल ऊपर कर के बिस्तर के बीच में रख दी।

उसने राजकुमारी से कहा कि वह तलवार के एक तरफ सोयेगी और वह खुद उसके दूसरी तरफ सोयेगा। राजकुमारी की समझ में कुछ नहीं आया पर वे दोनों सोने चले गये और जल्दी ही सो गये।

वह सुबह भी जल्दी ही उठ गया और उठते ही खिड़की खोली। सामने जंगल देख कर उसको भी लगा कि उसको शिकार के लिये जाना चाहिये। वह राजकुमारी से बोला — "मैं शिकार के लिये जाऊँगा।"

राजकुमारी बोली — "क्या एक बार वहाँ से बच कर आ जाना तुम्हारे लिये काफी नहीं है? क्या तुम मुझे और परेशान करना चाहते हो?"

पर उसने तो राजकुमारी की बात सुनी ही नहीं। वह भी अपने घोड़े पर चढ़ा, अपना कुत्ता साथ लिया और तलवार और बन्दूक उठायी और शिकार खेलने के लिये उस जंगल में चल दिया।

इसका भी वही हाल हुआ जो सबसे बड़े लड़के का हुआ था। वे सब भी उसी गुफा में मूर्ति बन कर खड़े हो गये।

इस बार राजकुमारी को लगा कि उसका पति सचमुच ही मर गया है और राजा के हुक्म से एक बार फिर सारा शहर शोक और दुख में डूब गया।

इस बीच उस मछियारे के घर में उसकी रसोई में उस गौल ब्लैडर से एक बार फिर खून टपक पड़ा।

क्योंकि उन तीनों लड़कों का पिता और सबसे छोटा लड़का उस गौल ब्लैडर को बराबर देख रहे थे सो उस खून के टपकते ही वह तीसरा लड़का भी तुरन्त ही अपने घोड़े पर सवार हुआ।

उसने भी अपने कुत्ते को साथ लिया, अपनी तलवार और बन्दूक उठायी और अपने दोनों भाइयों की खोज में चल दिया।

वह भी रास्ते में पूछता जाता था — "क्या तुम लोगों ने बिल्कुल मेरे जैसे दो आदमी घोड़े पर सवार इधर से जाते देखे हैं?"

लोग उससे पूछते — "तुम कैसे हॅसोड़िये हो? तुम हम लोगों से कब तक बार बार यही सवाल पूछते रहोगे?"

इस जवाब से उसको यह विश्वास हो गया कि वह सही रास्ते पर जा रहा है। चलते चलते वह भी उसी राजा के शहर में आ पहुॅचा। उसने भी देखा कि सारा शहर दुख और शोक में डूबा है और सब काले कपड़े पहने घूम रहे हैं।

पर उसको देखते ही लोग खुश हो गये और उसको राजा के पास ले गये। राजा भी उसको देख कर इतना खुश हो गया जैसे उसका अपना दामाद मर कर ज़िन्दा हो गया हो।

अपने भाई की तरह वह भी जब सोने गया तो उसने भी बिस्तर के बीच में अपनी नंगी तलवार उसका फल ऊपर कर के खड़ी कर दी और वे दोनों तलवार के दो तरफ सो गये।

वह भी सुबह जल्दी ही उठ गया और सुबह उठते ही उसने भी खिड़की खोली और जब अपने सामने जंगल फैला हुआ देखा तो उसने भी कहा कि वह शिकार खेलने जाना चाहता है।

यह सुन कर राजकुमारी अबकी बार तो बहुत ही दुखी हो गयी और रो कर बोली — "क्या तुमने मरने की कसम खा रखी है? तुम मुझे प्यार करते हो या नहीं? तुम्हें पता है जब भी तुम शिकार पर जाते हो मुझे हमेशा तुम्हारे मरने का डर लगा रहता है।"

पर यह तीसरा लड़का तो घर से बाहर निकलने के लिये बेचैन हो रहा था क्योंकि उसको तो अपने भाइयों को ढूॅढना था।

सो उसने उसकी कोई बात नहीं सुनी और शिकार खेलने चल दिया। जब वह जंगल में निकला तो उसके साथ भी वही हुआ जो उसके दो बड़े भाइयों साथ हुआ था। उसने भी तूफान से बचने के लिये उसी गुफा में शरण ली।

वहाँ उस गुफा में इतनी सारी मूर्तियाँ देख कर वह आश्चर्य में पड़ गया। उसने एक एक कर के जो उन मूर्तियों को देखना शुरू किया तो उसने उनमें से अपने दोनों भाइयों को पहचान लिया।

वहाँ का हाल देख कर उसको लगा कि यहाँ जरूर कुछ गड़बड़ है। मुझे यहाँ सँभल कर रहना होगा।

उसने भी वहाँ अपनी चिड़ियाँ भूनने के लिये आग जलायी और चिड़ियों को उसमें भूनने के लिये रख दिया। तभी वह बुढ़िया वहाँ आयी और झुकते हुए नम्रता से उससे आग के पास बैठने की इजाज़त माँगी।

पर इस लड़के ने उसको डाँटा — "दूर हट ओ बदसूरत जादूगरनी, मैं तुझे अपने पास भी नहीं बिठाना चाहता।" उस बुढ़िया को उस लड़के का ऐसा बर्ताव देख कर बहुत दुख हुआ।

वह कुछ भुनभुना कर बोली — "क्या तुम्हारे मन में इन्सान के लिये ज़रा सा भी प्यार नहीं है? तुम कैसे आदमी हो? कोई बात नहीं पर फिर भी मैं तुम्हारे खाने को स्वादिष्ट बनाने के लिये तुमको कुछ चीज़ें देना चाहती हूँ।

नमक तुम्हारी भुनी हुई चिड़ियों के लिये, भूसा तुम्हारे घोड़े के लिये और एक हड्डी तुम्हारे कुत्ते के लिये। और थोड़ी चिकनाई तुम्हारे हथियार को जंग लगने से बचाने के लिये।"

वह लड़का उस बुढ़िया पर चिल्लाया — "ओ बुढ़िया, तू यहाँ से जाती है या नहीं या फिर मैं तुझे मार कर भगाऊँ? तू मुझे नहीं पकड़ सकती, सुना तूने?" और यह कह कर वह उस पर कूद गया। उसको जमीन पर गिरा कर उसने उसको अपने घुटने से वहीं नीचे ही दबाये रखा।

फिर अपने बाँये हाथ से उसने उसका गला दबाया और दाँये हाथ से अपनी तलवार निकाल कर उसकी नोक उसकी गरदन पर रख कर कहा — "ओ नीच जादूगरनी, मेरे भाई मुझे वापस कर नहीं तो मैं अभी तेरा गला काट दूँगा।"

बुढ़िया बोली कि उसने कभी किसी का कोई बुरा नहीं किया। पर जब उस लड़के की तलवार की नोक को अपने गले पर महसूस किया तो उसने अपना जादू मान लिया। और उससे वायदा किया कि अगर वह उसको छोड़ देगा तो वह उसकी बात मान लेगी।

लड़के ने उसको छोड़ दिया। बुढ़िया ने अपनी जेब से एक मरहम निकाला और उसको उन सबकी मूर्तियों पर लगा कर उन सबको ज़िन्दा कर दिया।

पर उस लड़के ने उसको तब तक नहीं जाने दिया जब तक कि उसने वहाँ रखी सब मूर्तियों को ज़िन्दा नहीं कर दिया। इस तरह

सारी मूर्तियाँ एक एक कर के ज़िन्दा हो गयीं और वह गुफा बहुत सारे लोगों से भर गयी।

जब भाइयों ने एक दूसरे को देखा तो वे खुशी से एक दूसरे के गले लग गये। जब कि दूसरे लोग बेचारे खुशी के मारे बोल ही नहीं पा रहे थे। वे उस तीसरे भाई के बहुत ऋणी थे।

इस बीच वह जादूगरनी वहाँ से खिसक ली पर उन तीनों भाइयों ने उसको पकड़ लिया और काट कर उसके टुकड़े टुकड़े कर दिये। उस जादूगरनी के मरते ही उस जंगल का जादू टूट गया।

सबसे बड़े भाई ने उस जादूगरनी के मरहम की वह बोतल ले ली जिससे मुर्दा भी ज़िन्दा हो जाते थे।

उसके बाद वे सब राजा के शहर वापस आ गये। शहर के सारे लोग उनके बारे में बात कर रहे थे और वे आपस में अपने बारे में बात कर रहे थे कि उनके साथ क्या हुआ।

जब बड़े भाई ने यह सुना कि उसके दोनों भाई उसकी पत्नी के पलंग पर लेटे थे तो उसने गुस्से में आ कर उन दोनों को अपनी तलवार से मार डाला। पर तुरन्त ही उसको उनके मारने का पछतावा हुआ और उसने अपने आपको मारने के लिये तलवार अपने गले पर रखी।

दूसरे लोगों ने उसको ऐसा करने से रोका तो उसको वह मरहम वाली बोतल याद आयी। उसने तुरन्त ही वह मरहम अपने भाइयों को लगाया और वे ज़िन्दा हो गये।

सबसे बड़ा भाई अपने दोनों छोटे भाइयों को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हुआ और उसने उनसे अपने किये की माफी माँगी।

तब उसके भाइयों ने उसको बताया कि वे अपने और उसकी पत्नी के बीच में तलवार लगा कर सोये थे इसलिये ऐसा कुछ नहीं था जैसा कि वह सोच रहा था। उनको अफसोस था कि यह बात वे उसको पहले नहीं बता पाये थे।

बातें करते करते वे राजा के महल आ गये। वहाँ आ कर उन्होंने राजकुमारी को बुलाया। राजकुमारी रोती हुई आयी तो उसने वहाँ तीन एक से भाइयों को खड़े देखा तो कुछ बोल ही नहीं सकी।

वह तो यह भी नहीं पहचान सकी कि उन तीनों में से उसका पति कौन सा था। तब सबसे बड़े लड़के ने कहा कि वही उसका पति था और फिर उसने अपने दोनों छोटे भाइयों का उससे परिचय कराया।

राजा ने अपने दामाद के दोनों छोटे भाइयों की शादी दो कुलीन सभासदों की दो बेटियों से कर दी। उन सभासदों को अपना दरबारी बना लिया और उस बूढ़े मछियारे और उसकी पत्नी को भी वहीं बुला लिया।
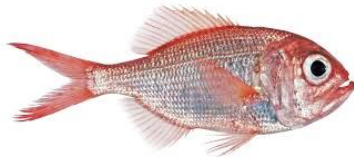
2 सोती हुई रानी[14]

एक बार स्पेन में एक बहुत ही अच्छा और न्यायप्रिय राजा राज्य करता था। उसका नाम था मैक्सीमिलियन[15]। उसके तीन बेटे थे – विलियम, जौन और छोटा ऐन्ड्रू[16]। ऐन्ड्रू अपने पिता का सबसे लाड़ला बेटा था।

राजा बहुत बीमार था। उस बीमारी की वजह से उसकी ऑखों की देखने की ताकत जाती रही थी। राज्य के सारे डाक्टर बुलाये गये पर कोई उसकी देखने की ताकत वापस नहीं ला सका।

उन डाक्टरों में से सबसे बूढ़े डाक्टर ने कहा — "क्योंकि इस बारे में डाक्टरी का ज्ञान बहुत कम है तो किसी ज्योतिषी को बुलाओ। शायद वे कुछ बता पायें।"

सो चारों तरफ से ज्योतिषी बुलवाये गये। उन्होंने भी अपनी सारी किताबें खोज डालीं पर वे भी डाक्टरों से कुछ ज़्यादा अच्छा हल नहीं बता सके।

इत्तफाक से इन ज्योतिषियों के साथ साथ एक जादूगर[17] भी इनमें आ गया था पर कोई उसको जानता नहीं था।

---

[14] The Sleeping Queen. Tale No 61. A folktale from Italy from its Montale Pistoiese area.

[15] Maximilian ruled in Spain.

[16] William, John and little Andrew

[17] Translated for the word "Wizard"

जब सब लोगों को जो कुछ कहना था कह चुके तब वह जादूगर आगे आया और बोला — "मैं आपके जैसे अन्धेपन के कई किस्से जानता हूँ।

इसका कहीं कोई इलाज नहीं है सिवाय "सोती हुई रानी" के शहर में। वहाँ एक कुँआ है उसी के पानी से आपकी आँख की देखने की ताकत वापस आ सकती है।"

यह सुन कर लोग आश्चर्य में पड़ गये क्योंकि इससे पहले किसी ने भी सोती हुई रानी का नाम नहीं सुना था। इससे पहले कि वे यह जानने की कोशिश करते कि वह सोती हुई रानी कौन थी इतनी देर में तो वह जादूगर वहाँ से गायब हो गया और फिर कभी किसी ने उसको वहाँ नहीं देखा।

यह सुन कर राजा यह जानने के लिये उत्सुक हो गया कि वह आदमी कौन था जिसने उसको यह इलाज बताया पर क्योंकि कोई उसको जानता नहीं था किसी ने उसको पहले कभी देखा ही नहीं था इसलिये कोई उसके बारे में कुछ भी नहीं बता सका।

उन ज्योतिषियों में से एक ने कहा कि वह अरमेनिया[18] के पास का कोई जादूगर हो सकता था और यहाँ स्पेन में अपने जादू से आ गया होगा।

राजा ने पूछा — "क्या सोती हुई रानी के शहर का कोई अता पता जानता है?"

---

[18] Armenia – a country located in North of Iran, East of Turkey and South of Georgia.

एक बूढ़ा दरबारी बोला — "सरकार हम लोगों को तो नहीं मालूम कि वह जगह कहाँ है जब तक कि हम उसे ढूँढें नहीं। अगर मैं जवान होता तो मैं खुद ही उसको ढूँढने के लिये चला जाता।"

इस पर राजा का बड़ा लड़का विलियम बोला — "अगर किसी को उस शहर को ढूँढने जाना है तो मैं जाऊँगा क्योंकि बड़े बेटे होने के नाते यह मेरा फर्ज है कि मैं अपने पिता की तन्दुरुस्ती की देखभाल करूँ।"

राजा प्रेम से बोला — "शाबाश बेटे शाबाश। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। तुम घोड़ा पैसा या और भी कुछ जो तुमको चाहिये ले जाओ। मैं तीन महीनों में तुम्हारी वापसी का इन्तजार करूँगा कि तुम उस शहर का पता लगा कर आओगे।"

विलियम राज्य के बन्दरगाह पर गया और बूडा[19] जाने वाले एक जहाज़ पर चढ़ गया। बूडा में वह जहाज़ तीन घंटे रुकने वाला था और फिर वहाँ से अरमेनिया के लिये जाने वाला था।

जब जहाज़ बूडा पहुँच गया तो विलियम वहाँ उतर कर वह टापू देखने गया। जब वह वहाँ घूम रहा था तो उसने एक बहुत सुन्दर लड़की देखी और वह उससे बातें करने में लग गया।

उससे बातें करने में वह इतना मग्न हो गया कि उसके तीन घंटे कहाँ चले गये उसको पता ही नहीं चला। तीन घंटे बाद जहाज़ वहाँ से चला गया और विलियम वहीं उसी टापू पर रह गया।

[19] Buda – name of a place

पहले तो उसको इस बात का बहुत अफसोस हुआ कि उसका जहाज़ छूट गया और वह अपने पिता के अन्धेपन की दवा लाने नहीं जा सका पर उस लड़की के साथ ने उसको अपने पिता की बीमारी और अपनी यात्रा का उद्देश्य सभी कुछ भुला दिया।

जब तीन महीने हो गये और विलियम का कहीं पता नहीं चला तो राजा को डर लगा कि कहीं ऐसा न हो कि वह मर गया हो। वह बेचारा अन्धा तो पहले से ही था और ऊपर से बेटे को खोने का दुख।

उसको धीरज देने के लिये उसका बीच वाला बेटा जौन बोला — "पिता जी उस सोती हुई रानी का शहर और उसके कुँए का पानी ढूँढने मैं जाऊँगा।" राजा बहुत डरा कि कहीं उसके इस बेटे को भी कुछ न हो जाये पर फिर भी उसने उसको जाने की इजाज़त दे दी।

वह भी अपने राज्य के बन्दरगाह पर आया और बूडा वाला जहाज़ पकड़ा। इस बार यह जहाज़ वहाँ एक दिन के लिये रुकने वाला था। बड़े भाई की तरह से जौन भी वह टापू देखने के लिये जहाज़ से उतर गया।

वहाँ वह एक बागीचे में घूमने चला गया जहाँ के साफ पानी में बहुत सारे पेड़ों की छाया पड़ रही थी। उस पानी में हर तरह के रंगों की मछलियाँ घूम रही थीं। वह सब उसको बहुत अच्छा लगा।

वहॉ से वह शहर की सड़कों पर घूमने चला गया। घूमते घूमते वह एक चौराहे पर पहुॅच गया जिस पर संगमरमर का एक फव्वारा लगा हुआ था। उस चौराहे के चारों तरफ बहुत सारी इमारतें थीं और उन इमारतों के बीच में एक बहुत ही सुन्दर महल था।

उस महल में सोने चॉदी के खम्भे थे और उसकी क्रिस्टल की दीवारें थीं जो धूप में चमक रही थीं। जौन को वहॉ क्रिस्टल की दीवारों के उस पार अपना भाई घूमता हुआ दिखायी दे गया।

उसने उसको आवाज लगायी — "विलियम। तुम यहॉ क्या कर रहे हो? तुम वापस घर क्यों नहीं आये? हम तो समझे कि तुम मर गये हो।" खैर दोनों ने एक दूसरे को गले लगाया।

फिर विलियम बोला — "एक बार जब मैं टापू पर उतर गया तो मैं यहॉ से वापस ही नहीं जा सका। फिर मुझे एक बहुत सुन्दर लड़की मिल गयी जिसके पास बहुत कुछ था।

उस लड़की का नाम लुगीस्टैला है और उसकी एक बहुत ही प्यारी सी छोटी बहिन भी है – इसाबेल[20]। अगर तुमको वह पसन्द हो तो तुम उससे शादी कर लो।"

इसी तरह से बारह घंटे बीत गये और जौन भी विलियम की तरह अपने जहाज़ पर नहीं चढ़ सका। जौन कुछ देर तो दुखी रहा फिर वह भी सब कुछ भूल गया – अपने पिता को, जादुई पानी को

[20] Lugistella and Isabel

और अपने भाई की तरह से वह भी उस क्रिस्टल के महल में बन्दी हो कर रह गया।

फिर जब तीन महीने और बीत गये और राजा का बीच वाला बेटा जौन भी वापस नहीं आया तो राजा मैक्सीमिलियन को चिन्ता हुई। उसको और उसके सारे दरबारियों को डर लगा कि वह भी कहीं अपने बड़े भाई की तरह से ही न मर गया हो।

यह देख कर राजा के सबसे छोटे बेटे ऐन्ड्रू ने ऐलान किया कि अपने भाइयों को ढूँढने और उस जादुई पानी को लेने के लिये अब वह खुद वहाँ जायेगा।

राजा दुखी हो कर बोला — "सो तुम भी मुझे छोड़ कर जाना चाहते हो? अन्धा और दुखी तो मैं पहले से ही हूँ और फिर मैं अपना आखिरी बेटा भी खो दूँ? नहीं नहीं। ऐसा नहीं हो सकता। मै तुमको नहीं जाने दूँगा।"

पर ऐन्ड्रू ने अपने पिता को उम्मीद बँधायी कि वह चिन्ता न करे वह यकीनन जल्दी ही अपने तीनों बेटों को सकुशल देखेगा। सो राजा ने भारी मन से उसको जाने की इजाज़त दे दी।

वह भी राज्य के बन्दरगाह पर गया और वहाँ से एक जहाज़ पकड़ा। वह जहाज़ भी बूडा के टापू पर रुका। यह जहाज़ वहाँ दो दिन रुकने वाला था।

जहाज के कैप्टेन ने ऐन्ड्रू से कहा कि वह अगर चाहे तो उस टापू को उतर कर देख सकता था पर उसे समय पर जहाज़ में वापस आ जाना चाहिये।

कहीं ऐसा न हो कि वह भी दूसरे दो नौजवानों की तरह से टापू पर उतरे और उनकी तरह से समय पर न आये क्योंकि उसके बाद तो उन दोनों का कहीं पता ही नहीं चला।

ऐन्ड्रू समझ गया कि वह उसके भाइयों के बारे में बात कर रहा था। और अगर वे यहाँ उतरे हैं और फिर वापस जहाज़ पर नहीं आये हैं तो इसका मतलब यह है कि वे यहीं कहीं होंगे।

यह सोच कर वह जहाज़ से उतर गया कि अगर वह इस टापू पर उतर गया तो शायद वह यहाँ अपने भाइयों को देख सके। घूमते घूमते वह भी उसी क्रिस्टल के महल के पास आ निकला जहाँ उसके भाई रह रहे थे। वे उसको वहाँ दिखायी भी दे गये।

वे आपस में गले मिले। उन्होंने ऐन्ड्रू को बताया कि किस तरह से वे जादू की वजह से उस टापू को नहीं छोड़ सके।

उन्होंने उससे यह भी कहा — "हम लोग तो यहाँ स्वर्ग में रह रहे हैं। हमारे दोनों के पास एक एक सुन्दर लड़की है। इस टापू की मालकिन मेरी है और उसकी छोटी बहिन जौन की है। अगर तुम भी यहीं रह जाओगे तो हमारी उन लड़कियों की कोई तो बहिन होगी जो तुमको पसन्द.... ।

पर ऐन्ड्रू ने उनको बीच में ही काट दिया — "भैया तुम लोगों का दिमाग खराब हो गया है इसलिये तुम अपने पिता के लिये अपना फर्ज भूल गये हो।

मैं यहाँ सोती हुई रानी के कुँए का जादुई पानी लेने के लिये आया हूँ और मुझे अपने उस इरादे से कोई नहीं डिगा सकता – न तो दौलत, न ही आनन्द और न ही सुन्दर लड़कियाँ।"

यह सुन कर उसके दोनों भाई चुप रह गये और वहाँ से कुछ गुस्से से में चले गये। ऐन्ड्रू भी वहाँ से जल्दी से अपने जहाज़ पर चला आया। जहाज़ के पाल खोल दिये गये और जहाज़ अरमेनिया की तरफ चल दिया।

जैसे ही ऐन्ड्रू अरमेनिया की जमीन पर पहुँचा उसने हर एक से सोती हुई रानी के शहर के बारे में पूछना शुरू कर दिया। पर किसी ने भी उसके बारे में कुछ नहीं सुना था।

हफ्तों बेकार इधर उधर ढूँढने के बाद किसी ने उसको एक बूढ़े के पास भेजा। यह बूढ़ा एक पहाड़ के ऊपर रहता था। यह बूढ़ा बहुत बहुत बहुत ही बूढ़ा था। कोई नहीं जानता था कि उसकी उम्र क्या थी।

ऐन्ड्रू उस पहाड़ पर चढ़ा तो उसको वह दाढ़ी वाला बूढ़ा अपनी झोंपड़ी में बैठा मिल गया। वहाँ जा कर उसने उससे पूछा कि क्या वह सोयी हुई रानी के टापू के बारे में कुछ जानता था।

उस बूढ़े फ़ारफ़नैलो[21] ने उससे कहा — "ओ नौजवान, मैंने इस जगह का नाम सुना तो है पर वह जगह बहुत दूर है।

वहाँ पहुँचने के लिये पहले तुमको एक समुद्र पार करना पड़ेगा जिसको पार करने में तुमको करीब करीब एक महीना लग जायेगा। और उस यात्रा में आये हुए खतरों का तो गिनना ही क्या है।

और अगर तुम वह समुद्र सुरक्षित रूप से पार कर भी गये तो उस सोती हुई रानी के टापू पर तुम्हारे लिये आगे बहुत सारे खतरे हैं। उस टापू का तो नाम ही बदकिस्मती का दूसरा नाम है क्योंकि लोग उसको "ऑसुओं का टापू"[22] भी कहते हैं।"

ऐन्ड्रू उस टापू के बारे में जान कर बहुत खुश हुआ। वहाँ से वह ब्रिन्डिसे के बन्दरगाह[23] से जहाज़ पर चढ़ा। वहाँ से समुद्र बहुत ही भयंकर था क्योंकि उस पानी में बहुत बड़े बड़े पोलर भालू थे और उसमें बहुत बड़े बड़े जहाज़ भी चल रहे थे।

पर ऐन्ड्रू एक बहुत ही बहादुर शिकारी था। वह इन सबसे बिल्कुल नहीं डरा। उसका जहाज़ उन पोलर भालुओं के पंजे में से निकलता हुआ "ऑसुओं के टापू" में आ पहुँचा।

वहाँ का बन्दरगाह बिल्कुल ही सूना था और वहाँ कोई आवाज भी नहीं सुनायी पड़ रही थी।

---

[21] Farfanello – name of the old man who told Andrew the address of the Island

[22] Island of Tears

[23] Brindisse port

ऐन्ड्रू वहाँ उतरा और एक चौकीदार को एक बन्दूक लिये खड़ा पाया पर वह आदमी तो मूर्ति की तरह खड़ा था। उसने उससे जाने के लिये रास्ता पूछा पर वह तो न बोला न हिला।

उसके बाद अपना सामान उठवाने के लिये ऐन्ड्रू वहाँ के मजदूरों की तरफ बढ़ा तो वे भी पत्थर की मूर्ति की तरह से खड़े रहे। उनमें से कुछ की पीठ पर भारी भारी सन्दूक थे और उनका एक पैर आगे की तरफ हवा में उठा हुआ था।

ऐन्ड्रू शहर में दाखिल हुआ। सड़क के एक तरफ उसको एक जूता बनाने वाला दिखायी दिया – शान्त और मूर्ति जैसा। उसका एक हाथ जूते में से धागा निकालते हुए रुक गया था।

सड़क के दूसरी तरफ एक कौफी हाउस के मालिक के हाथ में एक कौफी का बर्तन था जिससे वह किसी स्त्री के प्याले में कौफी पलट रहा था। पर दोनों ही चुपचाप और मूर्ति जैसे खड़े थे।

सड़कें खिड़कियाँ और दूकानें सभी आदमियों से भरी हुई थीं पर वे सब मोम के बने पुतले लग रहे थे और बड़े अजीब अजीब मुद्राओं में खड़े थे। यहाँ तक कि घोड़े, कुत्ते बिल्ले और दूसरे प्राणी भी रास्ते में ऐसे ही मूर्ति बने खड़े थे।

इस शान्ति के बीच में से गुजरते हुए वह एक महल के सामने आ खड़ा हुआ। वह महल टापू के पुराने राजाओं की मूर्तियों और उनके पत्थरों से सजा हुआ था।

महल के सामने बहुत सारी मूर्तियों की एक लाइन लगी थी उन पर खुदा हुआ था – "चमकती हुई आत्माओं की रानी के लिये जो इस पैरीमस टापू[24] पर राज करती है।"

ऐन्ड्रू ने सोचा यह रानी कहाँ है। क्या यह वही रानी है जो "सोती हुई रानी" कहलाती है?

ऐसा सोचते हुए वह एक सीढ़ी से ऊपर चढ़ गया और वहाँ से फिर उसने कई कमरे पार किये। वे सब कमरे खूब सजे हुए थे और वहाँ हथियारबन्द लोग खड़े हुए थे। पर उन लोगों पर भी जादू पड़ा हुआ था और वे सब मूर्तियों की तरह ही खड़े हुए थे।

एक कमरे में संगमरमर की सीढ़ियाँ चढ़ कर एक चबूतरा बना हुआ था जिस पर एक सिंहासन रखा हुआ था। उस सिंहासन पर एक छत्र लगा हुआ था। उस पर हीरे जड़ा एक लेबिल लगा था।

पास में ही सोने के एक बरतन में अंगूर की एक बेल उग रही थी। वह कमरे के इस किनारे से दूसरे किनारे की तरफ जा रही थी। बीच में वह बेल उस सिंहासन और उसके छत्र के चारों तरफ लिपटी हुई थी और उनको अंगूर के गुच्छों और उस बेल के पत्तों से सजा रही थी।

और यही नहीं वहाँ के बागीचों में हर तरह के फलों के पेड़ भी बहुत बड़े बड़े थे। उन पेड़ों की शाखाएँ कमरे की खिड़कियों से हो कर अन्दर तक आ रही थीं।

---

[24] To Her Majesty, the Queen of Luminous Souls Who reigns over this Isle of Perimus.

ऐन्ड्रू को चलते चलते बहुत भूख लग आयी थी सो उसने कमरे में आयी हुई एक शाख से एक सेब तोड़ लिया और उसको मुँह से काटा। जैसे ही उसने उस सेब को काटा उसकी ऑखों की रोशनी धुँधली पड़ने लगी और जल्दी ही वह अन्धा हो गया।

"उफ, अब मैं इस देश में इधर उधर कैसे जाऊँगा जिसमें लोग मूर्ति बने खड़े हैं।" उसने किसी तरह वहाँ से निकलने की कोशिश की तो वह एक गहरे गड्ढे में गिर पड़ा। उस गड्ढे में पानी था सो वह नीचे पानी में गिर गया।

किसी तरीके से उसने दो चार बार हाथ पैर मार कर बाहर निकलने की कोशिश की। पर जैसे ही उसका सिर उस गड्ढे के पानी से बाहर निकला तो उसको लगा कि उसकी ऑखों की रोशनी तो वापस आ रही है।

असल में वह खुद एक कुँए की तली में था और उसका सिर पानी के बाहर था।

उसने सोचा "तो यह है वह कुँआ जिसका पानी ऑखों की रोशनी वापस लाता है। वह जादूगर शायद इसी कुँए की बात कर रहा होगा।

इसी कुँए का पानी है जो मेरे पिता की ऑखें ठीक कर पायेगा। काश मैं किसी तरह भी यहाँ से बाहर निकलने में कामयाब हो जाऊँ तो यह पानी पिता जी के लिये ले जाऊँ।"

तभी उसको एक रस्सा मिल गया और वह उसको पकड़ कर ऊपर आ गया।

रात हो गयी थी सो ऐन्ड्रू ने रात को सोने के लिये कोई पलंग ढूँढने की कोशिश की। उसको एक शाही सोने का कमरा मिल गया जो शाही तरीके से सजा हुआ था और जिसमें एक बहुत बड़ा पलंग पड़ा हुआ था।

उस पलंग पर एक बहुत ही सुन्दर लड़की सो रही थी। उस लड़की की ऑखें बन्द थीं और लेटी हुई वह बड़ी शान्त लग रही थी। उसके सोने के ढंग से ऐन्ड्रू को लगा कि वह जब सो रही थी तब किसी ने उस पर जादू कर दिया था इसी लिये वह इस तरह सो रही थी।

कुछ सोचने के बाद उसने अपने कपड़े उतारे और यह ध्यान रखते हुए कि वह उस लड़की को पता भी नहीं होने देगा कि वह उसके कमरे में है वह उसके बिस्तर में घुस गया।

सुबह वह सवेरे ही उठ गया और उस लड़की के लिये एक परचा लिख कर उसके पलंग के पास वाली मेज पर रख दिया – "स्पेन के राजा मैक्सीमिलियन का बेटा ऐन्ड्रू खुशी खुशी इस पलंग पर सोया, **21** मार्च **203**।"

फिर उसने उस कुँए से जिसके पानी से ऑख ठीक होती थी एक बोतल पानी भरा और एक सेब तोड़ा जो अन्धा कर देता था और अपने घर की तरफ चल दिया।

जहाज़ फिर से बूडा रुका। ऐन्ड्रू अपने भाइयों से मिलने के लिये उस टापू पर उतरा और उनसे मिल कर उसने उनको "आँसुओं के टापू" का हाल सुनाया और बताया कि किस तरह उसने उस सुन्दर लड़की के साथ रात गुजारी थी।

फिर उसने उनको वह सेब दिखाया जो आँखों की रोशनी ले लेता था और वह पानी दिखाया जो उस रोशनी को वापस ले आता था।

इस सबको देख कर तो उसके दोनों भाई उससे जलने लगे। सो उन लोगों ने एक प्लान बनाया। उन्होंने उसकी जादुई पानी की बोतल चुरा ली और वैसी ही एक बोतल उसके बदले में रख दी।

फिर उन्होंने उससे कहा कि अपनी अपनी पत्नियों को पिता से मिलाने के लिये वे भी उसके साथ ही घर चलेंगे।

जब राजा मैक्सीमिलियन को यह पता चला कि उसके तीनों बेटे सही सलामत वापस स्पेन आ गये हैं तो उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। जब वे आ गये तो उसने उन सबको कई बार गले लगाया।

फिर उसने पूछा — "अच्छा अब यह बताओ कि तुममें से सबसे ज़्यादा खुशकिस्मत कौन रहा?"

विलियम और जौन तो चुप रहे पर ऐन्ड्रू बोला — "पिता जी, मैं यह कह सकता हूँ कि मैं रहा क्योंकि मैंने अपने खोये हुए भाइयों को ढूँढा और उनको यहाँ वापस लाया।

मैं सोती हुई रानी के शहर पहुँचा और वहाँ से वह पानी ले कर आया जिससे अब आपकी आँखें ठीक हो सकती हैं। मुझे एक और भी आश्चर्यजनक चीज़ मिली। उसको भी मैं आपको अभी दिखाऊँगा कि वह कैसे काम करती है।"

इतना कह कर उसने एक सेब निकाला और अपनी माँ को खाने के लिये दिया। रानी ने जैसे ही उसमें दाँत लगाया वैसे ही वह अन्धी हो गयी। वह ज़ोर से चीख पड़ी — "अरे यह क्या हुआ? मुझे तो कुछ दिखायी ही नहीं दे रहा।"

ऐन्ड्रू बोला — "माँ परेशान न हो। मैं आपको अभी ठीक करता हूँ।"

और उसने पानी की बोतल निकाली और बोला — "इसका बस एक बूँद पानी आपकी और पिता जी की आँखों की रोशनी वापस ले आयेगा जो इतने दिनों से नहीं देख पा रहे।"

पर यह पानी तो उसके दोनों बड़े भाइयों ने पहले ही बदल दिया था इसलिये वह पानी जो ऐन्ड्रू के पास था वह तो नकली था वह उसके पिता और उसकी माँ की आँखों की रोशनी वापस नहीं ला सका।

रानी तो रोने लगी, राजा भी बहुत गुस्सा हुआ और ऐन्ड्रू का तो पूरा शरीर ही काँपने लगा।

तब उसके दोनों बड़े भाई बोले — "ऐसा इसलिये हुआ कि इसको तो सोयी हुई रानी के कुँए का पानी मिला ही नहीं। उसे तो हम ले कर आये हैं और वह पानी यह रहा।"

जैसे ही वह चुराया हुआ पानी राजा और रानी की आँखों से लगाया गया उन दोनों की आँखें ठीक हो गयीं और उनकी आँखों की रोशनी वापस आ गयी।

काफी झगड़ा हुआ। ऐन्ड्रू ने अपने भाइयों को चोर और धोखेबाज बताया और उसके भाइयों ने उसको झूठा बताया। राजा तो इस झगड़े का कुछ सिर पैर ही पता नहीं कर सका।

पर आखीर में वह विलियम और जौन की तरफ ही रहा और एन्ड्रू से बोला — "चुप रहो ओ बेशर्म कमीने, तुम्हारा कोई इरादा मुझे ठीक करने का तो था ही नहीं बल्कि तुमने तो अपनी माँ को भी अन्धा कर दिया था।

चौकीदार, इस कमीने को जंगल ले जाओ और इसे मार डालो। इसका दिल ला कर मुझे दो नहीं तो और लोग भी मारे जायेंगे।"

राजा के सिपाही ऐन्ड्रू को घसीट कर बाहर जंगल की तरफ ले गये। ऐन्ड्रू चीखता रहा और अपने बचाव में कुछ कुछ कहता रहा पर वे सिपाही तो उसकी कुछ सुन ही नहीं रहे थे।

पर फिर किसी तरह से ऐन्ड्रू उनसे अपनी कहानी कहने और उनको यह विश्वास दिलाने में कामयाब हो गया कि उसने ऐसा कुछ नहीं किया।

सो किसी भले आदमी के खून से हाथ रँगने की बजाय उन सिपाहियों ने उससे यह वायदा ले लिया कि वह फिर उस शहर कभी वापस नहीं आयेगा और उसको छोड़ दिया।

उन्होंने बाजार से एक सूअर का दिल खरीदा जिसको किसी कसाई ने तभी तभी मारा था और उसको ले कर राजा के पास वापस आ गये।

XXXXXXX

उधर सोती हुई रानी के टापू पर नौ महीने बीत गये और उस सोयी हुई लड़की ने एक बहुत ही सुन्दर बेटे को जन्म दिया। उसको जन्म देते ही वह जाग गयी।

जैसे ही रानी जागी उस टापू का सारा जादू टूट गया जो मोरगैन ले फ़े[25] ने उससे जलने की वजह से उस पर डाला था। उस टापू के और सारे लोग भी जाग गये और ज़िन्दा हो गये। जो सिपाही सब जमे जमे से खड़े थे ढीले पड़ गये, जो आराम से खड़े थे वे सावधान खड़े हो गये।

जूते बनाने वाले ने जूते में धागा डालना शुरू कर दिया और कौफ़ी हाउस वाले ने स्त्री के प्याले में कौफ़ी डालनी शुरू कर दी। बन्दरगाह पर खड़े मजदूरों ने अपना अपना बोझा दूसरों को देना शुरू कर दिया।

---

[25] Morgan le Fay

रानी ने अपनी ऑखें मलीं और बोली — “ मुझे तो आश्चर्य है कि धरती पर कौन सा ऐसा इन्सान है जो इस टापू पर आया और इस कमरे में सोया और मुझे और मेरे आदमियों को उसके जादू से आजाद करा गया जिसके जादू में हम थे।”

तभी एक दासी आयी और उसने उसके पलंग के पास की एक मेज पर रखा एक परचा ला कर उसको दिया। उस परचे से उसको पता चला कि यह आदमी स्पेन के राजा मैक्सीमिलियन का बेटा ऐन्ड्रू था।

तुरन्त ही उसने राजा मैक्सीमिलियन को एक चिट्ठी लिखी कि वह ऐन्ड्रू को वहॉ तुरन्त ही भेज दे नहीं तो वह स्पेन पर चढ़ाई कर देगी।

जब राजा मैक्सीमिलियन को यह चिट्ठी मिली तो उसने विलियम और जौन को बुलवाया और वह चिट्ठी पढ़ने को दी और उनकी राय पूछी।

उनमें से किसी को पता नहीं था कि वे क्या कहें। आखिर विलियम बोला — “हमको नहीं पता कि यह सब क्या है जब तक कि कोई जा कर रानी से यह न पूछे कि इस सबका क्या मतलब है। मैं खुद वहॉ जाता हूँ और पता लगा कर आता हूँ।”

विलियम की यात्रा आसान थी क्योंकि मौरगैन का जादू टूट चुका था और सारे पोलर भालू समुद्र में से गायब हो चुके थे। वहॉ उस टापू के सारे लोग भी ज़िन्दा हो चुके थे सो अब सब कुछ वहॉ

सामान्य था। वह रानी के पास जा पहुँचा और बोला "मैं राजकुमार ऐन्ड्रू हूँ।"

रानी ने जो जल्दी ही किसी पर विश्वास नहीं करती थी उससे कुछ सवाल पूछे —

"तुम यहाँ पहली बार किस दिन आये थे?"

"तुमने यह शहर कैसे ढूँढा?"

"जब तुम यहाँ आये तो मैं कहाँ थी?"

"महल में तुम्हारे साथ क्या क्या हुआ था?"

"अब तुम यहाँ क्या नयी चीज़ देखते हो जो तुमने तब यहाँ नहीं देखी थी जब तुम यहाँ पहली बार आये थे?"

रानी ने उससे और भी कई सवाल पूछे। अब विलियम ने खुद तो कुछ किया नहीं था सो वह उनमें से किसी भी सवाल का जवाब ठीक से नहीं दे सका और हकलाने लगा।

रानी को तुरन्त ही पता चल गया कि वह झूठ बोल रहा था। उसने उसका सिर कटवा कर शहर के दरवाजे पर टॅगवा दिया और उसके नीचे लिखवा दिया "अगर तुम झूठ बोलोगे तो तुम्हारा भी यही हाल होगा।

इसके बाद राजा मैक्सीमिलियन को रानी की दूसरी चिट्ठी मिली कि अगर उसने ऐन्ड्रू को उसके पास नहीं भेजा तो उसकी सेना स्पेन

पर हमला करने के लिये तैयार थी। वह उसके राज्य को, उसके परिवार को और उसको भी नष्ट कर देगी।

ऐन्ड्रू को मारने के हुक्म देने से तो राजा पहले ही बहुत दुखी था सो उसने जौन की तरफ देखा और बोला — "अब क्या करें? उसको हम कैसे बतायें कि ऐन्ड्रू तो मर चुका है। और विलियम घर क्यों नहीं आया?"

जौन बोला "ठीक है मैं जाता हूँ। मैं देखता हूँ कि क्या बात है।" वह रानी के टापू पर पहुँचा पर शहर के दरवाजे पर विलियम के कटे सिर को टँगे देख कर उसको जो कुछ जानना था वह जान गया। वह तुरन्त ही वहाँ से उलटे पैरों वापस आ गया।

आ कर बोला — "पिता जी, बस अब हम मारे गये। विलियम मर चुका है और उसका सिर उस शहर के दरवाजे के ऊपर टँगा हुआ है। अगर मैं अन्दर जाता तो एक और सिर उसके बराबर में लग जाता।"

राजा यह सब सुन कर बहुत दुखी हुआ। "क्या कहा विलियम मर गया? अब मुझे पता चल गया कि मेरा एन्ड्रू बिल्कुल बेकुसूर था और यह सब मुझे सजा देने के लिये हुआ है। अब तो सच बोल दो जौन। मेरे मरने से पहले अपनी बदमाशी मान लो।"

जौन बोला — "इस सबके लिये हमारी पत्नियाँ जिम्मेदार हैं, पिता जी। हम कभी सोती हुई रानी के टापू पर गये ही नहीं। ऐन्ड्रू

की जादुई पानी की शीशी को हमने ही एक साधारण पानी की शीशी से बदल दिया था।”

रोते हुए चिल्लाते हुए और अपने बाल खींचते हुए राजा ने उन सिपाहियों को बुलाया और उनको उसे उस जगह ले जाने के लिये कहा जहाँ उन्होंने एन्ड्रू को गाड़ा था।

यह सुन कर सिपाही लोग तो और भी ज़्यादा परेशान हो गये क्योंकि उन्होंने तो ऐन्ड्रू को मारा ही नहीं था बल्कि छोड़ दिया था और अब वह न जाने कहाँ होगा। राजा समझ गया कि हर जगह दाल में काला है तो उसके मन में एक आशा जागी।

वह सिपाहियों से बोला — “तुम लोग मुझे सच सच बताओ कि तुम लोगों ने मेरे बेटे के साथ क्या किया है। मैं तुमको वचन देता हूँ कि मैं तुम लोगों को माफ कर दूँगा।”

तब सिपाहियों ने राजा को काँपते हुए बताया कि उन्होंने राजकुमार को मारने का उसका हुक्म बिल्कुल नहीं माना और उसको छोड़ दिया था। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब यह सुन कर राजा ने उनको पागलों की तरह चूमना और गले से लगाना शुरू कर दिया।

हर गली के कोने पर यह नोटिस लगा दिया गया कि जो कोई एन्ड्रू को राजा के पास ज़िन्दा ले कर आयेगा उसको ज़िन्दगी भर के लिये भारी इनाम दिया जायेगा।

एन्ड्रू वापस आ गया। राजा और उसके दरबार की खुशी का ठिकाना न रहा। एक बार फिर वह सोती हुई रानी के टापू की तरफ चला। वहाँ उसका बड़ा भारी स्वागत हुआ।

रानी बोली — "एन्ड्रू, तुमने मुझे और मेरे आदमियों को आजाद किया है नयी जिन्दगी दी है। अब तुम ही मेरे पति और इस टापू के राजा बनोगे।"

इसके बाद कई हफ्तों तक उस टापू पर खुशियाँ मनायी जाती रही जिनकी वजह से उस टापू का नाम "आँसुओं के टापू" की बजाय "खुशी का टापू" हो गया।

3 मिलान के सौदागर का बेटा[26]

एक बार इटली देश के मिलान शहर में एक सौदागर अपने परिवार के साथ रहता था। उस सौदागर के परिवार में उसकी पत्नी और दो बेटे थे। अपने दोनों बेटों में से उसको अपना बड़ा बेटा बहुत प्यारा था।

ऐसा तो नहीं था कि वह अपने छोटे बेटे को प्यार नहीं करता था पर वह क्योंकि छोटा था इसलिये उसको अभी भी वह बच्चा ही समझता था और इसी लिये उसकी तरफ ध्यान भी थोड़ा कम ही देता था।

धीरे धीरे सौदागर अमीर होता जा रहा था और अब वह केवल वही सौदे करता था जिनमें उसको काफी ज़्यादा फायदा होता था। और ऐसे ही एक बड़े फायदे के लिये वह अब फ्रांस जा रहा था।

वहाँ उसको कुछ खास चीज़ें बनवानी थीं जिसके लिये वह सोचता था कि वे उसके लिये बहुत फायदेमन्द रहेंगी।

उसका बड़ा लड़का अपने पिता के साथ जा रहा था। यह देख कर उसका छोटा लड़का मैनीचीनो[27] भी उसके साथ जाने की जिद करने लगा।

---

[26] The Son of the Merchant From Milan. Tale No 62. A folktale from Italy from its Montale Pistoiese area.

[27] Menichino – name of the younger son

वह बोला — “पिता जी, मुझे भी अपने साथ ले चलिये न। मैं आपके साथ आपका अच्छा बेटा बन कर रहूँगा। बल्कि आपकी सहायता भी करूँगा। मैं यहाँ मिलान में अकेला नहीं रहूँगा।”

सौदागर अपने उस बेटे को अपने साथ ले जा कर परेशान होना नहीं चाहता था इसलिये उसने उसको धमकी दी कि अगर वह चुप नहीं हुआ तो वह उसको थप्पड़ मारेगा।

जब सौदागर और उसके बेटे का जाने का समय आया तो सौदागर और उसके बड़े बेटे ने अपना सामान बाहर निकाल कर गाड़ी में रखा और फिर वे दोनों खुद भी गाड़ी में चढ़ गये।

रात का समय था सो किसी को दिखायी नहीं दिया कि मैनीचीनो उनकी गाड़ी में लगी पीछे वाली सीढ़ी पर बैठ गया और इस तरह छिप कर वह उनके साथ ही चल दिया।

जब गाड़ी पहली जगह रुकी जहाँ उसको घोड़े बदलने थे तो मैनीचीनो उस सीढ़ी पर से हट गया ताकि वे लोग उसको देख न लें और जब तक वह गाड़ी दोबारा चलने के लिये तैयार हो तब तक वह उसका इन्तजार करता रहा।

जब वह गाड़ी दोबारा चली तो वह फिर वहीं बैठ गया और फिर दूसरी रुकने की जगह तक पहुँच गया। दूसरी रुकने की जगह तक पहुँचते पहुँचते दिन निकल आया था सो वह सड़क के एक पास वाले मोड़ के पीछे छिप गया।

पर इस बार जब गाड़ी चली तो इतनी अचानक और तेज़ चली कि वह जल्दी से कूद कर आने के बावजूद उसकी सीढ़ी पर नहीं बैठ सका और गाड़ी चली गयी। वह लड़का सड़क के बीच में वहीं का वहीं खड़ा रह गया।

अपने आपको एक नयी जगह में अकेला पा कर, बिना पैसे के, भूखा, वह लड़का वहाँ रुआँसा सा हो रहा था कि उसने अपने आपको सँभाला और इधर उधर देखने के लिये घूमने लगा।

वहीं पास में सड़क के किनारे एक बुढ़िया बैठी थी। उसने उस बच्चे को इस तरह अकेला सा खड़ा देखा तो उससे पूछा — "बेटा, तुम यहाँ अकेले क्या कर रहे हो? कहीं जा रहे हो? या खो गये हो?"

मैनीचीनो बोला — "माँ जी मैं यहाँ खो गया हूँ। मैं अपने पिता और बड़े भाई के साथ जा रहा था और गाड़ी मुझे यहाँ से बिना लिये ही चली गयी और मैं यहाँ अकेला रह गया। मुझे अपने घर का रास्ता भी नहीं मालूम कि मैं अपनी माँ के पास पहुँच जाऊँ।

पर मेरे लिये तो घर में भी कोई काम नहीं है क्योंकि मैं तो दुनियाँ में बाहर घूमना चाहता हूँ और अपनी किस्मत बनाना चाहता हूँ। और मेरे पिता ने तो अब मुझे सड़क पर ही छोड़ दिया है।"

वह कुछ सोचता रहा फिर बोला — "असल में उनको तो पता ही नहीं था कि मैं उनके साथ था। मैं तो गाड़ी के पीछे वाली सीढ़ी पर छिप कर बैठा हुआ था। हमको फ्रांस जाना था।"

बुढ़िया बोली — "अच्छा हुआ। तुम सच बोल रहे हो यह तो और भी अच्छी बात है। मैं एक परी हूँ और मैं तुम्हारी कहानी जानती हूँ। अगर तुम अपनी किस्मत बनाना चाहते हो तो मैं तुम्हें बता सकती हूँ कि तुम क्या करो, अगर तुम होशियार हो और दूसरों की इज़्ज़त करते हो तो।"

मैनीचीनो बोला — "मैं मानता हूँ कि मैं छोटा हूँ पर मुझे लगता नहीं कि चौदह साल का हो कर भी मैं इतना बेवकूफ हूँ इसलिये आप मुझ पर विश्वास कर सकती हैं। मैं वह सब करूँगा जो आप मुझसे करने को कहेंगी। अगर आप मुझसे खुश हैं तो मुझे बताइये कि मुझे क्या करना है।"

बुढ़िया परी बोली — "तुम बहुत अच्छे लड़के हो। तो सुनो पुर्तगाल के राजा की एक बहुत ही होशियार बेटी है जो कोई भी पहेली बूझ सकती है। राजा ने यह घोषणा कर रखी है कि वह अपनी बेटी की शादी उस आदमी से करेगा जो उसकी बेटी को कोई

ऐसी पहेली देगा जिसको वह बूझ नहीं पायेगी यानी वह उससे हार जायेगी।

तुम मुझे एक होशियार लड़के लगते हो इसलिये तुम एक पहेली खोजो जिसको वह बूझ न सके और बस तुम्हारी किस्मत बन जायेगी।"

मैनीचीनो बोला — "वह तो ठीक है पर आप क्या सोचती हैं कि मै क्या कोई ऐसी पहेली बना सकता हूँ जो इतनी होशियार लड़की को भी चक्कर में डाल दे? मेरे ख्याल से तो केवल चतुर लोग ही ऐसा कर सकते हैं, मेरे जैसे अनपढ़ बच्चे नहीं।"

बुढ़िया परी बोली — "मैं तो तुमको सही रास्ते पर ला रही थी। तुम होशियार बच्चे हो। तुम अपने आप सब कुछ सँभाल लोगे।

मैं तुमको यह कुत्ता देती हूँ। इसका नाम बैलो[28] है। तुम्हारी पहेली इसी से पैदा होगी। इसको साथ ले जाओ और जा कर राजकुमारी को जीत कर लाओ।"

मैनीचीनो बोला — "बहुत अच्छा माँ जी। अगर आप ऐसा कहती हैं तो मैं आपका विश्वास कर लेता हूँ। आपका बहुत बहुत धन्यवाद। आपकी इतनी मेहरबानी ही मेरे लिये काफी है।"

उसने बुढ़िया परी को विदा कहा, कुत्ते को साथ लिया और आगे चल दिया। हालाँकि वह बुढ़िया के कहने से बहुत ज़्यादा

[28] Bello – the name of the dog

सन्तुष्ट नहीं था पर फिर भी इस समय उसके पास इसके अलावा कोई और चारा भी नहीं था सो वह वहाँ से चल दिया।

शाम होते होते वह खेत पर बने एक मकान[29] में आ गया और वहाँ जा कर रात के लिये खाना और रहने की जगह माँगी।

उस स्त्री ने जिसने घर का दरवाजा खोला था उस लड़के से पूछा — "अरे तुम यहाँ अकेले रात को क्या कर रहे हो? केवल एक कुत्ता ही तुम्हारे साथ है। क्या तुम्हारे माता पिता नहीं हैं?"

मैनीचीनो बोला — "मेरे पिता और बड़ा भाई फ्रांस जा रहे थे। मैं भी फ्रांस जाना चाहता था पर वे मुझको अपने साथ नहीं ले जा रहे थे इसलिये मैं उनकी गाड़ी के पीछे छिप कर बैठ गया।

एक बार वह गाड़ी रुकी तो मैं उतर गया पर फिर जब गाड़ी चली तो मैं रह गया और मेरे पिता जी बिना मुझे लिये ही चले गये।

अब मैं एक पहेली के साथ पुर्तगाल के राजा की बेटी को लेने जा रहा हूँ। यह कुत्ता जो एक परी ने मुझे दिया है मेरे लिये पहेली बनायेगा और इस तरह से मैं राजा की बेटी से शादी कर पाऊँगा।"

वह स्त्री बहुत ही बुरी थी उसने सोचा कि अगर यह कुत्ता पहेली बनाता है तो मैं इस कुत्ते को चुरा लेती हूँ और अपने बेटे को इस कुत्ते को ले कर पुर्तगाल भेज देती हूँ तो बजाय इसके मेरे बेटे की शादी पुर्तगाल के राजा की बेटी से हो जायेगी। ऐसा सोच कर उसने उस लड़के को मारने का प्लान बनाया।

---

[29] Farm House

उसने उस लड़के के लिये एक जहरीली पेस्ट्री तैयार की और उस लड़के से कहा — "हम इसको पिज़ा[30] कहते हैं। इसे मैंने खास तौर पर तुम्हारे लिये ही बनाया है।

मुझे अफसोस है कि तुम यहाँ रात को नहीं रह सकते क्योंकि मेरे पति अजनबियों को रात को घर में नहीं ठहराते। पर पास के जंगल में हमारा एक केबिन[31] है तुम वहाँ जा कर रात को सो सकते हो।

जैसे ही तुम जंगल में घुसोगे वैसे ही तुमको वह दिखायी दे जायेगा। और यह पिज़ा साथ ले जाओ इसे केबिन में जा कर खा लेना। मैं सुबह आ कर तुम्हें जगा दूँगी और तुम्हारे लिये दूध भी लेती आऊँगी।"

मैनीचीनो ने उसे धन्यवाद दिया और पिज़ा ले कर केबिन की तरफ चल दिया। पर कुत्ते को शायद उस लड़के की बजाय ज़्यादा भूख लगी थी सो मैनीचीनो ने पेस्ट्री का एक टुकड़ा तोड़ा और उसे कुत्ते की तरफ फेंक दिया।

बैलो ने वह टुकड़ा हवा में ही पकड़ लिया और खा लिया। उसे खाते ही वह काँपने लगा और नीचे गिर कर जमीन पर लोटने लगा। उसके पंजे ऊपर की तरफ हो गये और वह मर गया।

---

[30] Pizza – an Italian dish – very popular in Italy. See its picture above.

[31] Cabin – a house or a single room made of wooden logs. See its picture above

उसको मरा देख कर मैनीचीनो का मुँह तो खुला का खुला रह गया। उसने बाकी की बची हुई पेस्ट्री फेंक दी। पर फिर अचानक बोला — "ओह तो पहेली यहाँ से शुरू होती है –

पिज़ा ने बैलो को मारा
जबकि बैलो ने मैनोचीनो को बचाया।

बस अब मुझे इस पहेली के बचे हुए हिस्से का पता करना है।

उसी समय वहाँ से तीन कौए उड़े तो उनको वहाँ एक मरा हुआ कुत्ता दिखायी दे गया। बस वे नीचे उतरे और उन्होंने उस कुत्ते के मरे हुए शरीर को खाना शुरू कर दिया। कुछ पल बाद वे तीनों कौए भी मर गये।

मैनीचीनो बोला — "तो इसकी तीसरी लाइन यह है – "एक मरा हुआ तीन को मारता है।"

उसने तीनों कौओं को उस कुत्ते की रस्सी के साथ बाँधा और उनको कन्धे पर लटका कर ले चला। वह अभी कुछ ही दूर गया था कि अचानक जंगल में से हथियारबन्द डाकुओं का एक समूह निकल पड़ा।

वे सब डाकू भूखे थे सो उन्होंने मैनीचीनो से पूछा — "खाने के लिये तुम्हारे पास कुछ है क्या?"

मैनीचीनो उनसे डरा नहीं। उसने जवाब दिया — "मेरे पास तीन चिड़ियें हैं भूनने के लिये।"

डाकू बोले — "उन्हें हमें दे दो।"

मैनीचीनो ने वे तीनों कौए उन डाकुओं को दे दिये और वे डाकू उन तीनों कौओं को ले कर आगे चल दिये। मैनीचीनो यह देखने के लिये एक पेड़ के पीछे छिप गया कि देखें अब क्या होता है।

उसने देखा कि उन डाकुओं ने उन तीनों कौओं को भूना और खाने लगे। कुछ पल में वे भी मर गये।

इस पर मैनीचीनो ने अपनी पहेली में एक लाइन और जोड़ी —

पिज़ा ने बैलो को मारा, जबकि बैलो ने मैनीचीनो को बचाया
एक मरा हुआ तीन को मारता है, और फिर तीन छह को मारते हैं

डाकुओं को खाना खाते देख कर उसको अपनी भूख की याद आ गयी। उसने उन डाकुओं में से एक डाकू की बन्दूक उठायी और पेड़ पर बैठी एक चिड़िया मार दी।

वह चिड़िया अपने घोंसले में बैठी थी। सो इत्तफाक से उसकी गोली बजाय चिड़िया के लगने के उसके घोंसले में लग गयी और उसका घोंसला नीचे गिर पड़ा।

उस घोंसले में उस चिड़िया के अंडे थे सो घोंसले के नीचे गिरते ही वे अंडे भी फूट गये। उन अंडों में से चिड़िया के छोटे छोटे बच्चे निकल पड़े। उन बच्चों के तो अभी पंख भी नहीं निकले थे।

उसने उन बच्चों को उसी आग में रख दिया जिसमें उन डाकुओं ने जहरीले कौए भूने थे और आग जलाने के लिये उसने एक

किताब के कागज फाड़े जो उसको एक डाकू के पास से मिल गयी थी। उसने उन चिड़ियों के बच्चों को खाया और फिर वह पेड़ पर चढ़ गया और सो गया।

अब उसकी पहेली पूरी हो गयी थी। अगले दिन उसने अपनी पुर्तगाल की यात्रा शुरू की।

मैनीचीनो पुर्तगाल में

जब मैनीचीनो पुर्तगाल के राजा के महल में पहुँचा तो वह तुरन्त ही राजकुमारी के पास अपनी पहेली पूछने के लिये अपने उन्हीं मैले कपड़ों में चला गया जिनमें वह इतनी लम्बी यात्रा कर के आया था।

राजकुमारी उसको देखते ही हँस पड़ी और बोली — "यह मैले कपड़ों वाला मुझसे पहेली पूछने आया है? मेरा पति बनने की यह सोच भी कैसे सका?"

मैनीचीनो बोला — "पहले मेरी पहेली तो सुन लो राजकुमारी जी, उसके बाद ही कुछ कहना क्योंकि आपके पिता की घोषणा के अनुसार सब बराबर हैं। किसी में कोई भेदभाव नहीं है।"

राजकुमारी बोली — "यह तो ठीक है। तुमने ठीक ही कहा पर याद रखो कि तुम्हारे पास अभी भी समय है कि तुम मुझसे पहेली पूछने से पहले ही रुक जाओ और अपनी पिटाई से बच जाओ।

मैनीचीनो ने एक पल के लिये सोचा फिर उसे उस परी के शब्द ध्यान आये और उसने हिम्मत बटोर कर कहा — "मेरी पहेली है —

पिज़ा ने बैलो को मारा, जबकि बैलो ने मैनीचीनो को बचाया
एक मरा हुआ तीन को मारता है, और फिर तीन छह को मारते हैं
मैंने उन पर बन्दूक चलायी जिनको मैंने देखा
पर उनको मारा जिनको मैंने नहीं देखा

जो अभी पैदा भी नहीं हुए थे मैंने उनका मॉस खाया
जिनको शब्दों और शब्दों और शब्दों के साथ पकाया
और फिर मैं न तो धरती पर और न आसमान में सोया

सो अब बताओ मेरी पहेली का जवाब राजकुमारी जी। बूझो मेरी पहेली।"

जैसे ही मैनीचीनो ने अपनी पहेली खत्म की राजकुमारी चिल्लायी — "ओह यह तो बड़ी आसान पहेली है। पिज़ा तुम्हारे भाइयों या दोस्तों में से कोई एक है और उसने बैलो को मारा क्योंकि बैलो तुम्हारा दुश्मन है। बैलो मरते मरते तुमको बचा जाता है क्योंकि इस तरह से वह पिज़ा तुमको फिर कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता।

यहॉ तक तो ठीक है न? पर मरने से पहले बैलो ने तीन दूसरे लोगों को मार दिया और वो तीन, और वो तीन।"

इतना कह कर उसने अपनी कोहनी अपने घुटनों पर रख ली और अपनी ठोड़ी अपने हाथों में।

फिर अपनी गर्दन के पीछे की तरफ खुजाती हुई बोली — "बिना पैदा हुआ मॉस, क्या उसको तुमने वाकई शब्दों के साथ भूना? इसका मतलब है अगर मैं इस पहेली को हल कर पायी. . .।"

पर अन्त में वह हार मान गयी और बोली — "तुमने मुझे पा लिया ओ अजनबी। यह तो बड़ी नामुमकिन सी पहेली है। इसे तो तुमको ही मुझे समझाना पड़ेगा।"

तब मैनीचीनो ने उसे अपनी सारी कहानी सुनायी, शुरू से ले कर आखीर तक, और कहानी सुना कर उससे अपना शाही वायदा निभाने के लिये कहा।

राजकुमारी बोली — "तुम ठीक कहते हो। मैं इस बात को मना नहीं कर सकती कि मैं हार गयी हूँ पर मेरी कोई इच्छा नहीं है कि मैं तुमसे शादी करूँ। सो अगर तुम मेरे पिता से मुझसे शादी करने की बजाय कोई और समझौता कर लो तो मुझे बहुत खुशी होगी।"

मैनीचीनो बोला — "अगर उस समझौते की नयी शर्तें मुझे मंजूर हुई तब तो मैं राजी हो जाऊँगा नहीं तो नहीं। क्योंकि याद रखो इस दुनियाँ में मैं केवल इसलिये निकला हूँ ताकि मैं अपनी किस्मत बना सकूँ। और अगर मैं राजकुमारी से शादी न कर सका तो फिर मुझे उसी कीमत का कोई और इनाम चाहिये।"

राजकुमारी बोली — "उसकी तुम चिन्ता न करो। तुमको उससे कहीं ज़्यादा मिल जायेगा। तुम एक करोड़पति हो जाओगे और अपनी हर इच्छा पूरी कर पाओगे।

तुम उस समझौते से इसकी तुलना करो कि अगर एक राजकुमारी जो तुम्हारी ज़िन्दगी का कोई हिस्सा नहीं बनना चाहती, अगर और अगर तुम उससे शादी कर भी लो तो शादी कर के तुम्हें कैसा महसूस होगा?

वह हमेशा तुमसे नाखुश रहेगी और तुमसे चिढ़ी चिढ़ी रहेगी। क्या तुम इस तरह से उसके साथ खुश रह पाओगे?

और क्या तुम इस बात का भी अन्दाजा लगा सकते हो कि मैं तुम्हें उस समझौते में क्या देने वाली हूँ – मैं देने वाली हूँ तुमको फूलों वाले पहाड़ के जादूगर का भेद[32]। जब तुम्हारे पास इस जादूगर का भेद होगा तो तुम्हारी सारी चिन्ताऐं दूर हो जायेंगी।"

"और वह भेद है कहाँ?"

"यह तुमको उससे खुद जा कर लेना पड़ेगा। बस तुम उसको मेरा नाम बताना तो वह तुमको सब बता देगा।"

मैनीचीनो सोच में पड़ गया कि वह इस निश्चित चीज़ को उस अनिश्चित चीज़ के लिये छोड़े या नहीं।

पर राजकुमारी का पति बनने में उसे खुशी से ज़्यादा डर था क्योंकि राजकुमारी उससे शादी करना नहीं चाहती थी इसलिये उसने उससे उस फूलों वाले पहाड़ का भेद जानना ही ज़्यादा ठीक समझा सो उसने उसका पता पूछा। राजकुमारी ने उसे उसका पता बता दिया।

---

[32] The Secret of the Sorcerer of Flower Mountain

मैनीचीनो फूलों वाले पहाड़ पर

फूलों वाला पहाड़ एक बहुत बड़ा पहाड़ था जिस पर चढ़ना नामुमकिन सा था। मैनीचीनो उस पहाड़ की चोटी पर पहुँचने के लिये चल दिया। उस पहाड़ की चोटी पर एक किला बना हुआ था और उस किले के चारों तरफ एक बागीचा था।

लोगों ने वहाँ इतने ऊँचे पर वह किला कैसे बनाया होगा यह भी एक भेद की बात थी पर किसी तरह से मैनीचीनो उस पहाड़ की चोटी पर पहुँच गया और जा कर उस किले का दरवाजा खटखटाया।

कई बहुत बड़े साइज़ के लोगों[33] ने मिल कर उस किले का दरवाजा खोला। वे लोग न तो आदमी ही थे और न ही औरत। और देखने में भी ऐसे थे कि डर भी उनको देख कर डर जाये।

मैनीचीनो को उनको देख कर लगा कि वे तो कुछ भी नहीं थे अभी तो उसके साथ इससे भी ज़्यादा बुरा कुछ होने वाला है पर उसने उनकी तरफ शान्ति से देखा और उनसे जादूगर से मिलवाने के लिये कहा।

जादूगर का नौकर जो एक बहुत बड़े साइज़ का आदमी था आगे आया और बोला — "लड़के, तुम्हारे अन्दर हिम्मत की कमी नहीं है इस बात का तो हमको यकीन है पर अच्छा हो अगर तुम हमारे मालिक से मिलने की कोशिश न करो तो।

[33] Translated for the word "Giants"

क्योंकि ईसाई लोग उसकी कमजोरी हैं और वह उनको कच्चा ही चबा जाता है। और हमको लगता है कि तुम ईसाई हो। इसलिये तुम जान बूझ कर अपनी जान के दुश्मन क्यों बनते हो?"

मैनीचीनो बोला — "होने दो उसको जैसा भी है वह। पर मुझे तो उससे बात करनी ही है सो मेहरबानी कर के उसको यह बता दो कि मैं उससे मिलना चाहता हूँ।"

यह सुन कर वे उस जादूगर को यह बताने के लिये चले गये कि एक लड़का उससे मिलना चाहता था। जादूगर एक बहुत ही कीमती कालीन और उसके ऊपर रखे गद्दों के ऊपर बैठा था।

जब उसने यह सुना कि एक लड़का उससे मिलने के लिये आ रहा है तो वह अपने मन में कुछ सोचने लगा – "यह तो ईसाई कौर है – नाश्ते के लिये स्वादिष्ट और ताजा।" उसने कहा कि उसको तुरन्त ही अन्दर ले आओ।

तभी मैनीचीनो अन्दर घुसा। जादूगर ने उससे पूछा — "तुम कौन हो और क्या चाहते हो?"

मैनीचीनो बोला — "आप परेशान न हों। मैं आपके पास किसी बुरे मतलब से नहीं आया हूँ। मैं एक बहुत ही गरीब लड़का हूँ और अपनी किस्मत बनाने निकला हूँ और उन्होंने मुझे आपके पास भेज दिया है क्योंकि आप गरीबों और बदकिस्मतों को बहुत दान देते हैं।"

यह सुन कर जादूगर बहुत ज़ोर से हँस पड़ा। उसकी हँसी से उसका पूरा महल काँप गया। वह बोला — "क्या मैं पूछ सकता हूँ कि तुमको यहाँ किसने भेजा है?"

इस पर मैनीचीनो ने उसको अपनी सारी कहानी सुना दी। जादूगर अपनी कोहनी एक तरफ रख कर उस पर झुक गया और उस लड़के को अच्छी तरह देखने लगा।

फिर बोला — "तुम वाकई एक बहुत ही हिम्मत वाले लड़के हो और तुम सच भी बोलते हो तो तुमको इसका इनाम तो तुम्हें मिलना ही चाहिये।

मेरा भेद है यह जादुई छड़ी। यह मैं तुमको देता हूँ। पर अगर कभी यह गलत जगह रखी गयी या खो गयी तो फिर बस भगवान ही तुम्हारी सहायता करे।

तुम जब कभी भी इसे जमीन पर मारोगे और अपनी इच्छा बोलोगे तो वह तुरन्त ही पूरी हो जायेगी। यह लो और अब खुशी खुशी घर चले जाओ।"

मैनीचीनो ने जादूगर से उसकी वह जादुई छड़ी ली और फूलों के पहाड़ से नीचे चल दिया। वह सोचता चला आ रहा था कि अब बस अच्छा तो यही होगा कि वह अपने घर वापस लौट जाये, एक भले आदमी जैसे कपड़े पहने और घर जा कर देखे कि उसके पिता और भाई अभी भी उसको याद करते हैं या नहीं। सो वह अपने घर चल दिया।

मैनीचीनो वापस अपने घर

रास्ते में ही मैनीचीनो ने अपने मन में सोचा मैं अपनी जादू की छड़ी का पहला इम्तिहान यहीं लेता हूँ। उसने अपनी जादू की छड़ी जमीन पर मारी तो एक बहुत धीमी सी पतली सी आवाज सुनायी दी "मालिक, हुक्म।"

मैनीचीनो बोला — "मुझे चार घोड़े वाली एक बग्घी और भले आदमियों के पहनने वाले कपड़े चाहिये।"

और उसके सामने एक बहुत सुन्दर बग्घी खड़ी थी जिसमें चार शानदार घोड़े जुते हुए थे। कुछ नौकर उसको कपड़े पहनाने और तैयार करने के लिये आये। उन्होंने उसको बिल्कुल नये फैशन के कपड़े पहना दिये।

यह सब कुछ जादू का था। वे घोड़े भी जादू के थे। तैयार हो कर जैसे ही मैनीचीनो गाड़ी में बैठा तो वे घोड़े हवा से बातें करते हुए मिलान की तरफ चल दिये। वे वहाँ पहुँचने तक बीच में एक बार भी नहीं रुके।

वह जब मिलान पहुँचा तो उसको पता चला कि उसके माता पिता तो वहाँ से कहीं और चले गये हैं। उसके पिता जिस काम के लिये फ्रांस गये थे उससे तो वे बजाय अमीर हो कर लौटने के काफी पैसा खो कर लौटे सो वे अपना मकान आदि बेच कर शहर के बाहर एक बहुत छोटे से घर में किराये पर रहने लगे थे।

मैनीचीनो तब अपने पिता के नये घर में गया तो इतनी बढ़िया बग्घी में से उसको उतरता देख कर तो उसके माता पिता उसको देखते के देखते ही रह गये।

उसने अपने माता पिता को उस जादू की छड़ी के बारे में कुछ नहीं बताया बल्कि कहा कि उसको अपने काम में बहुत फायदा हुआ और आज से वही उनकी देखभाल करेगा।

सबसे पहले तो उसने अपनी जादू की छड़ी से एक बड़ा सा महल बनवाया। उसके बारे में उसने उनको बताया कि वह मकान उसने अपने उन्हीं नौकरों से बनवाया है जो लोग उसके नौकरों में सबसे जल्दी मकान बना सकते थे।

मकान क्या था वह तो एक बहुत बड़ा महल था। उसका परिवार अब उस महल में चला गया। उस महल में उन सबके लिये बहुत सारे कपड़े, नौकर और घर की देखभाल करने वाले मौजूद थे। और पैसे की तो कोई कमी ही नहीं थी।

वे सब बहुत खुश थे सिवाय मैनीचीनो के भाई के। उसका भाई तो उससे जल जल कर खाक हुआ जा रहा था। क्योंकि वह इस घर का बड़ा बेटा था और अपने पिता का बहुत लाड़ला था। अब उसके पास कुछ नहीं था और उसको हर चीज़ के लिये अपने छोटे भाई का मुँह तकना पड़ता था जो उसको बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा था।

वह इस बात को सोच सोच कर ही बहुत परेशान था कि मैनीचीनो को इतना सारा पैसा मिला कहाँ से? सो तबसे उसने उसके ऊपर नजर रखनी शुरू कर दी। मैनीचीनो जब तक अपने कमरे के अन्दर रहता तब तक वह उसके कमरे से उसकी चाभी के छेद से उसमें झाँकता रहता।

उसने देखा कि मैनीचीनो हमेशा एक छड़ी लिये रहता था। उसको लगा कि शायद उस छड़ी में ही कुछ भेद है सो उसने उसकी वह छड़ी चोरी करने का निश्चय किया।

मैनीचीनो अपनी उस जादू की छड़ी को अपनी एक कई ड्रौअर वाली आलमारी में रखता था। सो एक दिन जब वह घर में नहीं था तो उसका बड़ा भाई उसके कमरे में घुसा और उसकी वह छड़ी चुरा ली।

छड़ी चुरा कर वह उसको अपने कमरे में ले आया। वहाँ उसने उसको जमीन पर मारा पर कुछ नहीं हुआ क्योंकि उसके हाथ में वह छड़ी बिल्कुल बेजान थी, एक सामान्य छड़ी जैसी, जादू की छड़ी नहीं।

वह बोला — "लगता है मुझसे कहीं गलती हो गयी। यह वह जादू की छड़ी है ही नहीं जो मैं सोच रहा था। लगता है कि वह कोई दूसरी छड़ी है जो शायद किसी दूसरी ड्रौअर में रखी होगी।"

यह सोच कर वह उस छड़ी को मैनीचीनो के कमरे में वापस रखने के लिये और उसकी दूसरी छड़ी ढूँढने के लिये उसकी दूसरी

ड्रौअरों को देखने के लिये गया पर जैसे ही वह उसके कमरे में घुसा तो उसने मैनीचीनो को सीढ़ियों से ऊपर आते सुना।

इस डर से कि अब वह पकड़ा जायेगा उसने वह छड़ी दो हिस्सों में तोड़ दी और उसको मैनीचीनो के कमरे की खिड़की से बाहर की तरफ फेंक दिया जो बाहर बागीचे की तरफ खुलती थी।

अब मैनीचीनो वह छड़ी रोज तो इस्तेमाल करता नहीं था। वह तो उसका तभी इस्तेमाल करता था जब उसको उससे किसी चीज़ की जरूरत होती थी। इसलिये उसको यह बात उसी समय पता नहीं चली कि उसकी जादू की छड़ी का यह हाल हुआ।

पर इस घटना के बाद जब वह पहली बार अपनी जादू की छड़ी लेने गया और वहाँ वह उसको नहीं मिली जहाँ उसने उसको रखा था तो उसका माथा ठनका और वह तो पागल सा हो गया। उसको लगा कि न केवल उसकी सारी दौलत पल भर में ही खो गयी है बल्कि उसका तो सब कुछ खो गया है।

नाउम्मीद और दुखी हो कर वह घर से बाहर चला गया और बागीचे में परेशान सा इधर से उधर घूमता रहा। तभी उसको एक पेड़ की शाख में अपनी जादू की छड़ी टूटी हुई अटकी दिखायी दे गयी। यह देख कर तो उसके दिल की तो धड़कन ही रुक गयी।

उसने पेड़ की वह शाख हिलायी तो उस जादू की छड़ी के दोनों डंडे नीचे गिर पड़े। जैसे ही वे जमीन पर गिरे एक आवाज आयी

"मालिक, हुक्म।" इन शब्दों को सुन कर मैनीचीनो की जान में जान आयी।

इसका मतलब यह था कि यह उसी की जादू की छड़ी थी और टूट जाने के बाद भी काम कर रही थी। उसने तुरन्त ही उन दोनों टुकड़ों को उठा कर रख लिया और आगे से उसको और ज़्यादा सावधानी से रखने का निश्चय किया।

मैनीचीनो स्पेन में

उन्हीं दिनों स्पेन के राजा ने सब देशों में यह खबर भिजवायी कि उसकी अकेली बेटी अब शादी के लायक हो गयी है सो सब देशों से बहुत बहादुर नाइट्स[34] को वहाँ तीन दिन की लड़ाई के लिये बुलाया जाता है और उनमें से जो कोई भी जीतेगा उसी के साथ राजकुमारी की शादी की जायेगी।

मैनीचीनो ने सोचा कि यह मौका तो उसके लिये बहुत ही अच्छा मौका है इस तरह वह पहले युवराज और फिर राजा बन सकता है। सो उसने अपनी जादू की छड़ी निकाली और उससे चमकता हुआ जिरहबख्तर[35], घोड़े, ढाल माँगी और स्पेन चल दिया।

---

[34] Knights – a high ranking person in the King's people. See its picture above.

[35] Translated for the word "Armor". This worn on the body to protect it especially during the war.

अपना नाम और आने की जगह को छिपाने के लिये वह शहर के बाहर एक सराय में ठहर गया और लड़ाई के लिये तय किये हुए दिन का इन्तजार करने लगा।

यह लड़ाई एक बड़े से साफ मैदान में होने वाली थी जिसके चारों तरफ बड़े बड़े लौर्ड और उनकी पत्नियाँ बैठी हुई थीं। एक छाते लगे चबूतरे पर राजा और राजकुमारी बैठे थे जो अपने खास लोगों से बात कर रहे थे।

अचानक कई बिगुल बजने की आवाज हुई और भीड़ नाइट्स को उस खुले मैदान में आते देखने लगी। वे सब अपने अपने हाथों में चमकदार भाले लिये हुए थे। तुरन्त ही लड़ाई शुरू हो गयी। सब एक दूसरे को मारने लगे। सब बहादुर थे। सब ताकतवर थे।

तभी मैदान में एक नया नाइट आया। उसका चेहरा ढका हुआ था उसकी पोशाक के निशानों[36] को कोई नहीं जानता था। उस नये नाइट ने एक एक कर के सबको चुनौती दी।

पहला नाइट आया तो वह उसके एक ही वार में नीचे गिर पड़ा। दूसरा आया तो वह काँप गया और तीसरे का तो भाला ही टूट गया। चौथे के सिर का टोप[37] टूट गया।

[36] Translated for the words "Coat of Arms"

[37] Translated for the word "Helmet". See its picture above.

इस तरह इस नये नाइट से सारे नाइट्स हार गये। इसके बाद बजाय इसके कि यह नया नाइट जीत की खुशी में मैदान में चारों तरफ चक्कर काटता यह नाइट मैदान के चारों तरफ लगी चहारदीवारी के ऊपर से कूद कर मैदान से बाहर भाग गया।

सारे लोग आश्चर्य से उसका यह तमाशा देखते रह गये और किसी को भी यह पता नहीं चल सका कि यह नया नाइट कौन था, कहाँ से आया था और कहाँ चला गया।

वहाँ बैठे लोगों ने सोचा — "अगर यह नया नाइट कल भी आया तो कल हम इसके बारे में सब कुछ पता कर लेंगे।"

अगले दिन वह नया नाइट फिर आया और एक बार फिर उसने अपनी बहादुरी दिखा कर सबको आश्चर्य में डाल दिया। वह पिछले दिन की तरह से जीत कर फिर वहाँ से भाग गया और एक बार फिर वहाँ के लोग यह पता ही नहीं कर सके कि वह कौन था, कहाँ से आया था और कहाँ चला गया।

राजा इस बात से कुछ परेशान भी हुआ और इससे उसको अपना अपमान भी लगा कि एक अनजान नाइट इस तरह से उसके जानने वाले नाइट्स को हरा कर वहाँ से भाग गया। सो अगले दिन उसने अपने नौकरों को हुक्म दिया कि अबकी बार जब वह आये तो वे उसको पकड़ लें।

इसके लिये उस दिन मैदान की चहारदीवारी दोहरी कर दी गयी।

वह नाइट तीसरे दिन भी आया और उस दिन भी जीत गया। फिर वह राजा के सामने सिर झुकाने गया। राजकुमारी ने खुश हो कर उसके ऊपर अपना कढ़ा हुआ रूमाल फेंका। उसने वह रूमाल लपक लिया और फिर से मैदान के दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

वहॉ के चौकीदारों ने हथियारों की सहायता से उसको रोकने की कोशिश की पर उसने अपनी तलवार की कुछ चालों से ही मैदान की चहारदीवारी में अपना रास्ता बना लिया और भाग गया। पर इस भागने में एक भाला उसकी एक टॉग में लग गया।

राजा ने अपने सारे शहर में उस नाइट की खोज का हुक्म दे दिया – घरों के अन्दर भी और बाहर भी।

अन्त में लोगों को वह शहर के बाहर की एक सराय में मिला, और वह भी बिस्तर में क्योंकि उसकी एक टॉग जख्मी हो गयी थी।

पहले तो वे उसको पहचान नहीं सके कि वह वही नाइट था या कोई और क्योंकि जो बड़े नाइट होते थे वे ऐसी साधारण सी जगह नहीं ठहरते थे। पर जब उन्होंने उसकी जख्मी टॉग पर राजकुमारी का कढ़ा हुआ रूमाल बॅधा देखा तब उनका सारा शक जाता रहा।

वे उसको राजा के पास ले गये जहॉ उससे उसकी पहचान पूछी गयी क्योंकि लड़ाई में जीत जाने की वजह से उसको राजकुमारी का पति और राजा का वारिस बनना था। इसके लिये उसका चरित्र साफ होना जरूरी था।

मैनीचीनो बोला — "मेरा चरित्र बिल्कुल साफ है पर मैं जन्म से नाइट नहीं हूँ। मैं तो मिलान के एक सौदागर का बेटा हूँ।"

वहाँ बैठे लोग राजकुमार और कुलीन लोगों ने अपने गले साफ करने शुरू कर दिये। जैसे जैसे मैनीचीनो अपनी कहानी सुनाता गया वहाँ शोर बढ़ता ही गया।

जब उसकी कहानी खत्म हो गयी तो राजा बोला — "तो तुम नाइट नहीं हो बल्कि एक सौदागर के बेटे हो और तुम्हारी सारी दौलत एक जादू का फल है। अगर यह जादू खत्म हो जाये तो तुम्हारा और तुम्हारे इस सबका क्या होगा?"

राजकुमारी अपने पिता से बोली — "पिता जी, आप देख रहे हैं न कि मैं आपकी इस लड़ाई की वजह से किस खतरे में फँस गयी हूँ।"

कुछ कुलीन लोग बोले — "क्या हम अपने से नीचे परिवार में जन्मे आदमी को अपना राजा स्वीकार कर लेंगे?"

राजा चिल्लाया — "चुप रहो चुप रहो। यह सब क्या शोर मचा रखा है। जो कुछ भी मैंने, यानी राजा ने कहा उसमें यह नौजवान बिना किसी शक के सबसे अच्छा निकला इसलिये अब यही मेरी बेटी से शादी करने के लायक है और फिर मेरे राज्य का वारिस भी बनने के लायक है। अगर वह राजी हो तो।

इसके अलावा, क्योंकि मेरी बेटी इसको अपना पति स्वीकार नहीं करती और यह भी नहीं कहा जा सकता कि और लोग इस

बात को कैसे लेंगे, इसलिये मैं इसको यह सलाह देता हूँ कि यह मेरी बेटी को छोड़ कर मुझसे इसकी जगह कोई और इनाम ले ले।"

मैनीचीनो बोला — "मैजेस्टी, आप इसके लिये मुझे क्या सलाह देते हैं? अगर आपकी उस सलाह से मुझे कोई फायदा होता होगा तो मैं उसे स्वीकार कर लूँगा।"

राजा बोला — "मैं सोचता हूँ कि मैं तुम्हारे लिये तुम्हारी सारी उम्र के लिये एक हजार लीरा[38] सालाना की पैन्शन तय कर दूँ।"

मैनीचीनो बोला — "मुझे मंजूर है।"

एक नोटरी बुलाया गया और उससे एक समझौता लिखवाया गया जिस पर दस्तखत करने के बाद मैनीचीनो तुरन्त ही मिलान के लिये रवाना हो गया।

मैनीचीनो को मारने का प्लान

जब मैनीचीनो फिर अपने घर पहुँचा तो उसका पिता बीमार पड़ा हुआ था। वह जल्दी ही मर गया। अब दोनों भाई अपनी बूढ़ी माँ के साथ अकेले रह गये थे।

मैनीचीनो का बड़ा भाई हमेशा से ही उससे जला करता था, खास कर के अब जबकि वे बहुत अमीर हो गये थे और अब उनको उस जादू की छड़ी की कोई जरूरत भी नहीं रह गयी थी सो उसने

[38] Lira – the then currency of Italy. Lira was its currency from 1861 to January 1, 1999 when European currency Euro took over it. It was in use in Napoleon times also – 1807-1814.

मैनीचीनो को मार डालने की सोची। इसके लिये उसने दो मारने वाले किराये पर लिये।

मैनीचीनो अक्सर मिलान के बाहर अपने दोस्तों से मिलने जाया करता था और अभी भी वह अपनी जादू की छड़ी हमेशा अपने साथ ही रखता था।

एक दिन जब मैनीचीनो अपने दोस्तों से मिलने मिलान से बाहर जा रहा था तो उसके भाई ने उन दोनों मारने वालों को उसी सड़क पर खड़ा कर दिया।

इधर जब मैनीचीनो शहर से बाहर निकला तो उसने अपनी जादू की छड़ी जमीन पर मारी तो आवाज आयी — "मालिक, हुक्म।"

वह बोला — "मैं हुक्म देता हूँ कि मेरे घोड़े बिजली की तेज़ी से दौड़ जायें।" यह कहते ही उसके घोड़े बिजली की सी तेज़ी से दौड़ पड़े।

रास्ते में खड़े उन दोनों मारने वालों ने अपने सामने जाती हुई किसी चीज़ की जाती हुई की आवाज तो सुनी पर क्योंकि वे घोड़े बहुत तेज़ भाग रहे थे कि उनको यह भी पता नहीं चला कि उनके सामने से क्या चला गया।

उन्होंने सोचा कि हम उसको शाम को पकड़ लेंगे जब वह अपने घर लौटेगा पर वह तो शाम को भी अपनी उसी तेज़ी से भागा चला गया जिस तेज़ी से वह सुबह गया था सो वे उसको शाम को भी नहीं पकड़ सके।

बड़े भाई ने फिर उन मारने वालों को अपने महल में बुला लिया और उनको मैनीचीनो के कमरे के पास ले गया और वहाँ उनको उसको मारने के लिये तैनात कर दिया।

पर मैनीचीनो को कुछ शक सा हो गया सो उसने अपनी जादू की छड़ी को कहा कि वह उसके दरवाजे को ऐसा कर दे कि कोई दूसरा उसे खोल ही न सके।"

इस तरह उन मारने वालों ने रात भर उसके कमरे में घुसने की कोशिश की पर वे उसका दरवाजा ही नहीं खोल सके। सुबह होने पर वे वहाँ से चले गये।

एक दिन मैनीचीनो से एक बहुत बड़ी गलती हो गयी। एक बार उसको शिकार के लिये जाना था तो उसने सोचा कि अगर मैं इस जादू की छड़ी को अपने साथ ले जाऊँगा तो मैं बेमौत मारा जाऊँगा सो इससे तो अच्छा यह है कि मैं इसको यहीं अपने कमरे में ही रख देता हूँ।

यही सोचते हुए उसने अपनी जादू की छड़ी अपने कमरे में रख दी और अपने दोस्तों के साथ शिकार खेलने के लिये बिना उस छड़ी के ही चला गया।

पर उसके भाई की आँखें तो हमेशा खुली रहती थीं। सो जब उसने देखा कि मैनीचीनो ने अपनी जादू की छड़ी अपने कमरे में रख दी है तो उसने फिर मैनीचीनो के कमरे में रखी आलमारी की ड्रौअर खोजीं और वह टूटी हुई जादू की छड़ी निकाल ली।

"तो यह है वह छड़ी। लगता है कि यह अभी भी काम करती है नहीं तो मेरे भाई ने इसको वहाँ से उठायी ही नहीं होती जहाँ मैंने इसको फेंका था। पर अब बस इसका काम खत्म।"

यह कह कर उसने छड़ी के दोनों टुकड़ों को रसोईघर में ले जा कर उनको आग में डाल दिया।

छड़ी के वे दोनों टुकड़े कुछ पल में ही जल कर राख हो गये और उसके साथ राख हो गया वह महल, दौलत, पैसा, घोड़े, कपड़े और भी सब कुछ जो उसकी वजह से उनको मिला था।

जिस समय मैनीचीनो के भाई ने उसकी वह जादू की डंडी जलायी उस समय मैनीचीनो घने जंगल में था। उस समय वह जो बन्दूक लिये हुए था, वह जिस घोड़े पर चढ़ा हुआ था और उसके वे कुत्ते जो खरगोशों के पीछे भाग रहे थे वे सब हवा के साथ उड़ गये।

उसको लगा कि उसकी सारी खुशकिस्मती हमेशा के लिये चली गयी। और यह सब उसकी अपनी बेवकूफी से ही हुआ। वह तो वहीं बहुत ज़ोर से रो पड़ा।

मैनीचीनो की मौत

अब मिलान वापस जाना बेकार था। उसने सोचा कि अब उसको स्पेन जाना चाहिये जहाँ उसकी 1000 लीरा सालाना की पेन्शन अभी

भी थी जो राजा ने उसके लिये तय की थी। सो वह पैदल ही स्पेन चल दिया।

जब वह नाव से स्पेन जा रहा था तो उसको एक आदमी मिला जो बैल बेचता था। जैसा कि अक्सर साथ यात्रा करने वाले करते हैं उन दोनों की नाव में आपस में बात हुई। फिर बल्कि नाव से उतरने के बाद भी वे सड़क पर बात करते करते चलते रहे।

इस बीच मैनीचीनो ने उस बैल के व्यापारी को अपने बारे में सब कुछ बता दिया।

जब उस बैल के व्यापारी को मैनीचीनो की बदकिस्मती के बारे में पता चला तो उसने उससे कहा कि क्या वह उसके बैलों को वहाँ ले जा सकता है जहाँ उनकी जरूरत है। मैनीचीनो राजी हो गया और दोनों अपने अपने कामों में लग गये।

कुछ ही दिनों में मैनोचीनो के पास कुछ पैसे जमा हो गये। एक शाम जब वह अपने साथियों के साथ एक सराय में ठहरा हुआ था तो वहाँ कुछ मारने वालों ने उनके ऊपर हमला कर दिया।

वे मारने वाले काफी थे। मैनीचीनो ने हथियार उठाये भी पर क्योंकि वे कई थे इसलिये वह अकेला ज़्यादा कुछ नहीं कर सका और उन्होंने उसको मार दिया।

इस तरह से मैनीचीनो के साहसिक कामों और बदकिस्मती सबका अन्त हो गया। पर इसके मरने से इसके भाई का कोई भला नहीं हुआ क्योंकि मैनीचीनो की जादू की डंडी जलाते ही उसकी सारी

दौलत और जायदाद का तो अन्त हो गया था। और उनके जाने के बाद अब वह फिर से गरीब हो गया था।

उसके बाद उसने सौदागरी का धन्धा भी शुरू किया पर वह चला नहीं और फिर उसकी हालत बुरी और बुरी से भी और ज़्यादा बुरी होती चली गयी। इसके बाद वह डाकुओं के एक गिरोह में शामिल हो गया।

और यह तो सभी जानते हैं कि दस में से नौ बार तो डाकू बच ही जाते हैं पर दसवीं बार पकड़े भी जाते हैं। उसके साथ भी यही हुआ।

एक बार सिपाहियों ने उन डाकुओं को पकड़ने के लिये जाल बिछाया और इत्तफाक से वे सब डाकू पकड़े गये।

उनको हथकड़ी बेड़ी लगा कर जेल में डाल दिया गया और फिर उनको फॉसी पर चढ़ा दिया गया। उसी में मैनीचीनो को भी फॉसी चढ़ा दिया गया।

4 सालमन्ना अंगूर[39]

एक बार एक राजा था जिसके एक बहुत ही सुन्दर बेटी थी। वह शादी के लायक थी। उधर पड़ोस के राज्य के एक राजा के तीन बेटे थे और वे तीनों उस राजकुमारी को प्यार करते थे।

सो एक दिन वे राजकुमारी से शादी का प्रस्ताव ले कर राजा के पास गये तो राजकुमारी के पिता ने कहा — "जहाँ तक मेरा सवाल है मेरे लिये तो तुम तीनों ही बराबर हो।

मैं तुम तीनों में से किसी को भी यह नहीं कह सकता कि तुम तीनों में से फलाँ राजकुमार मुझे ज़्यादा अच्छा लगता है पर मैं तुम लोगों में आपस में जलन भी नहीं पैदा करना चाहता।

इसलिये ऐसा करते हैं कि क्यों न तुम सब छह छह महीने के लिये दुनियाँ घूमो और जो भी राजकुमारी के लिये सबसे अच्छी भेंट ले कर आयेगा वही मेरा दामाद[40] बनेगा।"

सो वे तीनों भाई साथ साथ निकल पड़े। चलते चलते वे लोग एक ऐसी जगह आये जहाँ से सड़क तीन दिशाओं में जाती थी। वे

---

[39] The Salamanna Grapes (Story No 65) – a folktale from Italy from its Montale Pistoiese area. [There are a few similar tales in Vikram Vaitaal Stories also, read them at: (1) Three Princes - http://sushmajee.com/shishusansar/stories-vikram-vaitaal/vaitaal-1/5-three-princes.htm (2) Three Delicate Queens - http://sushmajee.com/shishusansar/stories-vikram-vaitaal/vaitaal-2/10-delicate.htm (3) Three Suitors - http://sushmajee.com/shishusansar/stories-vikram-vaitaal/vaitaal-1/2-three-suitors.htm (4) Varamaalaa - http://sushmajee.com/shishusansar/stories-vikram-vaitaal/vaitaal-1/7-varmaalaa.htm]

[40] Son-in-law – daughter's husband

लोग वहीं पर ठहर गये और छह महीने बाद वहीं पर मिलने का वायदा कर के तीनों ने अलग अलग सड़क पकड़ी और अपने अपने रास्ते चल दिये।

सबसे बड़ा भाई तीन, चार, पॉच महीने तक चलता रहा पर उसको कहीं कोई ऐसी चीज़ नहीं मिली जो राजकुमारी को भेंट देने के लायक होती।

तब छठे महीने में एक सुबह को बहुत दूर के एक शहर में उसने अपनी खिड़की के नीचे एक ठेले वाले[41] को यह आवाज लगाते सुना — "बढ़िया कालीन ले लो, बढ़िया कालीन ले लो।"

उसने खिड़की से बाहर झॉका तो नीचे एक कालीन वाले को कालीन बेचते देखा। कालीन बेचने वाले ने उससे पूछा — "क्या आप एक बढ़िया कालीन खरीदेंगे?"

राजकुमार ने जवाब दिया — "जब कुछ नहीं मिलेगा तब देखूॅगा। कालीन तो मेरे महल में सब जगह बिछे हुए है, यहॉ तक कि मेरी तो रसोई में भी कालीन बिछा हुआ है।"

पर कालीन बेचने वाले ने जिद की — "पर मुझे यकीन है कि आपके घर में ऐसा जादुई कालीन नहीं होगा जैसा मेरे पास है।"

"इस कालीन में क्या खास बात है भाई?"

---

[41] Translated for the word "Hawker"

"इस कालीन में खास बात यह है कि जब आप इस पर पैर रखेंगे तो यह आपको हवा में उड़ा कर दूर दूर तक ले जायेगा।"

राजकुमार ने चुटकी बजायी और सोचा "यही सबसे अच्छी भेंट है राजकुमारी के लिये। मैं इसे ही उसके लिये खरीद लेता हूँ।"

उसने कालीन बेचने वाले से पूछा — "इसका क्या दाम है?"

"सौ क्राउन[42]।"

"ठीक है।" उसने सौ क्राउन गिने और वह कालीन उससे खरीद लिया।

जैसे ही उसने उस कालीन के ऊपर पैर रखा वह कालीन तो उसको ले कर हवा में उड़ चला – पहाड़ों के ऊपर, घाटियों में हो कर और फिर वह वहाँ उसी सराय में आ गया जहाँ तीनों भाइयों ने अपनी छह महीने की यात्रा से लौट कर मिलने का वायदा किया था।

उसके दोनों भाई अभी तक नहीं लौटे थे।

X X X X X X X

बीच वाला भाई भी दूर दूर तक गया पर वह भी कोई ऐसी चीज़ नहीं पा सका जिसको वह राजकुमारी के लिये भेंट में ले जा सकता।

[42] Crown is the currency used in those days in Europe

वह यह सोच ही रहा था कि वह क्या करे कि एक दिन उसको एक दूरबीन बेचने वाले की आवाज सुनायी पड़ी — "दूरबीन ले लो दूरबीन। ओ नौजवान, दूरबीन खरीदोगे?"

राजकुमार ने कहा — "मैं और दूरबीन ले कर क्या करूँगा? मेरे घर में तो बहुत सारी दूरबीन हैं।"

दूरबीन बेचने वाला बोला — "मैं शर्त लगा कर कह सकता हूँ कि आपके घर में बहुत सारी दूरबीनें जरूर होंगी पर आपने ऐसी जादुई दूरबीनें कभी नहीं देखी होंगी।"

"ऐसी क्या खास बात है इन दूरबीनों में?"

दूरबीन बेचने वाला बोला — "इन दूरबीनों से आप केवल सौ मील दूर का ही नहीं बल्कि दीवार के उस पार का भी देख सकते हैं।"

राजकुमार यह सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने सोचा "राजकुमारी के लिये यही बहुत अच्छी भेंट है मैं इसी को खरीद लेता हूँ।"

उसने दूरबीन बेचने वाले से पूछा — "कितने की दी है यह दूरबीन?"

"सौ क्राउन की एक दूरबीन।"

उसने भी सौ क्राउन उस दूरबीन बेचने वाले को दिये और उससे एक दूरबीन खरीद ली।

दूरबीन खरीद कर वह भी उसी सराय में आ गया जहाँ उसका बड़ा भाई ठहरा हुआ था। वहाँ वे दोनों अब अपने सबसे छोटे भाई का इन्तजार करने लगे।

X X X X X X X

सबसे छोटे भाई को आखिरी दिन तक कुछ नहीं मिला। वह अब अपनी सारी आशाऐं छोड़ चुका था। सो उसने खाली हाथ ही घर लौटने का निश्चय किया।

जब वह घर वापस आ रहा था तो रास्ते में उसको एक फल बेचने वाला मिला। वह चिल्लाता जा रहा था — "सालमन्ना अंगूर ले लो, सालमन्ना अंगूर। ये बहुत बढ़िया सालमन्ना अंगूर हैं।"

इस राजकुमार ने कभी सालमन्ना अंगूर का नाम नहीं सुना था क्योंकि वे उसके देश में उगते ही नहीं थे। सो वह उस फल बेचने वाले के पास गया और उससे पूछा — "ये सालमन्ना अंगूर क्या होते हैं?"

फल बेचने वाला बोला — "ये सालमन्ना अंगूर कहलाते हैं और इनसे ज़्यादा अच्छे अंगूर दुनियाँ भर में कहीं नहीं होते। ये एक और आश्चर्यजनक काम करते हैं।"

"वह क्या?"

"एक अंगूर किसी ऐसे आदमी के मुँह में रखो जो अपनी आखिरी साँसें ले रहा हो तो वह तुरन्त ही ठीक हो जाता है।"

राजकुमार खुशी से चिल्लाया — "क्या तुम ठीक कह रहे हो? अगर ऐसा है तो मैं इनमें से कुछ खरीद लेता हूँ। कितने के हैं ये?"

"हालाँकि ये अंगूर एक एक कर के बेचे जाते हैं पर मैं आपके लिये इनका खास कम दाम लगा दूँगा – सौ क्राउन का एक अंगूर।"

राजकुमार के पास केवल तीन सौ क्राउन थे सो उनसे वह केवल तीन अंगूर ही खरीद सका। उसने उनको एक छोटे से बक्से में रखा और अपने भाइयों से मिलने के लिये सराय चल दिया।

जब वे तीनों भाई सराय में मिले तो तीनों ने एक दूसरे से पूछा कि उन्होंने क्या क्या खरीदा।

सबसे बड़ा लड़का बोला — "ओह केवल एक छोटा सा कालीन।"

बीच वाला लड़का बोला — "मैंने एक छोटी सी दूरबीन खरीदी।"

सबसे छोटा वाला लड़का बोला — "और मैंने केवल एक छोटा सा फल खरीदा, ज़्यादा कुछ नहीं।"

और तीनों अपने घर की तरफ चल पड़े कि उनमें से एक लड़का बोला — "पता नहीं हमारे घर में अभी क्या हो रहा होगा। और राजकुमारी के महल में भी।"

सो बीच वाले लड़के ने अपनी दूरबीन अपने घर की तरफ की तो देखा कि वहाँ सब ठीक चल रहा था। फिर उसने अपने पड़ोसी राज्य की तरफ देखा जहाँ उसकी प्रेमिका का महल था तो वह तो चीख ही पड़ा।

भाइयों ने पूछा — "क्या हुआ?"

बीच वाला भाई बोला — "मैं इस दूरबीन से अपनी प्रेमिका का महल देख सकता हूँ। पर वहाँ बहुत सारी गाड़ियों की लाइन लगी है। लोग रो रहे हैं और अपने बाल नोच रहे हैं।

"और महल के अन्दर?"

"महल के अन्दर मुझे एक डाक्टर दिखायी दे रहा है, एक पादरी दिखायी दे रहा है। वे दोनों राजकुमारी के पलंग के पास खड़े हैं। राजकुमारी अपने बिस्तर पर चुपचाप पड़ी हुई है। उसका रंग पीला पड़ा हुआ है और वह मरी जैसी लग रही है।

जल्दी चलो भाइयो जल्दी। इससे पहले कि हमको देर हो जाये हमको जल्दी ही वहाँ पहुँचना चाहिये।"

"पर हम वहाँ जल्दी कभी नहीं पहुँच सकते। वह तो पचास मील दूर है।"

सबसे बड़ा भाई बोला — "तुम लोग चिन्ता न करो। तुम दोनों मेरे इस कालीन पर बैठ जाओ और हम लोग बहुत जल्दी ही वहाँ पहुँच जायेंगे।"

सो तीनों उस कालीन पर बैठ गये और कालीन उन तीनों को ले कर उड़ चला। पलक झपकते ही वह कालीन तीनों राजकुमारों को ले कर राजकुमारी के कमरे में जा कर एक बहुत ही साधारण से कालीन के ऊपर उतर गया।

सबसे छोटे भाई ने सालमन्ना अंगूरों के चारों तरफ लिपटी हुई रुई पहले से ही हटा रखी थी। उसने झट से एक अंगूर निकाला और राजकुमारी के मुँह में रख दिया।

वह उस अंगूर को निगल गयी और तुरन्त ही उसने अपनी ऑखें खोल दीं। उस लड़के ने जल्दी से एक और अंगूर उसके मुँह में रख दिया जिससे उसके चेहरे का रंग वापस आ गया।

फिर उसने तीसरा और आखिरी अंगूर भी उसको खिला दिया। उसको खाते ही उसने एक गहरी साँस ली और अपनी बाँहें उठा दीं। वह अपने बिस्तर पर बैठ गयी और उसने अपनी दासियों को हुक्म दिया कि वे उसको उसके सबसे सुन्दर कपड़े पहना कर सजा दें।

सब लोग बहुत खुश थे कि अचानक सबसे छोटा भाई बोला — "मैं जीत गया और अब राजकुमारी मेरी है। बिना मेरे सालमन्ना अंगूर खाये तो अब तक तो वह कभी की मर ही गयी होती।"

बीच वाले भाई ने कहा — "नहीं भाई, अगर मैं अपनी दूरबीन से नहीं देखता और तुमको यह नहीं बताता कि राजकुमारी बीमार है

तो तुम्हारे अंगूर अकेले क्या कर लेते? इसलिये राजकुमारी मेरी है और मैं ही उससे शादी करने का हकदार हूँ।"

सबसे बड़ा भाई बोला — "नहीं भाई नहीं, मुझे अफसोस है कि राजकुमारी तुममें से किसी की भी नहीं है केवल मेरी है और इसे मुझसे कोई नहीं छीन सकता।

तुम लोगों का सहयोग तो मेरे सहयोग के सामने कुछ भी नहीं। अगर मेरा कालीन तुम सबको यहाँ समय से नहीं लाता तो तुम दोनों वहाँ बैठे बैठे क्या कर सकते थे।"

इस तरह राजा जो झगड़ा उन तीनों राजकुमारों मे नहीं चाहता था वह और ज़ोर ज़ोर से होने लगा।

राजा ने फिर उस झगड़े का अन्त इस तरह किया कि उसने अपनी बेटी की शादी किसी चौथे आदमी से कर दी जिसके पास कुछ भी नहीं था।

5 जादू डाला गया महल[43]

एक बार एक राजा था जिसके एक बेटा था जिसका नाम था फ़िओरडीनैन्डो[44]। वह हमेशा पढ़ता ही रहता था। वह हमेशा अपने कमरे में बन्द रहता और बस पढ़ता ही रहता।

कभी कभी वह अपनी किताब बन्द कर देता और खिड़की में से बाहर बागीचे की तरफ और उसके आगे जंगल की तरफ भी देख लेता पर फिर अपना पढ़ना शुरू कर देता।

वह अपने कमरे में से कभी बाहर ही नहीं निकलता सिवाय दोपहर और शाम का खाना खाने के। हॉ कभी कभी वह बागीचे में टहलने के लिये निकल जाता था।

एक दिन राजा का एक शिकारी जो एक बहुत ही अच्छा नौजवान था और बचपन में राजकुमार के साथ खेला भी था राजा से बोला — "राजा साहब, क्या मैं फ़िओरडीनैन्डो से बात कर सकता हूॅ? मैंने उसे बहुत दिनों से नहीं देखा है।"

राजा बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। हो सकता है कि तुम्हारा उससे मिलना मेरे बेटे का मन बदल दे।"

[43] The Enchanted Palace. Tale No 66. A folktale from Italy from its Montale Pistoiese area.

[44] Fiordinando – the name of the prince

सो वह शिकारी फ़िओरडीनैन्डो के कमरे में घुसा। राजकुमार ने उसको देखा तो पूछा — "अरे, ये कील लगे बूट पहन कर तुम यहाँ कैसे आये?"

शिकारी कई तरीके के शिकारों को समझाता हुआ बोला — "मैं तो राजा का शिकारी हूँ।" फिर उसने उसको पक्षियों के और खरगोशों के तरीके बताये और जंगलों के कई हिस्सों के हाल भी सुनाये।

फ़िओरडीनैन्डो की सोच जाग गयी। वह उससे बोला — "सुनो, मैं भी शिकार में अपनी किस्मत आजमाना चाहता हूँ। पर मेरे पिता जी को यह बात अभी नहीं बताना वरना वह यह सोचेंगे कि यह तुम्हारा विचार है। मैं बस किसी सुबह उनसे तुम्हारे साथ जाने की इजाज़त माँग लूँगा।"

वह शिकारी बोला — "जैसी तुम्हारी इच्छा।"

अगले दिन नाश्ते के समय फ़िओरडीनैन्डो ने राजा से कहा — "पिता जी, कल मैंने शिकार के ऊपर एक किताब पढ़ी जो मुझे इतनी मजेदार लगी कि मुझे शिकार पर जाने की और अपनी किस्मत वहाँ आजमाने की बड़ी इच्छा हो रही है। क्या मैं शिकार पर जा सकता हूँ?"

राजा बोला — "बेटे शिकार खेलना उसके लिये एक खतरे वाला खेल है जो उसमें नया हो। पर तुमको मैं उस काम से रोकूँगा नहीं जिसको तुम करना चाहते हो।

साथ के लिये तुम मेरा शिकारी ले जा सकते हो जो किसी शिकारी कुत्ते से कम नहीं है। बस उसको तुम अपनी नजर से दूर मत करना।"

अगली सुबह फ़िओरडीनैन्डो और राजा का शिकारी दोनों अपने अपने घोड़ों पर सवार हो कर अपनी अपनी बन्दूक ले कर जंगल की तरफ चल दिये।

शिकारी ने हर उस चिड़िया और हर उस खरगोश को मारा जो भी उसको रास्ते में दिखायी दिया। फ़िओरडीनैन्डो ने भी शिकार करने की कोशिश की पर हर शिकार उसके निशाने से बच कर निकल गया।

शाम को शिकारी का थैला तो शिकार से भरा हुआ था पर फ़िओरडीनैन्डो के थैले में एक पंख भी नहीं था।

चलने से पहले फ़िओरडीनैन्डो को एक झाड़ी में एक खरगोश दिखायी दिया सो उसने उसका शिकार करने के लिये अपना निशाना साधा।

पर क्योंकि वह खरगोश बहुत छोटा था फ़िओरडीनैन्डो को लगा कि वह तो उसको केवल भाग कर ही उसको पकड़ लेगा पर जैसे ही वह उस झाड़ी के पास पहुँचा खरगोश वहाँ से भाग लिया और फ़िओरडीनैन्डो भी उसके पीछे पीछे दौड़ लिया।

जब भी फ़िओरडीनैन्डो को लगता कि वह उसको पकड़ लेगा वह खरगोश उससे आगे निकल जाता। फिर वह आगे जा कर रुक

जाता जैसे उसके पास आने का इन्तजार कर रहा हो और फिर फ़िओरडीनैन्डो के पास आते ही वह फिर भाग लेता।

उसका पीछा करते करते फ़िओरडीनैन्डो शिकारी से इतना दूर निकल आया कि रास्ता भूल गया और वापस नहीं जा सका। उसने शिकारी को बार बार पुकारा भी पर किसी ने उसको कोई जवाब ही नहीं दिया।

अब तक अँधेरा हो चुका था और खरगोश भी गायब हो गया था। दुखी और थका माँदा फ़िओरडीनैन्डो एक पेड़ के नीचे आराम करने के लिये बैठ गया। उसको वहाँ बैठे देर नहीं हुई थी कि उसने पेड़ों के बीच से एक रोशनी चमकती देखी।

उसको देख कर वह उठ गया और पेड़ों के नीचे नीचे हो कर उस रोशनी की तरफ जाने लगा। चलते चलते वह एक साफ मैदान में आ गया जहाँ एक बहुत सुन्दर सजा हुआ महल खड़ा था।

उसका सामने का दरवाजा खुला हुआ था सो फ़िओरडीनैन्डो ने उसमें से पुकारा — "हलो, अन्दर कोई है?" पर वहाँ से भी किसी की आवाज नहीं आयी – यहाँ तक कि उसकी अपनी आवाज भी नहीं गूँजी।

वह उस महल के अन्दर घुस गया तो एक बड़े कमरे में पहुँचा। वहाँ आग जलाने की जगह आग जल रही थी और उसके पास ही शराब और गिलास रखे हुए थे। फ़िओरडीनैन्डो वहीं पास पड़ी एक

कुर्सी पर सुस्ताने के लिये बैठ गया। थकान मिटाने के लिये उसने वहॉ रखी थोड़ी सी शराब पी।

शराब पीने के बाद वह उठा और महल के दूसरे कमरे में पहुॅचा तो वहॉ दो आदमियों के लिये खाने की मेज सजी रखी थी। प्लेट, चम्मच, छुरी, कॉटे सब सोने और चॉदी के थे।

उस कमरे के परदे, मेजपोश, नैपकिन्स सब मोती और हीरे से कढ़ी हुई सिल्क के थे। छत से लटके झाड़फानूस आदि सब ठोस सोने के थे और बड़ी बड़ी टोकरियों के साइज़ के थे।

क्योंकि वहॉ कोई था नहीं और फ़िओरडीनैन्डो भूखा था सो वह खाना खाने के लिये उस मेज पर बैठ गया।

उसने अभी अपना पहला कौर तोड़ कर मुॅह में रखा ही था कि उसको सीढ़ियों से नीचे आती कपड़ों की सरसराहट सुनायी दी। उसने घूम कर उधर देखा तो उसको एक रानी वहॉ अपनी बारह दासियों के साथ आती दिखायी दी।

रानी जवान थी और बहुत ही सुन्दर थी पर उसका चेहरा एक भारी से परदे के पीछे छिपा हुआ था। वह भी उसी मेज पर आ कर खाना खाने बैठ गयी। सारे खाने के बीच न तो रानी बोली और न ही उसकी एक भी दासी बोली।

वह फ़िओरडीनैन्डो के सामने मेज के दूसरी तरफ बैठी हुई थी। उसकी दासियों ने उसको उसका खाना परोसा और उसकी शराब उसके गिलास में डाली।

इस तरह सारा खाना शान्ति में खाया गया। रानी अपना खाना अपने मुँह तक उस परदे के पीछे ले जा कर ही खाती रही।

जब रानी ने खाना खत्म कर लिया तो वह उठी और उसकी दासियाँ वापस उसको सीढ़ियों से ऊपर ले गयीं। फ़िओरडीनैन्डो भी मेज से उठ गया और उसने फिर महल देखना शुरू किया।

अब वह एक बड़े सोने वाले कमरे में आ गया था जहाँ रात को सोने के लिये एक पलँग बिछा हुआ था। वहाँ उसने अपने कपड़े उतारे और चादर में घुस गया।

उस पलंग की छत के पीछे एक छिपा दरवाजा था। उसने देखा कि उस छिपे दरवाजे में से रानी उस कमरे में आयी। वह अभी भी चुप थी, उसके चेहरे पर अभी भी परदा पड़ा हुआ था और उसके पीछे अभी भी उसकी बारह दासियाँ चल रही थीं।

फ़िओरडीनैन्डो यह सब देख रहा था। उसकी दासियों ने सिवाय उसके चेहरे के परदे के उसके सारे कपड़े उतारे और उसको फ़िओरडीनैन्डो के बराबर में पलंग पर लिटा दिया। फिर वे चली गयीं।

फ़िओरडीनैन्डो को यकीन था कि वह रानी या तो कुछ बोलेगी या फिर अपना परदा हटायेगी। पर वह न तो कुछ बोली और न ही उसने अपना परदा हटाया और वह तुरन्त ही सो भी गयी।

उसकी आती जाती साँसों से उसका परदा हिल रहा था। फ़िओरडीनैन्डो कुछ पल तो कुछ सोचता रहा फिर सो गया।

सुबह को रानी की दासियॉ फिर वहॉ आयीं, उन्होंने रानी को कपड़े पहनाये और वहॉ से ले गयीं।

फ़िओरडीनैन्डो भी उठ गया। नाश्ता मेज पर लगा हुआ था सो उसने जी भर कर नाश्ता किया और फिर नीचे घुड़साल में चला गया। वहॉ उसका घोड़ा घास खा रहा था। वह उस पर चढ़ा और जंगल की तरफ दौड़ गया।

सारा दिन वह जंगल में सड़क ढूँढता रहा जो उसको उसके घर तक पहुँचा देती। वह अपने साथी को भी ढूँढता रहा कि उसका कोई पता मिल जाता पर ऐसा लगता था कि वह तो दोबारा खो गया था।

और जब रात हुई तो उसी एक साफ जगह में वही महल फिर से खड़ा हुआ था। वह फिर उसके अन्दर चला गया और फिर एक बार उसके साथ वही सब हुआ जो पहले दिन हुआ था।

पर अगले दिन जब वह जंगल में अपने घोड़े पर सवार हो कर जा रहा था तो उसको अपना शिकारी साथी मिल गया। उसने फ़िओरडीनैन्डो को बताया कि वह उसको तीन दिन से ढूँढ रहा था। फिर वे दोनों साथ साथ घर लौट आये।

जब शिकारी ने उससे उसके उन तीन दिनों के बारे में पूछा जिनमें वह गायब था तो उसने अपनी मुसीबतों की कुछ कुछ कहानी बना कर उसको बता दी पर सचमुच में उसके साथ क्या हुआ था यह नहीं बताया।

महल वापस आ कर तो फ़िओरडीनैन्डो बिल्कुल ही बदला हुआ आदमी हो गया था। अब वह पढ़ता नहीं था बल्कि अब उसकी ऑखें अपनी किताबों के पन्नों पर से हट कर बागीचे के उस पार जंगल की तरफ देखती रहतीं।

यह सब देख कर उसकी मॉ ने एक दिन उससे पूछा कि वह क्या सोच रहा है। पहले तो फ़िओरडीनैन्डो ने उसे कुछ बताया नहीं पर वह भी उसके पीछे पड़ी रही। तब कहीं जा कर उसने उसे बताया कि जंगल में उसके साथ क्या हुआ था।

उस समय उसने अपनी मॉ से यह भी नहीं छिपाया कि वह उस रानी से प्यार करने लगा था। पर वह अब उससे शादी कैसे करे जबकि उसने न तो उसे अपना चेहरा ही दिखाया था और न ही वह कुछ बोली थी।

उसकी मॉ बोली — "बेटा, मैं बताती हूँ कि तुम क्या करो। तुम एक बार उसके साथ खाना और खाओ। जब तुम दोनों वहॉ बैठ जाओ तो उसका कॉटा ऐसे नीचे गिरा दो जैसे तुमने उसका वह कॉटा गलती से गिरा दिया हो।

जब वह उसको उठाने के लिये नीचे झुके तो उसका परदा चेहरे से खींच दो। इस मौके पर वह तुमसे जरूर ही कुछ कहेगी।"

यह सुनते ही बस उसने तुरन्त ही अपने घोड़े पर जीन कसी और जंगल की तरफ चल दिया और उसी खुली जगह पहुॅच गया।

वहाँ वह महल अभी भी खड़ा हुआ था। जब वह वहाँ पहुँचा तो उसका वहाँ पहले की तरह से स्वागत हुआ।

जब शाम को रानी खाना खाने आयी तो उसने रानी का काँटा अपनी कोहनी मार कर नीचे गिरा दिया। वह उसको नीचे से उठाने के लिये झुकी तो उसने उसका परदा खोल दिया।

इस पर वह चाँद की किरन जैसी सुन्दर और सूरज की आग जैसी तपती हुई रानी उठी और चिल्लायी — "ओ बुरा बर्ताव करने वाले नौजवान, तुमने मुझे धोखा दिया है।

अगर मैं तुम्हारे पास बिना बोले और बिना अपना परदा हटाये एक रात और सो जाती तो मैं अपने ऊपर पड़े हुए जादू से आजाद हो जाती और तुम मेरे पति हो जाते।

पर अब मुझे एक हफ्ते के लिये पैरिस[45] जाना पड़ेगा और फिर वहाँ से पीटरबोरो[46]।

पीटरबोरो में मैं एक टूर्नामिन्ट[47] में इनाम की तरह से दी जाऊँगी। और फिर तो भगवान ही जानता है कि कौन मुझे जीतेगा। अच्छा, विदा। और ध्यान रखना कि मैं पुर्तगाल की रानी हूँ।"

---

[45] Paris is the capital of France country in Europe.

[46] Peterborough is a cathedral city in the East of London, about 75 miles North of London. See its Cathedral's picture above. It has a railway station as an important stop on the East Coast Main Line between London and Edinburgh.

[47] This tournament was among knights in which the knights used to fell another knight by their blunted lance.

यह कहते के साथ ही वह खुद भी गायब हो गयी और उसके साथ ही उसका वह महल भी गायब हो गया। फ़िओरडीनैन्डो अब घने जंगल में अकेला खड़ा था। यहॉ से घर का रास्ता मालूम करना उसके लिये आसान काम नहीं था।

पर किसी तरह से जब वह अपने घर पहुॅच गया तो उसने अपना बटुआ पैसों से भरा, अपने शिकारी साथी को बुलाया और घोड़े पर सवार हो कर उसके साथ पैरिस चल दिया।

वे तब तक अपने घोड़ों पर से नहीं उतरे जब तक पैरिस में किसी सराय में नहीं पहुॅच गये। कुछ देर आराम करने के बाद वह यह जानना चाहता था कि वह पुर्तगाल की रानी वाकई में वहॉ थी भी या नहीं।

वह उस सराय के मालिक के पास पहुॅचा और उससे पूछा कि शहर की क्या खबर थी। सराय का मालिक बोला — "कोई खास तो नहीं। तुम किस तरह की खबर की आशा कर रहे हो?"

"किसी भी तरह की खबर, लड़ाई की खबर, दावत के दिनों की खबर, किसी खास आदमी के शहर में आने की खबर।"

सराय का मालिक बोला — "ओह, अब याद आया एक मजेदार खबर है। पॉच दिन पहले पुर्तगाल की रानी यहॉ आयी है और तीन दिन में वह यहॉ से पीटरबोरो चली जायेगी।

वह बहुत ही सुन्दर स्त्री है और पढ़ी लिखी भी बहुत है। उसको नयी नयी जगह जाना अच्छा लगता है और शहर के दरवाजे

के बाहर हर शाम को अपनी बारह दासियों के साथ घूमना बहुत अच्छा लगता है।"

फ़िओरडीनैन्डो ने पूछा — "क्या मैं उसको देख सकता हूँ?"

"हॅ हॅ, क्यों नहीं? जब वह खुले में घूमती है तो कोई भी आने जाने वाला उसको देख सकता है।"

"बहुत बढ़िया। ऐसा करो, तो तब तक तुम हमें खाना खिला दो फिर हम उसको देखने जायेंगे। और हॅ लाल शराब[48] भी साथ में ले आना।"

उस सराय के मालिक की एक बेटी थी जो अब तक अपनी शादी के लिये आने वाले सब उम्मीदवारों को मना कर चुकी थी क्योंकि कोई उसको अच्छा ही नहीं लगा था।

पर जैसे ही उसने फ़िओरडीनैन्डो को घोड़े से उतरते देखा उसने अपने आपसे कहा कि "यही है वह नौजवान जिससे मैं शादी करूँगी।"

वह तुरन्त अपने पिता के पास यह कहने के लिये गयी कि वह उस लड़के से प्यार करने लगी है जो अभी अभी उनकी सराय में आया है और यह पूछने गयी कि वह कैसे उस नौजवान से शादी कर सकती है।

यह सुन कर उस सराय के मालिक ने फ़िओरडीनैन्डो से कहा — "मुझे आशा है कि पेरिस तुमको पसन्द आयेगा और यह भी हो

[48] Red wine – it is very common drink in Italy. It is made from red grapes.

सकता है कि तुमको यहाँ किस्मत से अपनी होने वाली पत्नी भी मिल जाये।"

फ़िओरडीनैन्डो बोला — "मेरी पत्नी तो दुनियाँ की सबसे सुन्दर रानी है और मैं सारी दुनियाँ तक उसका पीछा करता रहूँगा।"

सराय के मालिक की बेटी को जो यह सब छिप कर सुन रही थी उसे गुस्सा आ गया। सो जब उसके पिता ने उसको तहखाने से लाल शराब लाने के लिये भेजा तो उसने उस शराब की बोतल में एक मुट्ठी अफीम डाल दी।

खाना खा कर फिओरडीनैन्डो और उसका शिकारी साथी पुर्तगाल की रानी का इन्तजार करने शहर के दरवाजे के बाहर चल गये पर अचानक ही उन दोनों को बेहोशी सी आने लगी और वे जमीन पर गिर पड़े। और उनकी आँख लग गयी।

कुछ ही देर में रानी उधर आयी तो उसने फ़िओरडीनैन्डो को पहचान लिया। वह उसके ऊपर झुकी और उसका नाम ले कर पुकारा। उसने उसके ऊपर हाथ फेरा, हिलाया डुलाया, इधर उधर लुढ़काया पर वह नहीं जागा। तो उसने एक हीरे की अँगूठी अपनी उँगली से निकाल कर उसकी भौंह पर रख दी।

अब हुआ यह कि पास ही एक गुफा में एक साधु रहता था। उसने एक पेड़ के पीछे से यह सब देखा। जब रानी चली गयी तो वह दबे पाँव वहाँ तक गया और फ़िओरडीनैन्डो की भौंह पर से वह

हीरे की अँगूठी उठा ली और उसको ले कर अपनी गुफा में वापस चला गया।

जब फ़िओरडीनैन्डो की आँख खुली तो अँधेरा हो चुका था। उसको यह सोचने में कुछ देर लग गयी कि वह कहाँ था। फिर उसने अपने शिकारी साथी को हिला हिला कर जगाया।

दोनों ने उस लाल शराब को यह कह कर कोसा कि वह कितनी तेज़ थी और इस बात पर दुखी भी हुए कि वे रानी से नहीं मिल सके।

अगले दिन उन्होंने सराय के मालिक से कहा — "आज हमें सफेद शराब[49] देना और देखना कि वह बहुत तेज़ न हो।"

सराय के मालिक की बेटी ने उस दिन उस शराब में भी कुछ मिला दिया और वे दोनों फिर से घास के मैदान में जा कर खर्राटे भरने लगे।

पुर्तगाल की रानी ने उसे फिर से जगाने की कोशिश की पर उस दिन भी वह जब उसे न जगा सकी तो उसने अपने बालों का एक गुच्छा उसकी भौंह पर रख दिया और वहाँ से चली गयी।

साधु फिर अपनी गुफा से बाहर निकला और बालों का वह गुच्छा उठाया और अपनी गुफा में चला गया।

जब फ़िओरडीनैन्डो और शिकारी जागे तो आधी रात हो चुकी थी और उनको इस बात का पता ही नहीं चला कि वहाँ क्या हुआ

[49] White wine – another kind of popular wine of Italy

था। अब फ़िओरडीनैन्डो को इस गहरी नींद के बारे में कुछ शक हो गया कि हर शाम को वह क्यों सो जाता था।

आज रानी का पैरिस में आखिरी दिन था। कल वह पीटरबोरो चली जायेगी। उसके वहाँ जाने से पहले वह उससे किसी भी कीमत पर मिलना चाहता था।

सो आज उसने सराय के मालिक को कहा कि आज उसको शराब नहीं चाहिये वह उनको केवल खाना ही खिला दे। सो उस दिन सराय के मालिक की बेटी ने उनके सूप में कुछ मिला दिया।

जब वह खाना खा पी कर घास के मैदान में पहुँचा तभी से वह कुछ नींद सी महसूस कर रहा था।

उसने दो पिस्तौल निकालीं और अपने शिकारी साथी को दिखा कर बोला — "मुझे मालूम है कि तुम वफादार हो पर फिर भी मैं तुमको चेतावनी देता हूँ कि अगर आज तुम जगे नहीं रह सके और मुझे जगा कर नहीं रख सके तो बस तुम समझ लेना। मैं इन दोनों पिस्तौलों की सारी गोलियाँ तुम्हारे भेजे में उतार दूँगा।"

और उसके बाद फ़िओरडीनैन्डो लेट गया और खर्राटे भरने लगा। जागे रहने के लिये शिकारी बार बार अपने को नोचने लगा पर एक बार के और दूसरी बार के नोचने के बीच में उसकी भी आँख झपक जाती।

धीरे धीरे उसका नोचना भी बहुत धीमा होता गया और वह भी खर्राटे भरने लगा।

रानी वहाँ फिर आयी। वह फिर रोयी, उसने उसको अपने गले से लगाया, उसके चेहरे पर मारा, उसको चूमा, उसको हिलाया पर उसकी कितनी कोशिशों के बाद भी वह नहीं जागा।

जब वह उसको नहीं जगा पायी तो वह इतनी ज़ोर से रोने लगी कि आँसुओं की बजाय उसके गालों पर उसके खून की एक दो बूँद झलक आयीं।

उसने अपने रूमाल से अपना खून पोंछा और उसे फ़िओरडीनैन्डो के चेहरे पर रख दिया। फिर वह अपनी गाड़ी में बैठी और वहाँ से सीधी पीटरबोरो चली गयी।

हर बार की तरह से इस बार भी वह साधु अपनी गुफा से निकल कर आया, वह रूमाल उठाया और वहीं यह देखने के लिये खड़ा रहा कि देखूँ अब क्या होता है।

जब फ़िओरडीनैन्डो जागा तो आधी रात हो चुकी थी। सो उसने देखा कि रानी से मिलने का आज का आखिरी मौका भी उसके हाथ से निकल गया था।

उसने अपनी दोनों पिस्तौलें उठायीं और अपना कहा पूरा करने के लिये कि वह उन दोनों पिस्तौलों की सारी गोलियाँ उस शिकारी के सिर में उतार देगा उनका घोड़ा[50] खींचा ही था कि उस साधु ने उसका हाथ पकड़ लिया।

---

[50] Translated for the word “Trigger”

साधु बोला — "यह बेचारा तो बहुत ही मासूम है तुम इसको क्यों मारते हो। जुर्म तो सराय के मालिक की बेटी ने किया है। उसी ने तुम्हारी लाल शराब में, सफेद शराब में और सूप में नशे की दवा मिलायी।"

फ़िओरडीनैन्डो ने पूछा — "मगर वह ऐसा करेगी ही क्यों? और आप उसके बारे में इतना सब कैसे जानते हैं?"

"क्योंकि वह तुमसे प्यार करती है। उसी ने तुमको अफीम दी थी। मैं सब जानता हूँ। मैं पेड़ के पीछे से वह सब देखता रहा हूँ जो यहाँ होता रहा है। रानी भी यहाँ पिछले तीन दिन से आ रही थी और तुमको जगाने की कोशिश करती रही थी।

एक बार उसने अपनी हीरे की अँगूठी तुम्हारी भौंह पर रखी, दूसरी बार उसने अपने बालों का गुच्छा रखा और तीसरी बार खून के ऑसू वाला रूमाल रखा।"

"तो वे सब चीज़ें अब कहाँ हैं?"

"वे सब चीज़ें मेरे पास हैं। मैंने उनको सँभाल कर रख लिया है। यहाँ पर बहुत सारे चोर घूमते हैं वे उनको चुरा सकते थे। लो ये लो सँभालो उनको। क्योंकि तुमने तरीके से काम किया इसलिये वे तुम्हारे लिये अच्छे साबित होंगे।"

"अब मैं क्या करूँ?"

साधु बोला — "पुर्तगाल की रानी पीटरबोरो चली गयी है जहाँ वह एक टूर्नामेन्ट में इनाम में दी जायेगी।

एक नाइट[51] जो इस अँगूठी से, बालों के गुच्छे से और इस रूमाल से दूसरे नाइट को उसके घोड़े से उतारेगा वह जीत जायेगा और इस तरह उस रानी को जीत लेगा और उससे शादी कर लेगा।"

फ़िओरडीनैन्डो को दोबारा बताने की जरूरत नहीं थी। उसने रानी की वे तीनों चीज़ें उस साधु से ले लीं और पीटरबोरो की तरफ भाग लिया। वह वहाँ समय से पहुँच गया जहाँ वह उन नाइट्स के टूर्नामेन्ट में हिस्सा ले सका, पर किसी दूसरे नाम से।

सारी दुनियाँ से बहुत अच्छे अच्छे खिलाड़ी अपने अपने सामान, नौकर और हथियारों के साथ आये थे। शहर के बीचोबीच एक जगह बनायी गयी थी जहाँ यह टूर्नामेन्ट होने वाला था।

चारों तरफ देखने वालों के बैठने के लिये जगह बनी हुई थी। सारे नाइट्स रानी की तरफ निगाह लगाये हुए थे।

पहले दिन फ़िओरडीनैन्डो जीत गया। धन्यवाद उस हीरे की अँगूठी को जिसको उसने अपने भाले की नोक पर लगा लिया था।

दूसरे दिन भी फिओरडीनैन्डो जीत गया — बालों के गुच्छे को भाले की नोक पर लगाने की वजह से।

---

[51] A knight is a person granted an honorary title of knighthood by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. See its picture above.

तीसरे दिन भी वह जीत गया भाले पर रूमाल लगाने की वजह से।

सारे नाइट्स अपने अपने घोड़ों से गिर चुके थे। कोई भी नाइट अपने घोड़े पर नहीं था। और इस तरह फ़िओरडीनैन्डो रानी का पति घोषित कर दिया गया।

इसके बाद फ़िओरडीनैन्डो ने अपना हैलमैट खोला तब रानी जान पायी कि वह फिओरडीनैन्डो ही था। वह तो खुशी के मारे पागल ही हो गयी।

बड़ी शान से दोनों की शादी हुई। फिओरडीनैन्डो ने अपनी माँ और पिता को भी बुला भेजा। उन्होंने तो उसको मरा हुआ ही समझ लिया था और उसका दुख मना रहे थे पर उसको ज़िन्दा और खुश देख कर वे भी बहुत खुश हुए।

उसने अपनी दुलहिन को अपने माता पिता से मिलवाया और उनको बताया कि यह वही छोटा खरगोश है जो मुझे अपने पीछे भगा ले गया था। परदे वाली लड़की और पुर्तगाल की रानी जिसको मैंने बहुत बुरे जादू के फन्दे से आजाद किया है वह भी यही है और अब यह मेरी पत्नी है।"

उसके बाद सब लोग खुशी खुशी रहे।

6 एक बुढ़िया की खाल[52]

यह कुछ पुरानी बात है कि एक देश में एक राजा राज करता था। उसके तीन बेटियाँ थीं।

एक बार वह एक मेले में जा रहा था तो जाने से पहले उसने अपनी तीनों बेटियों से पूछा कि वह मेले से उनके लिये क्या ले कर आये।

उसकी सबसे बड़ी बेटी बोली कि उसको एक रूमाल चाहिये। उसकी दूसरी बेटी बोली कि उसको बहुत बढ़िया जूता चाहिये। उसकी तीसरी और सबसे छोटी बेटी बोली कि उसको एक डिब्बा नमक चाहिये।

दोनों बड़ी बहिनें अपनी सबसे छोटी बहिन से बहुत जलती थीं सो उन्होंने अपने पिता से कहा — "पिता जी आपको पता है कि यह बेवकूफ लड़की आपसे नमक क्यों मॅगवा रही है? क्योंकि यह आपका अचार डालना चाहती है।"

पिता बोला "अच्छा तो वह मेरा अचार बनाना चाहती है। क्या सचमुच में? ठीक है। अगर इसका ऐसा ही इरादा है तो मैं इसको बाहर निकाल दूँगा।"

[52] The Old Woman's Hide. Tale No 70. A folktale from Italy from its Montale area.

और उसने उसको एक दासी के साथ एक सोने के सिक्कों का बटुआ दे कर बाहर निकाल दिया। सारे आदमी और नौजवान तो नौजवान लड़कियों को तंग करने वाले होते ही हैं सो उस बेचारी लड़की को यही पता नहीं था कि वह जाये कहाँ।

वे दोनों एक कब्रिस्तान से गुजर रहे थे कि दासी ने देखा कि एक सौ साल की बुढ़िया अभी अभी मरी थी और लोग उसको वहाँ दफ़ना रहे थे। उसको देख कर दासी को एक विचार आया।

दासी कब्र खोदने वाले के पास गयी और उससे पूछा — "क्या तुम हमको इस बुढ़िया की खाल बेचोगे?"

कब्र खोदने वाला बोला "यह मैं कैसे कर सकता हूँ?"

काफी पीछे पड़ने के बाद वह उस बुढ़िया की खाल उनको बेचने पर राजी हो गया। उसने चाकू लिया, उस बुढ़िया की खाल निकाली और उसके चेहरे, सफेद बाल, उँगलियों और नाखूनों के साथ उसकी पूरी खाल उसने उन लोगों को बेच दी।

दासी ने उस खाल का चमड़ा बनाया उसको कपड़े की तरह से सिला और उसको उस लड़की को पहना दिया। उस खाल को पहन कर वह लड़की अब बिल्कुल बुढ़िया लगती थी पर...

अब लोग उस बुढ़िया को देखते नहीं थकते थे। क्यों? क्योंकि इतनी बुढ़िया होने के बावजूद उसकी आवाज घंटी की तरह साफ थी।

अब उनको किससे मिलना था – राजा के बेटे से। सो वे दोनों एक ऐसे राजा के महल में गयीं जिसके एक ही बेटा था। जब वे राजा के बेटे से मिली तो उसने दासी से पूछा — “यह तो बताओ कि वह बुढ़िया कितनी बूढ़ी है।”

दासी बोली — “यह आप उसी से पूछ लीजिये न।”

राजकुमार ने उस लड़की से पूछा — “दादी, क्या आप मेरी बात सुन सकती हैं? आपकी क्या उम्र होगी?”

लड़की ने हॅस कर जवाब दिया — “मेरी उम्र एक सौ पन्द्रह साल की है।”

“ओह मेरे भगवान। और आप आयीं कहॉ से हैं?”

“अपने शहर से।”

“आपके माता पिता कौन थे?”

“मैं अपनी माता पिता खुद ही हॅू।”

“और आप करती क्या हैं?”

“कुछ नहीं, बस आनन्द करती हॅू।”

राजकुमार को यह सब सुन कर बहुत मजा आया। उसने राजा और रानी से कहा — “पिता जी हम इस बुढ़िया को अपने महल ले चलते हैं। जब तक यह ज़िन्दा रहेगी तब तक यह हमारा दिल बहलाती रहेगी।”

दासी ने उस लड़की को महल में छोड़ दिया और वहाँ से चली गयी। वहाँ उन्होंने उस बुढ़िया को सबसे नीचे वाले छज्जे पर एक कमरा दे दिया और वह लड़की वहाँ रहने लगी।

अब जब भी वह राजकुमार खाली होता और अपना दिल बहलाना चाहता तो वह उस बुढ़िया के पास पहुँच जाता, उससे बातें करता और उसकी उलटी सीधी बातों पर हँसता।

उन्होंने उस लड़की को उसकी बूढ़ी आँखों की वजह से "सड़ी हुई आँखों वाली" नाम दे दिया।

एक दिन रानी ने उस "सड़ी हुई आँखों वाली" से कहा — "कितनी बुरी बात है कि तुम अपनी इन धुँधली आँखों से कुछ भी नहीं कर सकतीं।"

सड़ी आँखों वाली ने जवाब दिया — "पर मैं एक लड़की की तरह से धागा कात सकती हूँ।"

इस पर रानी बोली — "तो लो यह थोड़ी सी अलसी[53] की रुई लो और इसको कात कर देखो – बस समय गुजारने के लिये और कुछ करने के लिये। कोई खास बात नहीं अगर न भी कर सको तो।"

[53] Translated for the word "Linseed or Flaxseed". See its picture above.

जैसे ही रानी वहाँ से गयी और वह लड़की अपने कमरे में अकेली रह गयी तो उसने अपना दरवाजा बन्द किया और अपनी बुढ़िया वाली खाल उतार दी।

फिर उसने उस अलसी की रुई का इतना बढ़िया धागा काता जैसा कि कभी किसी ने देखा भी नहीं होगा।

उस धागे को देख कर राजा, रानी, राजकुमार और सारे दरबारी आश्चर्यचकित रह गये कि उस बुढ़िया ने जो हमेशा हिलती रहती थी और आधी अन्धी थी उस उम्र में भी उसने इतना बढ़िया धागा काता।

अब रानी ने उसको एक कपड़ा दिया और उससे कहा कि वह उसका एक ब्लाउज़ बनाये। अगर वह आसानी से बना सकती है तभी बनाये और नहीं बना पाये तो कोई बात नहीं। उसके लिये उसको चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं।

फिर वह जैसे ही अपने कमरे में अकेली हुई उसने कपड़ा काटा और उसका एक ब्लाउज़ सिल दिया।

फिर उसने उस पर आगे की तरफ बहुत ही सुन्दर और बारीक सुनहरे फूलों वाली कढ़ाई कर दी। लोगों को तो पता नहीं चला कि वह उसके बारे में क्या सोचें पर राजकुमार को कुछ शक हो गया।

अगली बार जब उस बुढ़िया ने दरवाजा बन्द किया तो राजकुमार ने सोचा कि वह उसका भेद पता लगा कर ही रहेगा।

सो जब उस बुढ़िया ने अपने कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया तो राजकुमार ने उस कमरे के चाभी के छेद से उसके अन्दर झाँका तो लो उसने क्या देखा कि उस बुढ़िया ने अपनी बुढ़िया वाली खाल उतारी और वहाँ तो बहुत सुन्दर सूरज की तरह चमकती हुई एक नौजवान लड़की खड़ी थी।

यह देख कर राजकुमार ने तुरन्त ही वह दरवाजा तोड़ दिया और अन्दर जा कर उस लड़की को गले लगा लिया। अचानक इस सबको देख कर वह लड़की चौंक गयी और कुछ झिझक भी गयी। उसने अपने आपको ढकने की बहुत कोशिश की पर सब बेकार।

राजकुमार ने पूछा — "तुम कौन हो और तुमने इस तरह से अपना वेश क्यों बदल रखा है?"

तब उस लड़की ने उसको अपनी कहानी सुनायी और कहा कि वह भी उसी की तरह एक राजा की बेटी है और उसके पिता ने उसको महल से बाहर निकाल दिया है।

राजकुमार तुरन्त ही अपने माता पिता के पास गया और बोला — "माँ, पिता जी, मैंने शादी के लिये एक राजा की बेटी ढूँढ ली है और अब मैं उससे शादी करने वाला हूँ।"

बस शादी की तैयारियाँ होने लगीं। आस पड़ोस के सारे राजा और रानियाँ शादी में बुलाये गये। इनमें लड़की के पिता को भी बुलाया गया पर वह अपनी बेटी को परदे के पीछे और ताज पहने देख कर पहचान नहीं सका।

लड़की ने अपने पिता के लिये खास तरीके से अलग खाना बनवाया। उसमें नमक नहीं था।

सूप लाया गया और सब लोगों ने पिया और उसकी बहुत तारीफ की पर उसके पिता ने वह सूप केवल एक चम्मच ही पिया और उसने अपनी चम्मच नीचे रख दी।

उसके बाद उबला हुआ माँस आया पर उस लड़की के पिता ने उसमें से बस ज़रा सा ही चखा। बाद में उससे वह खाया ही नहीं गया। उसके बाद मछली परसी गयी तो अबकी बार उस लड़की के पिता ने उसे छुआ तक नहीं।

लोगों ने जब देखा कि लड़की का पिता तो कुछ खा ही नहीं रहा है तो उससे पूछा कि क्या उसको खाना अच्छा नहीं लगा। इस पर उसने कहा नहीं ऐसा नहीं है बस उसको कुछ भूख ही नहीं थी।

उसके बाद भुना हुआ माँस परसा गया तो उसको वह इतना अच्छा लगा कि उसने वह अपने हाथ से तीन बार लिया।

तब उसकी बेटी ने उससे पूछा कि उसने दूसरी चीज़ें क्यों नहीं छुई और यह भुना हुआ माँस ही क्यों इतना पसन्द किया।

वह बोला — “मुझे पता नहीं पर यह भुना हुआ माँस तो सचमुच में बहुत स्वादिष्ट था और बाकी चीज़ें सब बहुत ही बेस्वाद थीं।”

लड़की बोली — “अब देखा आपने पिता जी कि बिना नमक के खाना कितना बेस्वाद होता है। पहले जो चीज़ें आपको परोसी

गयीं थीं उनमें किसी भी चीज़ में नमक नहीं था इसी लिये वे सब आपको बेस्वाद लगीं। और इस भुने हुए माँस में नमक था इसी लिये आपको यह इतना स्वाद लगा कि आप इसको अपने हाथ से तीन बार ले कर खा गये।

इसी लिये जब आप मेले जा रहे थे तो मैंने आपसे नमक मँगवाया था। पर मेरी उन दोनों नीच बहिनों ने आपसे यह कह दिया कि मैंने वह नमक आपका अचार डालने के लिये मँगवाया था और आपने उनके कहने पर मुझको घर से बाहर निकाल दिया।

पिता जी ज़रा सोचिये क्या में आपका अचार डाल सकती थी और क्या नमक केवल अचार में ही इस्तेमाल होता है?"

यह सुन कर पिता ने अपनी छोटी बेटी को पहचान लिया। उसको उस जगह देख कर उसको बहुत खुशी हुई।

पिता ने फिर अपनी बेटी को गले से लगा कर उससे माफी माँगी और उन दोनों बड़ी बेटियों को उनके इस नीच काम की कड़ी सजा दी।

7 औलिव[54]

एक बार एक अमीर ज्यू की पत्नी अपनी बच्ची को जन्म देते ही मर गयी सो उस ज्यू को अपनी नयी पैदा हुई बच्ची को पालने पोसने के लिये एक किसान के पास छोड़ना पड़ा। यह किसान एक ईसाई था।

पहले तो वह किसान इस बोझ को उठाना नहीं चाहता था। उसने कहा — "मेरे अपने बच्चे हैं और मैं आपकी बच्ची को हिब्रू[55] रीति रिवाजों के अनुसार नहीं पाल सकता।

क्योंकि वह हमेशा मेरे बच्चों के साथ रहेगी और हम लोग तो ईसाई हैं तो उनके साथ रहते रहते वह ईसाई रीति रिवाजों को अपना ही लेगी और वह आपको अच्छा नहीं लगेगा।"

ज्यू बोला — "कोई बात नहीं। पर बस तुम मेरे ऊपर इतनी मेहरबानी कर दो कि इसको पाल लो। मैं तुमको इसका बदला जरूर दूँगा।

अगर मैं इसको इसकी दस साल की उम्र होने तक लेने के लिये नहीं आया तो तुम इसके साथ जैसा चाहो वैसा करना। क्योंकि इसका मतलब यह होगा कि शायद मैं फिर कभी न आ पाऊँगा। फिर यह बच्ची हमेशा के लिये तुम्हारे पास ही रहेगी।"

---

[54] Olive. Tale No 71. A folktale from Montale Pistoiese area, Italy, Europe.

[55] Hebrew customs and traditions

इस तरह उस ज्यू और उस किसान में यह समझौता हो गया कि वह अपनी बेटी को अगर दस साल की होने तक न ले जाये तो वह उसके साथ जो चाहे करे और वह बच्ची भी फिर उसी के पास रहेगी।

इसके बाद वह ज्यू उस बच्ची को उस किसान के पास छोड़ कर दूर देशों की यात्रा पर अपने काम पर निकल पड़ा।

बच्ची उस किसान की पत्नी की देख रेख में बड़ी होने लगी। वह लड़की इतनी सुन्दर और अच्छी थी कि वह उस किसान को ऐसी लगती थी जैसे वह उसकी अपनी बेटी हो।

बच्ची बड़ी होने लगी, वह चलने लगी, फिर वह दूसरे बच्चों के साथ खेलने लगी और फिर जैसी जैसी उसकी उम्र होती गयी वह वैसा वैसा ही काम भी करने लगी। पर किसी ने भी कभी उसको ईसाई धर्म के बारे में नहीं बताया।

उसने हर आदमी को अपनी अपनी प्रार्थना करते सुना पर उसको यह नहीं पता था कि वे लोग किस धर्म की प्रार्थना करते थे। जब तक वह नौ साल की हुई तब तक वह इन सब बातों से बिल्कुल ही अनजान रही।

जब वह दस साल की हुई तो वह किसान और उसकी पत्नी यह आशा करते रहे कि बस अब किसी भी दिन वह ज्यू अपनी बेटी को लेने के लिये आने वाला होगा।

फिर उसका ग्यारहवाँ साल भी निकल गया, बारहवाँ भी, तेरहवाँ भी और चौदहवाँ भी पर वह ज्यू नहीं आया। अब किसान को लगने लगा कि शायद वह मर गया और अब वह कभी अपनी बेटी को लेने नहीं आयेगा।

वह अपनी पत्नी से बोला — "हम लोगों ने काफी इन्तजार कर लिया अब हम इस बच्ची को बैप्टाइज़[56] करा देते हैं।"

सो उन्होंने उसको बड़ी धूमधाम से बैप्टाइज़ करा दिया और ईसाई बना दिया। सारे शहर को बुलाया गया था। उन्होंने उसका नाम औलिव[57] रख दिया। फिर उसको उन्होंने स्कूल भेज दिया ताकि वह वहाँ पढ़ने लिखने के साथ साथ कुछ लड़कियों वाली बातें भी सीख सके।

जब औलिव अठारह साल की हुई तो वह वाकई में एक बहुत ही अच्छी लड़की बन चुकी थी। उसको सब तौर तरीके आ गये थे और वह बहत सुन्दर भी हो गयी थी। सब उसको बहुत प्यार करते थे।

किसान और उसकी पत्नी भी उसको देख कर बहुत खुश थे और उनके दिमाग में बहुत शान्ति थी कि बच्ची बहुत ही अच्छी बढ़ रही थी। कि एक दिन उनके दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी और उन्होंने देखा कि वहाँ तो वह ज्यू खड़ा था।

---

[56] Baptize – a Christian ceremony where the child officially becomes Christian. In this ceremony either the child is immersed in water, or water is sprinkled over his/her head, water is poured over him/her.
[57] Olive – name of the Jew girl

वह बोला — "मैं अपनी बेटी को लेने आया हूँ।"

यह सुनते ही माँ चिल्लायी "क्या? तुम तो यह कह कर गये थे कि अगर तुम दस साल तक नहीं आये तो इसका हम जो चाहे वह कर सकते हैं और फिर यह हमारे पास रहेगी।

इसलिये तबसे यह अब हमारी बेटी है। अब तो यह अठारह साल की भी हो गयी है अब तुम्हारा इसके ऊपर क्या अधिकार है। हमने इसको बैप्टाइज़ भी करा दिया है और औलिव अब एक ईसाई लड़की है।"

ज्यू बोला — "इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। यह ईसाई हो या हिब्रू पर बेटी यह मेरी है। मैं इससे पहले आ नहीं सका क्योंकि मैं बस आ ही नहीं सकता था पर यह बेटी मेरी है और अब मैं इसको लेने के लिये आया हूँ।"

सारा परिवार एक आवाज में चिल्लाया — "पर हम उसको तुमको नहीं देंगे। यह निश्चित है।"

काफी लड़ाई झगड़ा हुआ तो ज्यू यह मामला कचहरी में ले कर गया। कचहरी ने उसको लड़की को ले कर जाने की इजाज़त दे दी क्योंकि आखिर वह बेटी तो उसी की थी।

अब उस गरीब किसान और उसके परिवार के पास और कोई चारा नहीं था कि वह कचहरी की बात माने। वे सब खूब रोये और सबसे ज़्यादा तो औलिव ही रोयी क्योंकि अपने असली पिता को तो

वह जानती तक नहीं थी और अब उसको एक दूसरे आदमी के साथ जाना पड़ रहा था।

रोते रोते वह उन अच्छे लोगों को छोड़ कर जिन्होंने उसको इतने दिनों तक इतने प्यार से पाला पोसा अपने असली पिता के पास चली गयी।

उसको विदा करते समय उसकी माँ ने "औफिस औफ द ब्लैस्ड वरजिन"[58] की एक किताब उसको दी और कहा कि वह यह कभी न भूले कि वह एक ईसाई है। और इसके बाद वह लड़की चली गयी।

जब वे घर पहुँचे तो उस ज्यू ने औलिव से सबसे पहली बात तो यह कही — "हम लोग ज्यू हैं और तुम भी। तुम अब वैसा ही करोगी जैसा हम करते हैं। अगर मैंने तुमको कभी भी वह किताब पढ़ते हुए देख लिया जो तुमको उस औरत ने दी है तो बस भगवान ही तुम्हारी सहायता करे।

पहली बार तो मैं उसको आग में फेंक दूँगा और तुम्हारी पिटाई करूँगा। और अगर दूसरी बार मैंने तुमको उसको पढ़ते देख लिया तो तुम्हारे हाथ काट डालूँगा और तुमको घर से बाहर निकाल दूँगा।

इसलिये ख्याल रखना कि तुम क्या कर रही हो क्योंकि जो मैंने तुमसे कहा है मैं वही करूँगा इसमें कोई शक नहीं है।"

[58] A copy of the "Office of the Blessed Virgin" – a special type of religious book in Christians

जब औलिव को इस तरह की धमकी मिली तो वह बेचारी क्या करती। वह बाहर से तो यही दिखाती रही कि वह ज्यू थी पर अन्दर अपने कमरा को ताला लगा कर वह "औफिस औफ़ लिटैनीज़ औफ ब्लैस्ड वरजिन" पढ़ती।

जिस समय वह यह किताब पढ़ती उस समय उसकी वफादार नौकरानी बाहर पहरा देती रहती कि कहीं ऐसा न हो कि उसका पिता उसको वह सब पढ़ते देख ले।

पर उसकी सारी सावधानी बेकार गयी क्योंकि एक दिन उस ज्यू ने उसको अनजाने में पकड़ लिया। एक बार जब वह घुटनों के बल झुक रही थी और वह किताब पढ़ रही थी उसके पिता ने उसे देख लिया।

बस उसने गुस्से में आ कर उससे वह किताब छीन ली और उसको आग में फेंक दिया और फिर उसको बहुत बेरहमी से मारा भी।

पर इससे औलिव ने हिम्मत नहीं हारी। उसने अपनी नौकरानी को बाजार भेज कर वैसी ही एक और किताब मॅगवा ली और उसको पढ़ना शुरू कर दिया।

पर इस घटना के बाद से ज्यू को शक हो गया था सो वह भी उसके ऊपर बराबर नजर रखे हुए था। आखिर उसने उसको फिर से पकड़ लिया।

इस बार बिना कुछ बोले वह उसको एक बढ़ई का काम करने वाले की जगह ले गया और वहाँ उससे उसकी मेज पर हाथ फैलाने के लिये कहा।

फिर उसने एक तेज़ चाकू लिया और उससे उसके दोनों हाथ काट डाले और उसको एक जंगल में ले जा कर छोड़ आने के लिये कहा।

वहाँ वह लड़की बेचारी मरे हुए से भी ज़्यादा बुरी हालत में पड़ी रही। और अब जब उसके हाथ ही नहीं थे तो वह कर भी क्या सकती थी।

वह वहाँ से उठी और उठ कर चल दी। चलते चलते वह एक बहुत बड़े महल के पास आ निकली। पहले तो उसने सोचा कि वह उस महल के अन्दर जाये और कुछ भीख माँगे पर उसने देखा कि उस महल के चारों तरफ तो एक चहारदीवारी खिंची हुई है और उसमें कोई दरवाजा नहीं है।

पर उसने देखा कि उस महल की चहारदीवारी के अन्दर एक बहुत सुन्दर बागीचा था। इधर उधर देखने पर उसे चहारदीवारी के ऊपर से झाँकता हुआ एक नाशपाती का पेड़ दिखायी दे गया जिस पर पकी हुई पीली पीली नाशपाती लदी हुई थीं।

उसके मुँह से निकला "काश मुझे उनमें से एक नाशपाती मिल जाती। क्या कोई ऐसा रास्ता है जिससे उन तक पहुँचा जा सके?"

उसके मुँह से अभी ये शब्द निकले ही थे कि वह दीवार फट गयी और उस नाशपाती के पेड़ की शाखें नीचे झुक गयीं।

वह शाखें इतनी नीचे झुक गयीं कि औलिव जिसके हाथ ही नहीं थे उन शाखों पर लगी नाशपातियों को अपने मुँह में पकड़ कर खा सकती थी। जब उन नाशपातियों को खा कर उसका पेट भर गया तो वह पेड़ फिर से ऊँचा हो गया और दीवार भी बन्द हो गयी।

औलिव फिर से जंगल में चली गयी। अब उसको नाशपातियों का भेद पता चल गया था। सो अब वह रोज ग्यारह बजे उस नाशपाती के पेड़ के पास आती और खूब फल खाती और रात बिताने के लिये जंगल वापस लौट जाती।

ये नाशपातियाँ बहुत बढ़िया रसीली और पकी हुई थीं। एक सुबह उस राजा ने जो उस महल में रहता था नाशपाती खाने की सोची तो उसने अपने नौकर को कुछ नाशपातियाँ लाने के लिये बागीचे में भेजा।

नौकर कुछ दुखी सा लौट कर आया और उसने आ कर राजा को बताया — "मैजेस्टी, ऐसा लगता है कि कोई जानवर इन नाशपातियों को उनके बीज की जगह तक खा रहा है।"

"ऐसा कौन हो सकता है उसको पकड़ने की कोशिश करो।"

राजा ने उस नाशपाती के पेड़ के पास पेड़ की डंडियों से एक झोंपड़ी बनवायी और रोज रात को वह उसमें लेट कर नाशपाती के चोर को पकड़ने के लिये पहरा देता रहा।

पर इस तरह से तो उसकी नींद भी खराब होती रही और चोर भी नहीं पकड़ा गया और नाशपातियाँ भी कोई कुतरता ही रहा। क्योंकि वह चोर रात में तो आता नहीं था।

तो उसने दिन में पहरा देने का विचार किया। ग्यारह बजे उसने दीवार खुलती देखी। नाशपाती का पेड़ झुकते देखा और किसी लड़की को नाशपाती खाते देखा। औलिव ने पहले एक नाशपाती खायी, फिर दूसरी, फिर तीसरी... ।

राजा ने जो गोली चलाने को तैयार था यह सब देख कर आश्चर्य में अपनी बन्दूक नीचे रख दी। वह तो बस नाशपाती खाती हुई उस लड़की को ही देखता रह गया।

नाशपाती खा कर वह दीवार के बाहर गायब हो गयी थी। उसके जाते ही दीवार भी बन्द हो गयी थी।

उसने अपने नौकरों को तुरन्त ही बुलाया और उनको उस लड़की के पीछे भागने के लिये और उसको उसके पास लाने के लिये कहा।

उसके पीछे भागते भागते वे जंगल में पहुँच गये और वहाँ वह लड़की उनको एक पेड़ के नीचे सोती मिल गयी। वे उसको पकड़ कर राजा के पास ले आये।

राजा ने उससे पूछा — "तुम कौन हो और यहॉ क्या कर रही हो? और मेरी नाशपाती चुराने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?"

जवाब में लड़की ने अपने दोनों हाथ आगे कर दिये।

उन हाथों को देख कर राजा के मुॅह से निकला — "उफ बेचारी। ऐसा कौन बेरहम आदमी है जिसने तुम्हारे साथ ऐसा किया?"

इस पर उस लड़की ने उसको अपनी पूरी कहानी सुना दी। राजा बोला — "मुझे अब अपनी नाशपाती की चिन्ता नहीं है पर मुझे अब तुम्हारी चिन्ता है। चलो तुम मेरे साथ चल कर रहो। मेरी रानी मॉ तुमको जरूर ही रख लेंगी और तुम्हारी ठीक से देखभाल भी करेंगी।"

सो औलिव राजा के साथ चली गयी और राजा ने उसको अपनी मॉ से मिलवाया। पर राजा ने मॉ से न तो नाशपाती का जिक्र किया और न ही पेड़ के झुकने का और न ही दीवार के अपने आप खुलने बन्द होने का ही कोई जिक्र किया।

उसको लगा कि उसकी मॉ कहीं उस लड़की को जादूगरनी[59] न समझ ले और उसे बाहर न निकाल दे या उससे कहीं नफरत न करने लगे।

रानी ने औलिव को अपने घर में रखने से इनकार तो नहीं किया पर उसको रखने में कोई रुचि भी नहीं दिखायी। वह उसको बहुत

[59] Translated for the word "Witch"

थोड़ा सा खाना देती थी। वह भी इसलिये कि राजा उस बिना हाथ वाली लड़की की सुन्दरता की वजह से उसकी तरफ बहुत ज़्यादा आकर्षित था।

उस लड़की के बारे में वह राजा क्या सोचता था उन सब विचारों को उसके दिमाग से निकालने के लिये एक दिन माँ ने अपने बेटे से कहा — "तुम अगर चाहो तो तुमको और कितनी भी सुन्दर सुन्दर राजकुमारियाँ मिल जायेंगीं।

तुम नौकर, घोड़े और पैसा लो और चारों तरफ घूम कर आओ मुझे यकीन है कि तुमको जरूर ही अपनी पसन्द की कोई न कोई राजकुमारी मिल जायेगी।"

माँ की बात मान कर राजा ने नौकर घोड़े और पैसे लिये और चल दिया राजकुमारी को ढूँढने। वह कई देशों में घूमा।

छह महीने बाद जब वह घर लौट कर आया तो माँ से बोला — "तुम ठीक कहती थी माँ। दुनियाँ में राजकुमारियाँ तो बहुत हैं पर तुम मुझसे नाराज न होना माँ, लेकिन औलिव जैसी दयालु और सुन्दर राजकुमारी इस दुनियाँ में और कोई नहीं है। इसलिये मैंने फैसला किया है कि मैं शादी करूँगा तो औलिव से ही करूँगा।"

माँ चिल्लायी — "क्या? जंगल से लायी गयी एक बिना हाथ वाली लड़की से तुम शादी करोगे? तुम उसके बारे में कुछ जानते भी तो नहीं। क्या तुम अपने आपको इस तरह से बदनाम करोगे?"

पर उसने मॉ की बात बिल्कुल नहीं सुनी और उससे तुरन्त ही शादी कर ली। रानी मॉ के लिये एक बिना जान पहचान की लड़की को अपनी बहू बना कर घर ले आना बहुत बड़ी बात थी जिसे वह सहन न कर सकी।

वह औलिव के साथ हमेशा ही बहुत बुरा बर्ताव करती थी पर यह भी ध्यान रखती कि वह राजा के सामने उसके साथ वैसा बर्ताव न करे ताकि कहीं ऐसा न हो कि राजा नाखुश हो जाये। पर औलिव ने राजा की मॉ के खिलाफ राजा से कभी कुछ नहीं कहा।

इसी बीच औलिव को बच्चे की आशा हो आयी। यह जान कर राजा को बड़ी खुशी हुई। पर इत्तफाक से उसी समय उसके एक पड़ोसी देश के राजा ने उसके राज्य के ऊपर हमला कर दिया तो उसको अपने देश की रक्षा के लिये उससे लड़ने जाना पड़ा।

जाने से पहले वह औलिव को अपनी मॉ को सौंपना चाहता था पर रानी मॉ ने कहा — "मैं यह जिम्मेदारी नहीं ले सकती क्योंकि मैं तो खुद ही यह महल छोड़ कर कौनवैन्ट[60] जा रही हूॅ।"

इसलिये औलिव को उस महल में अकेले ही रहना पड़ा। सो राजा ने उससे उसको रोज एक चिट्ठी लिखने के लिये कहा।

और इस तरह राजा लड़ाई पर चला गया, रानी मॉ कौनवैन्ट चली गयी और औलिव नौकरों के साथ महल में अकेली रह गयी।

---

[60] Convent – the building or buildings occupied by such a society; a monastery or nunnery.

रोज एक आदमी औलिव की चिट्ठी ले कर महल से राजा के पास जाता था। इस बीच औलिव ने दो बच्चों को जन्म दिया।

उसी समय रानी माँ की एक बूढ़ी चाची रानी माँ को महल की खबर देने के लिये कौनवैन्ट गयी। यह जान कर कि औलिव ने दो बच्चों को जन्म दिया है रानी माँ कौनवैन्ट छोड़ कर महल वापस लौट आयी। उसका कहना था कि वह अपनी बहू की सहायता करने महल वापस आ रही थी।

उसने चौकीदारों को बुलाया और जबरदस्ती औलिव को बिस्तर से उठाया, उसके दोनों हाथों में एक एक बच्चा दिया और उन चौकीदारों से कहा कि वे उसको जंगल में वहीं छोड़ आयें जहाँ राजा ने उसको पाया था।

उसने चौकीदारों से कहा — "इसको भूखा मरने के लिये वहीं छोड़ देना। अगर तुम लोग मेरा हुक्म नहीं मानोगे और इस बारे में एक शब्द भी किसी और से कुछ भी कहोगे तो तुम्हारे सिर काट दिये जायेंगे।"

उसके बाद उसने राजा को लिख दिया कि उसकी पत्नी बच्चों को जन्म देते समय मर गयी और साथ में बच्चे भी मर गये।

राजा उसके झूठ पर विश्वास कर ले इसके लिये उसने तीन मोम के पुतले बनवाये और बड़ी शान से शाही चैपल[61] में उनका अन्तिम संस्कार किया और उनको दफन कर दिया।

[61] Royal Chapel – a private or subordinate place of prayer or worship; oratory.

इस रस्म के लिये उसने काले कपड़े भी पहने और बहुत रोयी भी। उधर राजा भी न तो अपनी लड़ाई से इस बदकिस्मत घटना के लिये घर आ सका और न ही वह इस सब में अपनी माँ का कोई झूठ देख सका।

X X X X X X X

अब हम औलिव के पास चलते हैं। वह बेचारी बिना हाथ की अपने दोनों बच्चों को लिये बीच जंगल में भूखी प्यासी पड़ी थी। वह किसी तरह से अपने दोनों बच्चों को लिये हुए एक ऐसी जगह आ गयी जहाँ एक पानी का तालाब था और वहाँ एक बुढ़िया कपड़े धो रही थी।

औलिव बोली — "माँ जी, मेहरबानी कर के अपने एक पानी से भरे कपड़े को मेरे मुँह में निचोड़ दीजिये। मुझे बहुत प्यास लगी है।"

उस बुढ़िया ने जवाब दिया — "नहीं मैं तुमको पानी नहीं पिलाऊँगी। तुम खुद अपना सिर इस तालाब में झुकाओ और अपने आप पानी पियो।"

"पर क्या आप देख नहीं रहीं कि मेरे हाथ नहीं हैं और मुझे अपने बच्चों को भी अपनी बाँहों में पकड़ना है?"

"कोई बात नहीं। कोशिश तो करो।"

सो औलिव घुटनों के बल झुकी पर जैसे ही वह पानी पीने के लिये तालाब के ऊपर झुकी उसकी दोनों बॉहों से उसके एक के बाद एक दोनों बच्चे फिसल गये और पानी में गायब हो गये।

"ओह मेरे बच्चे, ओह मेरे बच्चे। मेरी सहायता करो मेरे बच्चे डूब रहे हैं।" पर वह बुढ़िया तो हिल कर भी नहीं दी।

वह बोली — "तुम डरो नहीं, वे डूबेंगे नहीं, तुम उनको निकाल कर देखो।"

"पर यह मैं कैसे करूँ मेरे तो हाथ ही नहीं हैं।"

"अपनी बॉहों को तुम पानी में डालो तो।"

औलिव ने अपनी बिना हाथ की बॉहें पानी में डालीं तो उसको लगा कि उसकी बॉहें तो बढ़ रहीं हैं और उसके हाथ फिर से आ गये हैं। अपने उन हाथों से उसने अपने बच्चे पकड़ लिये और उनको सुरक्षित पानी से बाहर निकाल लिया।

वह बुढ़िया बोली — "अब तुम अपने रास्ते जा सकती हो। अब तुम्हारे पास अपना काम करने के लिये हाथों की कोई कमी नहीं है। बाई।"

इससे पहले कि औलिव उसको धन्यवाद देती वह बुढ़िया तो वहॉ से गायब हो चुकी थी।

शरण की खोज में जंगल में घूमती हुई औलिव अब एक नये घर में आ गयी थी। उस घर का दरवाजा खुला पड़ा था सो वह शरण मॉगने के लिये उस घर के अन्दर चली गयी।

अन्दर जा कर उसने देखा कि घर तो खाली पड़ा था। वहाँ कोई नहीं था और एक चूल्हे के ऊपर एक बर्तन में दलिया उबल रहा था। वहीं पास में कुछ और खाने का सामान भी रखा हुआ था।

सो औलिव ने पहले अपने बच्चों को खाना खिलाया फिर खुद खाया। फिर वह एक कमरे में गयी जहाँ एक बिस्तर लगा हुआ था और दो पालने रखे थे। उसने अपने बच्चों को पालने में सुलाया और वह खुद उस बिस्तर पर लेट गयी और सो गयी।

वह उस मकान में बिना किसी को देखे और बिना किसी चीज़ की जरूरत महसूस करते हुए रहती रही। उसको वहाँ सब कुछ अपने आप ही मिल रहा था।

XXXXXXX

अब हम राजा के पास चलते हैं। राजा की लड़ाई खत्म हो गयी थी। वह घर लौटा तो उसने देखा कि सारा शहर तो दुख मना रहा है। उसकी माँ ने उसकी पत्नी और उसके दो बच्चों की मौत पर उसको तसल्ली देने की बहुत कोशिश की पर जैसे जैसे समय बीतता गया वह औलिव की कमी से और ज़्यादा दुखी होता गया।

एक दिन अपना दिल बहलाने के लिये उसने शिकार पर जाने का इरादा किया। वह शिकार के लिये जंगल पहुँचा ही था कि कुछ

देर बाद तूफान आ गया और वह तूफान से बचने के लिये कोई जगह ढूँढने लगा।

तूफान बहुत तेज़ था। राजा ने सोचा — "इस तूफान में तो मैं मर ही जाऊँगा और फिर बिना औलिव के मैं जी कर करूँगा भी क्या सो अगर में मर भी जाऊँ तो क्या है।"

वह यह सब कह ही रहा था कि उसको दूर कहीं बड़ी धुँधली सी रोशनी चमकती दिखायी पड़ी सो वह शरण पाने की उम्मीद में उधर ही चल पड़ा। चलते चलते वह एक घर के सामने आ गया। वहाँ आ कर उसने उस घर का दरवाजा खटखटाया तो औलिव ने दरवाजा खोला।

राजा ने औलिव को पहचाना नहीं और औलिव भी कुछ बोली नहीं। वह राजा को अन्दर ले गयी और आग के पास बिठाया। फिर औलिव और बच्चे उसका दिल बहलाने के लिये उसके साथ खेलते रहे।

राज औलिव को देखता रहा कि उस लड़की की शक्ल औलिव से कितनी मिलती जुलती थी पर यह देख कर कि इसके हाथ तो बिल्कुल सामान्य थे उसने अपना सिर ना में हिलाया कि नहीं यह नहीं हो सकता यह औलिव नहीं हो सकती।

बच्चे उसके चारों तरफ खेल कूद रहे थे। उनकी तरफ प्यार से देखते हुए वह बोला — "अगर आज मेरे बच्चे ज़िन्दा होते तो वे

भी ऐसे ही होते पर वे तो अब मर चुके हैं। उनकी माँ भी मर गयी है और मैं यहाँ अकेला बैठा हूँ।"

इस बीच औलिव मेहमान का बिस्तर लगाने के लिये चली गयी। उसने वहीं से बच्चों को बुलाया और उनसे फुसफुसा कर बोली — "जब हम फिर से दूसरे कमरे में वापस जायें तो तुम मुझसे कहानी सुनाने के लिये कहना।

मैं तुमको मना करूँ या तुमको धमकी दूँ तभी भी तुम कहानी सुनाने की जिद करते रहना। ठीक?"

"ठीक है माँ हम ऐसा ही करेंगे।"

जब वे सब फिर आग के पास आगये तो बच्चे बोले — "माँ कोई कहानी सुनाओ न।"

"तुम क्या सोचते हो यह कोई समय है कहानी सुनाने का? अब बहुत देर हो रही है और देखो यह हमारे मेहमान भी थके हुए हैं इनको भी तो सोना है।चलो तुम भी सो जाओ।"

"नहीं माँ कहानी सुनाओ न।"

"अगर तुम चुप नहीं रहोगे तो मैं तुम्हारी पिटाई करूँगी।"

राजा बोला — "बच्चे हैं बेचारे। तुम इतने छोटे बच्चों की पिटाई कैसे कर सकती हो? इनको कहानी सुना दो न। इनको खुश रखा करो। मुझे भी अभी नींद नहीं आ रही है और फिर मैं भी तुम्हारी कहानी सुन लूँगा।"

यह सुन कर औलिव बैठ गयी और उसने कहानी सुनानी शुरू की। धीरे धीरे राजा उस कहानी को गम्भीर हो कर सुनने लगा और जैसे जैसे वह कहानी आगे बढ़ती जाती थी वह उसको सुनने के लिये और ज़्यादा उत्सुक होता जाता था और कहता जाता था "फिर क्या हुआ, फिर क्या हुआ।"

क्योंकि यही कहानी तो उसकी पत्नी की भी थी पर उसकी इतनी हिम्मत नहीं पड़ रही थी कि वह इतनी बड़ी उम्मीदों के पुल बॉध सकता कि वह उससे यह कह सकता कि तुम ही तो मेरी औलिव हो।

क्योंकि उसकी कहानी का वह हिस्सा तो अभी तक आया ही नहीं था जिसमें उसके हाथ ठीक हो जाते हैं।

अन्त में वह रो पड़ा और उससे पूछा — "पर उसके हाथों का क्या हुआ जिन्हें काट डाला गया था?

तब औलिव ने उसको उस बुढ़िया धोबिन वाली घटना बतायी। सुनते ही राजा खुशी से चिल्लाया — "सो वह तुम ही हो?" कह कर उसने औलिव को गले लगा लिया। बरसों के बिछड़े मिल गये।

पर इस खुशी के तुरन्त बाद ही राजा चिन्ता में पड़ गया और बोला — "मुझे तुरन्त ही महल लौट कर अपनी मॉ को उसके किये की वह सजा देनी चाहिये जो उनको मिलनी चाहिये।"

औलिव बोली — "नहीं नहीं ऐसा नहीं करो। अगर तुम मुझसे सचमुच प्यार करते हो तो तुम मुझसे वायदा करो कि तुम मॉ पर

बिल्कुल भी हाथ नहीं उठाओगे। अभी जो कुछ उन्होंने किया है वह इस पर अपने आप ही अफसोस करेंगी।

वह सोच रही होंगी कि वह राज्य की भलाई के लिये नाटक कर रही हैं। उनकी ज़िन्दगी बख्श दो। उनके उन सब कामों के लिये उनको माफ कर दो जो उन्होंने मेरे साथ किये। जब मैंने उनको माफ कर दिया तो तुम भी उनको माफ कर दो।"

सो राजा महल लौट गया और वहाँ जा कर उसने अपनी माँ को कुछ नहीं बताया। माँ बोली — "मैं तुम्हारे बारे में परेशान थी। इस तूफान में जंगल में तुम्हारी रात कैसी बीती?"

"माँ मेरी रात तो बहुत अच्छी बीती।"

माँ को कुछ शक हुआ तो आश्चर्य से बोली — "क्या?"

"हाँ माँ। वहाँ मुझे रात को एक घर मिल गया था। वहाँ बड़े दयालु लोग थे जिन्होंने मुझे आराम से रखा। औलिव की मौत के बाद यह पहला मौका था कि मैं इतना खुश था। पर एक बात बताओ माँ, क्या औलिव सचमुच में मर गयी?"

"इस बात के कहने का क्या मतलब है तुम्हारा? सारा शहर उसके दफ़न पर मौजूद था।"

"माँ मैं भी उसको एक बार अपनी आँखों से देखना चाहूँगा और उसकी कब्र पर एक बार फूल चढ़ाना चाहूँगा।"

यह सुन कर रानी को गुस्सा आ गया और वह गुस्से से बोली — “पर यह शक क्यों? क्या एक बेटे का अपनी माँ की तरफ यही फर्ज बनता है कि वह उसकी बात पर शक करे?”

“छोड़ो भी माँ, अब बहुत झूठ हो गया। औलिव आओ अन्दर आ जाओ।”

उसने औलिव को अन्दर बुला लिया तो वह अपने बच्चों को साथ ले कर अन्दर आ गयी। रानी जो अब तक गुस्से से लाल पीली हो रही थी डर से सफेद पड़ गयी।

पर औलिव बोली — “नहीं माँ जी आप डरिये नहीं, हम आपको दुखी करने नहीं आये हैं। हमारे लिये एक दूसरे को पाने की खुशी किसी भी चीज़ से ज़्यादा बड़ी है।”

इसके बाद रानी माँ कौनवैन्ट चली गयी और राजा और औलिव ने अपनी बाकी की ज़िन्दगी खुशी आराम और शान्ति से गुजारी।

8 चालाक देहाती लड़की कैथरीन[62]

एक दिन एक किसान अपने अंगूर के बागीचे में हल चला रहा था कि उसके हल का फल किसी सख्त चीज़ से टकरा गया। उसने झुक कर देखा तो वह तो एक बहुत ही बढ़िया ओखली[63] थी।

उसने उस ओखली को बाहर निकाल लिया और जब उसने उसकी मिट्टी साफ की तो देखा कि वह तो सोने की ओखली थी। उसने सोचा — "ऐसी ओखली तो केवल एक राजा के पास ही होनी चाहिये सो मैं इसको राजा को दे आता हूँ तो वह मुझे इसके बदले में अच्छा खासा इनाम देंगे।"

जब वह घर आया तो उसकी बेटी कैथरीन उसका इन्तजार कर रही थी। किसान ने अपनी बेटी को उस दिन की मिली सोने की ओखली दिखायी और उसको बताया कि वह उसको राजा को देने जा रहा था।

कैथरीन बोली — "हॉ हॉ इसमें क्या शक है। यह ओखली तो वाकई बहुत सुन्दर है जैसी कि इसको होना चाहिये। पर पिता जी, अगर आप इसको राजा के पास ले जायेंगे तो राजा तो इसमें कोई न कोई कमी निकाल ही देगा वह कहेगा कि इसमें यह चीज़ नहीं है या

[62] Catherine, Sly Country Lass. Tale No 72. A folktale from Montale area, Italy, Europe.
[63] Translated for the word "Mortar". See the picture of a mortar and a pestle above.

इसमें वह चीज़ नहीं है और फिर आपको वह चीज़ उसको और देनी पड़ेगी।"

किसान बोला — "और ज़रा यह तो बताना कि इसमें क्या चीज़ नहीं है और राजा को इसमें क्या कमी दिखायी देगी, ओ मेरी सीधी सादी बेटी?"

"आप ज़रा इसको उसको दे कर देखियेगा तो वह कहेगा —

ओखली तो बड़ी भी है और सुन्दर भी, पर ओ बेवकूफ इसका मूसल कहाँ है?

किसान ने अपने कन्धे उचकाये और बोला — "एक राजा ऐसा बोलेगा ऐसा तूने सोचा भी कैसे? तू क्या समझती हो कि क्या राजा तेरे जैसा बेवकूफ है?" यह कह कर उसने उस ओखली को अपनी बगल में दबाया और सीधा राजा के महल की तरफ चल दिया।

जब वह राजा के महल के दरवाजे पर पहुँचा तो पहले तो राजा के चौकीदारों ने उसको महल के अन्दर ही नहीं घुसने दिया। पर जब उसने कहा कि वह राजा के लिये एक बहुत बढ़िया भेंट ले कर आया है तब कहीं जा कर उन्होंने उसको महल में घुसने दिया। वे उसको राजा के पास ले गये।

किसान बोला — "ओ राजा, मुझे अपने अंगूर के बागीचे में यह सोने की ओखली मिली तो मैंने सोचा कि इस ओखली को तो राजा के पास होना चाहिये इसलिये मैं इसको आपके पास ले आया हूँ, अगर आप इसे रखना चाहें तो।"

राजा ने वह ओखली किसान से ले ली। उसको घुमा फिरा कर देखने के बाद ना में सिर हिला कर बोला —

यह ओखली तो बड़ी भी है और सुन्दर भी, पर इसका मूसल कहाँ है?

वह कैथरीन के शब्द ही बोला बस फर्क इतना था कि उसने किसान को बेवकूफ नहीं कहा। वह शायद इसलिये क्योंकि राजा लोग कुलीन घरों के होते हैं और ऐसी भाषा नहीं बोलते।

किसान ने अपने सिर पर हाथ मारा और वह यह कहे बिना न रह सका — "शब्द ब शब्द उसने ठीक ही अन्दाज लगाया था।"

राजा यह सुन कर बोला — "किसने क्या अन्दाजा लगाया था?"

किसान बोला — "माफ कीजियेगा राजा साहब, मेरी बेटी ने मुझसे कहा था कि जब आप यह ओखली राजा को देंगे तो राजा आपसे यही कहेगा और उसने मुझसे यही कहा था जो अभी आपने कहा पर मैंने उसका विश्वास ही नहीं किया।"

राजा बोला — "अरे तब तो तुम्हारी यह बेटी बड़ी होशियार लगती है। ऐसा करो कि तुम यह रुई ले जाओ और उसको बोलना कि वह मेरी सारी सेना के लिये इसकी कमीजें बना दे। पर उसको कहना कि वह यह काम जल्दी ही कर दे क्योंकि मुझे वे अभी चाहिये।"

किसान तो यह सुन कर हक्का बक्का रह गया। पर जैसा कि तुम जानते हो अब तुम राजा से बहस तो कर नहीं सकते न, सो उसने वह ओखली तो वहीं छोड़ दी, रुई की वह छोटी सी गठरी उठायी और राजा को सिर झुका कर अपने घर की तरफ चल दिया।

वह सोच रहा था कि इस ओखली के बदले में कोई इनाम तो उसे क्या मिलता धन्यवाद भी नहीं मिला और उलटे राजा ने उसमें कमी भी निकाल दी और साथ में यह एक मुश्किल काम भी पकड़ा दिया। अब मेरी बेटी बेचारी यह सब कैसे करेगी।

घर आ कर वह कैथरीन से बोला — "बेटी, आज तू फॅस गयी।" और उसने उसको राजा का हुक्म सुना दिया।

कैथरीन बोली — "पिता जी, आप तो इतनी छोटी छोटी बातों पर परेशान हो जाते हैं।" कह कर उसने पिता के हाथ से रुई की गठरी ले ली और उसको हिलाया।

चाहे रुई को कितने भी होशियार आदमी ने क्यों न साफ किया हो पर फिर भी रुई में हमेशा ही थोड़ी बहुत गन्दगी रह ही जाती है सो जैसे ही कैथरीन ने रुई की उस गठरी को उठा कर हिलाया उसमें से कुछ गन्दगी नीचे गिर पड़ी। वह गन्दगी इतने छोटे टुकड़ों में थी कि मुश्किल से ही दिखायी दे रही थी।

कैथरीन ने उस गन्दगी को उठा लिया और उसको अपने पिता को देती हुई बोली — "यह लीजिये पिता जी, आप अभी अभी

राजा के पास वापस चले जाइये और मेरी तरफ से उनसे कहियेगा कि मैं उनके लिये कमीजें तो बना दूँगी पर क्योंकि मेरे पास कपड़ा बुनने की कोई चीज़ या मशीन नहीं है तो वह इन मुट्ठी भर तिनकों से मेरे लिये एक कपड़ा बुनने की मशीन बनवा दें। उनके हुक्म का शब्द ब शब्द पालन किया जायेगा।"

किसान की तो राजा के पास दोबारा जाने की हिम्मत ही नहीं हो रही थी, खास कर कैथरीन का यह सन्देश ले कर, पर कैथरीन जब उसके पीछे पड़ी तो वह जाने के लिये तैयार हो गया।

वह राजा के पास गया और जा कर कैथरीन का वह सन्देश राजा को दिया तो राजा को लगा कि वह लड़की तो बहुत होशियार थी तो उसने उससे मिलने की इच्छा प्रगट की। अब वह उसे अपनी ऑख से देखना चाहता था।

उसने किसान से कहा — "तुम्हारी बेटी तो बहुत होशियार है। उसको महल में भेजो ताकि मैं भी उससे बात कर के कुछ आनन्द ले सकूँ।

पर ध्यान रहे कि जब वह मेरे पास आये तो न तो वह बिना कपड़ों के हो और न ही वह कपड़े पहने हो। उसका पेट न तो भरा हो और न खाली हो। न उस समय दिन हो न रात हो। न तो वह पैदल हो और न ही घोड़े पर।

वह मेरी हर बात को ध्यान में रख कर ही मेरे पास आये नहीं तो तुम दोनों के सिर काट लिये जायेंगे।"

किसान बेचारा यह सब सुन कर बहुत दुखी हुआ और यह सोच कर मुँह लटकाये हुए घर की तरफ चल दिया कि बस अब तो उन दोनों को मरना ही है अच्छा होता अगर वह अपनी बेटी की बात मान कर वह सोने की ओखली ले कर राजा के पास जाता ही नहीं।

पर अब क्या हो सकता था। अब तो तीर कमान से छूट चुका था। घर आ कर उसने अपनी बेटी से कहा — "बस अब हम तुम दोनों मरने के लिये तैयार हो जायें।"

बेटी ने आश्चर्य से पूछा — "अच्छा? वह क्यों भला? बोलिये पिता जी। वहाँ हुआ क्या मुझे भी तो कुछ बताइये?"

किसान ने राजा के महल में जो कुछ हुआ वह और राजा ने जो कुछ उससे कहा वह सब उसको बता दिया और बोला — "यह सब तू कैसे करेगी बेटी?"

यह सुन कर कैथरीन हँस दी — "बस पिता जी इतनी सी बात? आप बिल्कुल परेशान न हों। यह सब बहुत आसान है। मुझे मालूम है कि यह सब कैसे करना है। बस आप मुझे थोड़ा सा मछली पकड़ने वाला जाल ला दें।" किसान ने उसको मछली पकड़ने वाला जाल ला दिया।

अगले दिन दिन निकलने से पहले उसने कपड़ों की बजाय अपने शरीर को मछली पकड़ने वाले जाल से ढका – इस तरह से न तो वह बिना कपड़ों के थी और न ही उसने कोई कपड़ा पहना हुआ था।

उसने एक लूपिन[64] खायी जिससे उसका पेट न तो भरा और न खाली ही रहा।

अपनी बकरी पर चढ़ी और अपने एक पैर को जमीन पर घसीटते हुए और दूसरे पैर को हवा में उठा कर चली। इस तरह से वह न तो अपने पैरों पर चल रही थी और न ही घोड़े पर सवार थी।

जब वह राजा के महल पहुँची तो उस समय बस थोड़ा सा झुटपुटा ही हो रहा था। इस तरह उस समय न तो दिन ही था और न रात ही थी।

इस तरीके से आते देख कर महल के चौकीदारों ने उसको एक पागल लड़की समझा और महल के बाहर ही रोक दया। पर जब उनको यह पता चला कि वह तो केवल राजा के हुक्म का पालन कर रही थी तो चौकीदार उसको राजा के पास ले गये।

वहाँ जा कर कैथरीन बोली — "मैजेस्टी, मैं आपके हुक्म के अनुसार ही आयी हूँ।" उसको इस रूप में देख कर राजा का तो हँसते हँसते पेट ही फटने लगा।

जब उसका हँसना कुछ कम हुआ तो वह बोला — "कैथरीन, मैं तुम्हारे जैसी चतुर लड़की की ही तलाश में था। मैं तुमसे शादी

---

[64] Lupin or Lupien is a flowering plant whose seeds are eaten, but never have they been accorded the same status as soybeans or dry peas and other pulse crops. See the Lupin beans and its plant images above.

करूँगा और तुमको अपनी रानी बनाऊँगा पर एक शर्त पर कि तुम मेरे कामों में दखल नहीं दोगी। बोलो क्या तुम्हें मंजूर है? मुझसे शादी करोगी?"

शायद राजा सोच रहा था कि कैथरीन उससे ज़्यादा होशियार है इसी लिये उसने यह शर्त रखी। कैथरीन ने कहा कि वह अपने पिता से पूछ कर बतायेगी।

पर किसान ने जब यह सुना तो बोला — "देखो बेटी, अगर राजा तुमको अपनी पत्नी बनाना चाहता है तो तुम्हारे पास और कोई चारा नहीं है सिवाय उससे शादी करने के।

पर यह भी ख्याल रखना कि अगर राजा ने इतनी जल्दी यह निश्चय किया है कि वह क्या चाहता है तो उतनी ही जल्दी वह यह भी निश्चय कर सकता है कि वह क्या नहीं चाहता है।

इसके साथ यह भी ख्याल रखना कि तुम अपने काम वाले कपड़े यहाँ खूँटी पर टाँग जाना क्योंकि अगर कभी तुमको घर वापस आना पड़ जाये तो कम से कम तुम्हारे पास पहनने के कपड़े तो हों।"

पर कैथरीन तो इतनी खुश और इतनी उमंग में थी कि उसने अपने पिता की बातों पर ध्यान ही नहीं दिया। कुछ दिन बाद कैथरीन की शादी राजा से हो गयी।

राज्य भर में खुशियाँ मनायीं गयीं। मेले लगे। सराय लोगों से भर गयीं और बहुत सारे किसानों को तो चौराहों पर सोना पड़ा। वे चौराहे भी राजा के महल तक लोगों से भरे पड़े थे।

एक किसान अपनी एक गाय जिसको बच्चा होने वाला था वह वहाँ उसको बेचने के लिये ले कर आया था पर उसको ऐसी कोई जगह नहीं मिल रही थी जहाँ वह अपनी गाय रख सकता।

यह देख कर एक सराय के मालिक ने उससे कहा कि वह अपनी गाय उसके शैड में रख ले। उसके शैड में दूसरे किसानों का सामान भी रखा हुआ था सो वहाँ उस किसान ने अपनी गाय को एक दूसरे किसान की गाड़ी से बाँध दिया।

इत्तफाक की बात कि उसी रात को उसकी गाय को बच्चा बछड़ा हो गया। सुबह को गाय का मालिक अपने दोनों जानवरों को वहाँ से ले कर जाने लगा कि तभी उस गाड़ी का मालिक भी वहाँ अपनी गाड़ी ले जाने के लिये आ गया जिसकी गाड़ी से गाय वाले ने अपनी गाय बाँधी थी।

उसने गाय वाले से चिल्लाते हुए कहा — "गाय के लिये तो ठीक है कि वह तुम्हारी है पर बछड़े को मत छूना वह मेरा है।"

गाय वाला बोला — "तुम क्या कहना चाह रहे हो कि यह बछड़ा तुम्हारा है? यह बछड़ा मेरी गाय ने पिछली रात को ही तो दिया है।"

गाड़ी वाले ने पूछा — "पर यह बछड़ा मेरा क्यों नहीं है। गाय गाड़ी से बँधी थी और गाड़ी मेरी है इसलिये यह बछड़ा भी गाड़ी के मालिक का ही हुआ न?"

दोनों में गर्मागर्म बहस शुरू हो गयी। गुस्से में आ कर उन दोनों ने पास में पड़ीं डंडियाँ उठा लीं और एक दूसरे को मारने लगे।

दोनों की लड़ाई का शोर सुन कर वहाँ भीड़ इकट्ठी हो गयी। सिपाही भी दौड़ पड़े। उन्होंने दोनों को अलग अलग किया और दोनों को पकड़ कर सीधे राजा के दरबार में ले गये।

राजधानी की यह पुरानी रीति थी कि उन दिनों राज काज में राजा की रानियाँ भी अपनी राय दे सकती थीं पर रानी कैथरीन के साथ परेशानी यह थी कि जब भी राजा कोई फैसला सुनाता था तो रानी उसका विरोध करती।

राजा उसकी इस बात से थक गया था सो उसने उससे कहा — "मैंने तुमको पहले ही मना किया था कि तुम मेरे मामलों के बीच में नहीं बोलोगी पर तुम सुनती ही नहीं हो। आगे से तुम इस न्याय के दरबार[65] में बिल्कुल नहीं बैठोगी।"

कैथरीन ने ऐसा ही किया सो जब वे दोनों किसान उस न्याय के दरबार में लाये गये तब कैथरीन वहाँ नहीं थी। दोनों तरफ की बातें सुन कर राजा ने अपना फैसला सुनाया कि बछड़ा गाड़ी के साथ रहेगा।

[65] Court of Justice

गाय के मालिक को यह फैसला बिल्कुल ही अन्यायपूर्ण लगा पर वह कर ही क्या सकता था। राजा का फैसला आखिरी फैसला था।

किसान को इस तरीके से परेशान देख कर सराय के मालिक ने उसको सलाह दी कि वह रानी के पास जाये वही उसके लिये कोई आसान रास्ता निकालेगी।

वह किसान महल गया और वहाँ जा कर एक नौकर से कहा — "क्या मैं रानी साहिबा से बात कर सकता हूँ?"

नौकर ने कहा कि यह मुमकिन नहीं है क्योंकि राजा ने रानी को लोगों के मुकदमे सुनने से मना कर रखा है।

किसान यह सुन कर बागीचे की दीवार तक अकेला ही चलता चला गया। वहाँ उसको रानी दिखायी दे गयी तो वह बागीचे की दीवार कूद कर अन्दर पहुँच गया और रानी के सामने जा कर रो पड़ा। रो कर उसने रानी को बताया कि उसके साथ उसके पति ने कैसा अन्याय किया है।

रानी बोली — "मेरी सलाह यह है कि राजा कल शिकार के लिये जा रहे हैं। वह एक झील के पास शिकार करने जायेंगे। आज कल वह झील सूखी पड़ी रहती है तो तुम ऐसा करना कि एक मछली पकड़ने का जाल अपनी कमर की पेटी से लटका लेना और उस सूखी झील में नछली पकड़ने का बहाना करना।

जब राजा किसी को उस सूखी झील में मछली पकड़ते देखेगा तो वह हँसेगा और तुमसे पूछेगा कि तुम एक सूखी झील में मछली कैसे पकड़ रहे हो तो तुम उनको यह जवाब देना — "मैजेस्टी, अगर एक गाड़ी एक बछड़े को जन्म दे सकती है तो मैं सूखी झील में मछली क्यों नहीं पकड़ सकता?"

अगली सुबह वह किसान अपना मछली पकड़ने वाला जाल ले कर उस झील की तरफ चल दिया जहाँ राजा शिकार खेलने के लिये जाने वाला था।

वह उस सूखी झील के किनारे बैठ गया और मछली का जाल उस झील के अन्दर डाल कर मछली पकड़ने का बहाना करने लगा। पहले वह उस जाल को झील में नीचे गिराता और फिर उसको ऊपर उठाता जैसे कि वह उस जाल में फँसी मछली निकाल रहा हो।

तभी वहाँ राजा अपने सैनिकों के साथ शिकार के लिये आ गये और उस किसान को उस सूखी झील में मछली पकड़ते देखा तो हँस कर बोले — "भले आदमी, क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है जो तुम सूखी झील में मछलियाँ पकड़ रहे हो?"

किसान ने राजा साहब को वही जवाब दे दिया जो रानी ने उसे बताया था — "मैजेस्टी, अगर एक गाड़ी एक बछड़े को जन्म दे सकती है तो मैं सूखी झील में मछली क्यों नहीं पकड़ सकता?"

यह जवाब सुन कर राजा बोला — "भले आदमी, ऐसा लगता है कि यह जवाब तुमको किसी ने सिखाया है। लगता है कि तुमने रानी से बात की है।"

किसान ने स्वीकार किया कि हॉ उसने रानी से ही बात की है। इस पर राजा ने बछड़े के बारे में एक और नया फैसला सुना दिया कि बछड़ा गाय वाले किसान का था।

उसके बाद उसने कैथरीन को बुलाया और कहा — "तुम फिर सब गड़बड़ कर रही हो और तुमको पता है कि मैंने तुमको यह सब करने से मना किया है पर तुम मानती ही नहीं हो इसलिये अब मैं तुमको अपने घर में नहीं रख सकता। तुम अब अपने घर जा सकती हो।"

कुछ पल रुक कर वह बोला — "और हॉ, जो तुमको यहॉ सब से ज़्यादा पसन्द हो वह एक चीज़ तुम अपने साथ अपने घर ले जा सकती हो। तुम इसी शाम को अपने घर चली जाओ और जा कर फिर से एक देहाती लड़की बन जाओ।"

कैथरीन ने बड़ी नम्रता से कहा — "मैं वैसा ही करूँगी जैसा आप कहेंगे पर आप मेरे ऊपर एक मेहरबानी करें कि आप मुझे कल जाने की इजाज़त दे दें क्योंकि अगर मैं आज गयी तो हम दोनों के लिये यह बड़े शर्म की बात होगी और आपकी प्रजा हमारे बारे में बातें बनायेगी।"

राजा बोला — "ठीक है। हम लोग आज शाम को आखिरी बार खाना एक साथ खायेंगे और फिर कल सुबह तुम चली जाना।"

कैथरीन तो बहुत होशियार थी। शाम को उसने रसोइये को भुना हुआ मॉस, सूअर का मॉस और दूसरा भारी खाना बनाने का हुक्म दिया।

यह खाना खाने से राजा को नींद आती और उसको प्यास भी बहुत लगती। फिर उसने उनसे कमरे में से सबसे अच्छी शराब लाने के लिये कहा।

जब वे दोनों खाना खाने बैठे तो राजा ने खूब पेट भर कर खाना खाया और जी भर कर शराब पी। कैथरीन उसके गिलास में शराब उँडेलती रही और राजा पीता रहा।

जल्दी ही राजा को ठीक से दिखायी देना भी बन्द हो गया और वह अपनी आराम कुर्सी पर ही गहरी नींद सो गया।

कैथरीन ने नौकरों को बुलाया कि वे राजा की आराम कुर्सी ले कर उसके पीछे पीछे आयें। साथ में उसने यह भी कहा कि वे यह काम बिल्कुल चुपचाप रह कर करें एक शब्द भी न बोलें।

वे सब महल से बाहर निकले फिर शहर के दरवाजे से बाहर निकले और फिर वह अपने घर ही आ कर रुकी। तब तक काफी रात जा चुकी थी।

उसने दरवाजे पर से ही आवाज लगायी — "पिता जी, मैं हूँ दरवाजा खोलिये।"

अपनी बेटी की आवाज सुन कर बूढ़ा किसान खिड़की की तरफ दौड़ा और बोला — "बेटी, रात को इस समय? मैंने तुझसे कहा था न कि इन लोगों का कोई भरोसा नहीं।

अच्छा हुआ कि मैंने अपनी अक्लमन्दी से तेरे काम करने वाले कपड़े यहाँ रखवा लिये थे। वे अभी यहीं हैं, खूँटी पर टँगे हुए हैं तेरे कमरे में।"

कैथरीन बोली — "पिता जी, पहले मुझे अन्दर तो आने दीजिये। फिर बात करते हैं।"

किसान ने घर का दरवाजा खोल दिया तो देखा कि कुछ नौकर एक आराम कुर्सी पर राजा को बिठाये लिये चले आ रहे हैं। किसान की तो समझ में ही नहीं आया कि यह सब हो क्या रहा है।

कैथरीन राजा को अपने कमरे में ले गयी। उसके कपड़े उतारे और अपने बिस्तर में सुला दिया। यह कर के उसने सब नौकरों को वापस महल भेज दिया और वह खुद भी वहीं उसी कमरे में सो गयी।

आधी रात के करीब राजा की आँख खुली तो उसको अपना बिस्तर का गद्दा कुछ सख्त सा लगा और चादरें कुछ खुरदरी लगीं। उसने करवट बदली तो देखा कि उसकी पत्नी भी वहीं पास में ही सो रही थी।

उसने कैथरीन को जगाया और उससे पूछा — "कैथरीन, क्या मैंने तुमसे यह नहीं कहा था कि तुम अपने घर चली जाओ?"

कैथरीन बोली — "हॉ राजा साहब। आपने कहा तो था पर अभी दिन नहीं निकला है इसलिये अभी आप सो जाइये। सुबह होने पर बात करेंगे।" राजा फिर सो गया।

सुबह को जब वह गधों के रेंकने अौर भेड़ों के मिमियाने की आवाज सुन कर उठा तो देखा कि दिन निकल आया था और सूरज की किरनें कमरे के अन्दर आ रहीं थीं।

वह चौंक कर उठा क्योंकि वह यह समझ ही नहीं पाया कि वह था कहॉ। पर यह वह यकीन से कह सकता था कि वह उसके अपने महल का उसका अपना कमरा नहीं था।

कैथरीन बोली — "पर आपने मुझसे यह भी तो कहा था कि मैं अपनी सबसे ज़्यादा पसन्द की एक चीज़ महल से ले कर अपने घर जा सकती हूॅ। मुझे आप सबसे ज़्यादा पसन्द थे सो मैं आपको ले कर अपने घर चली आयी और अब मैं आपको अपने पास ही रखने वाली हूॅ।"

राजा यह सुन कर खूब हॅसा और फिर दोनों में सुलह हो गयी। वे दोनों अपने महल वापस चले गये। वे लोग अभी भी वहॉ रह रहे हैं और उसके बाद से राजा अपनी न्याय के दरबार में अपनी पत्नी के बिना नहीं बैठा।

9 सूरज की बेटी[66]

यह कहानी इटली देश की उसके पिसा शहर की एक लोक कथा है। पिसा शहर का नाम तो तुमने सुना ही होगा। वहाँ की झुकती हुई मीनार दुनियाँ के आठ आश्चर्यों में से एक है।

एक बार एक राजा और एक रानी थे जिनके बहुत दिनों से कोई बच्चा नहीं था। कुछ दिनों बाद रानी को बच्चे की आशा हो गयी।

जब उनको यह पता चला कि अब उनके घर बच्चा आने वाला है तो उन्होंने कई ज्योतिषियों को यह जानने के लिये बुलाया कि वह लड़का होगा या लड़की। और वह किस तारे में पैदा होगा आदि आदि।

सितारे देख कर ज्योतिषी बोले – "यह बच्चा एक लड़की होगी और उसका भाग्य कहता है कि बीस साल की उम्र से पहले पहले वह सूरज को प्यारी होगी और उसकी बेटी की माँ बनेगी।

राजा और रानी यह सब जान कर बहुत परेशान हुए कि उनकी बेटी सूरज की बेटी की माँ बनेगी। वह सूरज जो आसमान में रहता है और शादी नहीं कर सकता।

---

[66] The Daughter of the Sun. Tale No 74. A folktale from Italy from its Pisa area.

ऐसी बुरी किस्मत को दूर रखने के लिये उन्होंने एक इतनी ऊँची मीनार बनवायी कि सूरज खुद भी उसकी तली तक न पहुँच सके।

वह बच्ची पैदा होने के बाद से अपनी आया के साथ उस मीनार में तब तक के लिये बन्द कर दी गयी जब तक वह बीस साल की नहीं होती। सूरज भी तब तक उसको नहीं देख सकता था और न ही वह सूरज को देख सकती थी।

उस आया के अपनी भी एक बेटी थी जो राजा की बेटी के बराबर थी सो दोनों लड़कियाँ उस मीनार में एक साथ ही खेल खेल कर बड़ी होती रहीं।

एक दिन जब वे दोनों बीस साल की होने वाली थीं तो उनको लगा कि वे मीनार के बाहर की चीज़ों का आनन्द लें तो आया की बेटी बोली — "चलो एक कुर्सी के ऊपर दूसरी कुर्सी रख कर उस ऊँची वाली खिड़की पर चढ़ते हैं। वहाँ से हम देख पायेंगे कि इस मीनार के बाहर क्या है।"

दोनों ने यह काम बहुत जल्दी कर लिया। वे एक के ऊपर एक कुर्सियाँ रख कर खिड़की तक पहुँच गयीं और उस खिड़की से बाहर झाँका – बड़े बड़े पेड़, बहती हुई नदी, आसमान में उड़ती हुई चिड़ियाँ, बादल और सूरज।

जैसे उन्होंने सूरज को देखा वैसे ही सूरज ने भी राजा की बेटी को देखा तो वह उसके प्रेम में पड़ गया। उसने अपनी एक किरन को भेजा। और जैसे ही उस किरन ने राजा की बेटी को छुआ राजा की बेटी को बच्चे की आशा हो गयी – सूरज की बेटी।[67]

समय आने पर सूरज की बेटी मीनार में पैदा हुई तो आया ने राजा के गुस्से के डर के मारे बच्ची को शाही कपड़ों में लपेटा और बीन्स के एक खेत में ले जा कर छोड़ आयी।

बहुत जल्दी ही जब राजा की बेटी बीस साल की हो गयी तो राजा ने यह सोचते हुए अपनी बेटी को मीनार में से निकाल लिया कि अब तो उसकी बेटी बीस साल की हो गयी है इसलिये अब सूरज से उसे कोई खतरा नहीं है।

पर उसको तो इस बात का ज़रा भी पता नहीं था कि वह अनहोनी तो पहले ही घट चुकी थी जिसकी वजह से उसको मीनार में रखा गया था।

जब जब जो जो होना होता है वह तो होता ही है... राजा की बेटी के सूरज की बेटी पैदा हो चुकी थी और बीन्स के खेत में पड़ी रो रही थी।

---

[67] This way of getting a child from a celestial has been mentioned in Mahabharat also when Kunti pronounced the Mantra given by Rishi Durvasa to call any god in need.

एक दूसरा राजा शिकार खेलने के लिये उस खेत से गुजर रहा था कि उसे किसी बच्चे के रोने की आवाज सुनायी दी। उसने इधर उधर देखा तो एक बच्चा खेत में पड़ा रो रहा था।

खेत में पड़ी उस बच्ची के ऊपर उसको दया आ गयी तो उसने उस बच्ची को उठा लिया और उसे ले जा कर अपनी पत्नी को दे दिया।

उस राजा ने उस बच्ची के लिये एक आया रख ली और वह आया उसको पालने लगी। इस तरह से वह बच्ची उस दूसरे राजा के महल में उनकी अपनी बेटी की तरह पलने लगी।

उस राजा के अपना भी एक बेटा था जो उससे थोड़ा सा ही बड़ा था। वह भी उसी के साथ साथ बड़ा होने लगा।

राजा का बेटा और यह सूरज की बेटी दोनों साथ साथ बड़े होते होते एक दूसरे से प्रेम करने लगे।

राजा का बेटा उससे शादी करने का बड़ा इच्छुक था पर उसका पिता उस लड़की से उसकी शादी इसलिये नहीं करना चाहता था क्योंकि वह एक पायी गयी लड़की थी और उसके माता पिता का कोई पता नहीं था।

राजा ने उस लड़की को यह सोच कर अपने महल से दूर एक अकेले घर में भेज दिया कि इस तरह से उसका अपना बेटा शायद उसको भूल जायेगा।

पर राजा ने यह सपने में भी नहीं सोचा था कि वह सूरज की बेटी थी और उसके अन्दर कई जादुई ताकतें थीं जो आदमियों में नहीं होती थीं।

जैसे ही वह महल से चली गयी राजा ने अपने बेटे की शादी एक अच्छे राज घराने की एक लड़की से पक्की कर दी। शादी वाले दिन चीनी चढ़े बादाम[68] दुलहिन और दुलहे के सब रिश्तेदारों और दोस्तों को भेजे गये। वे बादाम सूरज की बेटी को भी भेजे गये।

जब दूतों ने सूरज की बेटी के घर का दरवाजा खटखटाया तो वह उसे खोलने आयी पर उसका तो सिर ही नहीं था।

वह बोली — "ओह अफसोस, मैं अपने बालों में कंघी कर रही थी तो मैंने अपना सिर मेज पर उतार कर रख दिया था। उसको तो मैं वहीं मेज पर रखा छोड़ आयी। मैं ज़रा जा कर अपना सिर ले आऊँ। अभी आयी।"

कह कर उसने दूतों को घर के अन्दर बुलाया, अपना सिर मेज पर से उठा कर लगाया और मुस्कुरायी और बोली — "अब मुझे यह बताओ कि मैं तुम्हें शादी की भेंट के लिये क्या दूँ।"

इतना कह कर वह दूतों को रसोईघर में ले गयी।

वहाँ जा कर उसने कहा — "ओवन खुल जाओ।" और ओवन खुल गया।

[68] Translated for the words "Glazed Almonds"

सूरज की बेटी दूतों को देख कर फिर मुस्कुरायी और फिर बोली — "लकड़ी ओवन में जाओ।" और लकड़ी उड़ कर ओवन में चली गयी।

वह फिर बोली — "ओवन तुम जल जाओ और जब तुम गर्म हो जाओ तो मुझे बुला लेना।"

कह कर वह दूतों से बोली — "अब बताओ क्या अच्छी खबर है?"

ये सब देख कर तो वे दूत आश्चर्य से हक्का बक्का रह गये और उनके चेहरे पर मुर्दनी छा गयी। वे कुछ कहने के लिये शब्द ढूँढने लगे कि तभी ओवन की आवाज आयी — "मालकिन।"

सूरज की बेटी बोली —"मैं अभी आयी।" कह कर वह उस गर्म ओवन में सिर के बल घुस गयी और एक तैयार पाई[69] निकाल लायी।

उसको उन दूतों को देते हुए वह बोली — "यह पाई राजा के लिये शादी की दावत के लिये ले जाओ।"

ऑखें फाड़े और केवल फुसफुसाते हुए वे दूत वहॉ से वह पाई ले कर घर आ गये और राजा को आ कर सब बातें बतायीं पर वहॉ तो कोई उनकी बातों का विश्वास ही नहीं कर रहा था।

[69] Pie – any vegetable or fruit wrapped in a white flour dough sheet and baked. See the picture above.

राजा के बेटे की दुलहिन उस लड़की से बहुत जलती थी क्योंकि हर आदमी जानता था कि राजा का बेटा पहले उसको प्यार करता था।

वह बोली — "उँह, यह तो कुछ भी नहीं। मैं जब अपने घर में रहती थी तो मैं भी ऐसे काम बहुत करती थी।"

राजा का बेटा बोला — "अच्छा, तो ज़रा फिर कुछ हमारे सामने भी तो कर के दिखाओ।"

दुलहिन बोली — "हॉ हॉ लेकिन.... ।"

पर राजा का बेटा उसको खींच कर रसोईघर में ले गया।

दुलहिन बोली — "ओ लकड़ी, ओवन में जाओ।" पर लकड़ी तो ओवन में नहीं गयी। नौकरों ने उसमें लकड़ी अपने हाथ से रखी।

दुलहिन फिर बोली — "ओवन में आग जल जाओ।" पर ओवन तो ठंडा का ठंडा ही पड़ा रहा। उसमें तो आग अपने आप जली ही नहीं।

नौकरों ने उसको अपने हाथ से जलाया और जैसे ही वह गर्म हो गया तो उस घमंडी दुलहिन ने उसके अन्दर घुसने की जिद की। पर वह उसके पूरी तरह से अन्दर घुसने भी नहीं पायी थी कि वह उसकी तेज़ गर्मी से जल कर मर गयी।

कुछ समय बाद राजा के बेटे की दूसरी शादी की गयी।

उस दिन भी चीनी चढ़े बादाम दुलहिन और दुलहे के सब रिश्तेदारों और दोस्तों को भेजे गये। सो वे बादाम सूरज की बेटी को भी भेजे गये।

एक बार फिर दूतों ने जा कर सूरज की बेटी के घर का दरवाजा खटखटाया तो इस बार वह दरवाजा खोलने नहीं आयी बल्कि दीवार में से निकल कर आयी और उनका स्वागत किया।

वह बोली — "अफसोस, घर का दरवाजा आजकल अन्दर से खुलता ही नहीं। मुझे हमेशा ही दीवार में से हो कर बाहर आना पड़ता है और फिर दरवाजे को बाहर से ही खोलना पड़ता है।"

कह कर उसने घर का दरवाजा बाहर से खोला और उनको अन्दर ले गयी। उनको रसोईघर में ले जाते हुए वह बोली — "इस बार मैं शादी की भेंट के लिये क्या बनाऊँ।"

"लकड़ी ओवन में जाओ और जल जाओ।" और पल भर में ही लकड़ियाँ ओवन में चली गयीं और जल गयीं।

यह सब दूतों के सामने ही हो गया तो यह देख कर तो उनको ठंडा पसीना आ गया।

फिर वह बोली — "कड़ाही, आग के ऊपर जाओ। तेल कड़ाही में जाओ। और जब तुम गर्म हो जाओ तो मुझे बुला लेना।"

कुछ पल बाद ही आवाज आयी — "मालकिन, मैं तैयार हूँ।"

सूरज की बेटी बोली — "यह लो।" कह कर उसने अपने हाथ की दसों उँगलियाँ कड़ाही के गर्म तेल में डाल दीं। तुरन्त ही उसकी दसों उँगलियाँ बहुत सुन्दर दस तली हुई मछलियाँ बन गयीं। ऐसी सुन्दर मछलियाँ कभी किसी ने देखी नहीं थीं।

मछलियाँ निकालने के बाद उसकी उँगलियाँ फिर से वापस आ गयीं। सूरज की बेटी ने उन मछलियों को अपने हाथ से पत्तों में लपेटा और मुस्कुरा कर उनको उन दूतों को दे दिया।

यह नयी दुलहिन भी पहली वाली दुलहिन की तरह से इस लड़की से जलती थी। जब उसने उन दूतों से उस लड़की की मछलियाँ बनाने वाली कहानी सुनी तो वह बोली — "तुम लोग देखो कि मैं मछली कैसे तलती हूँ।"

दुलहे ने उसके कहे अनुसार चूल्हे पर कड़ाही रखी, उसमें तेल डाला और उसको खूब गर्म होने दिया। सूरज की बेटी की नकल कर के उसने भी अपनी उँगलियाँ उस गर्म तेल में डाल दीं और उसकी जलन से वह मर गयी।

तब रानी माँ ने दूतों को आड़े लिया — "तुम लोगों की ऐसी कहानियों ने इस घर की कई दुलहिनों को मार डाला है। आगे से ऐसा कुछ नहीं करना।"

राजा और रानी ने फिर किसी तरह अपने बेटे की शादी एक तीसरी लड़की से करने के लिये तैयारी की तो एक बार फिर से दूत चीनी चढ़े बादाम ले कर सूरज की बेटी के पास गये।

वहाँ जा कर उन्होंने एक बार फिर उसके घर का दरवाजा खटखटाया तो वह बोली — "मैं यहाँ हूँ ऊपर।" दूतों ने ऊपर देखा तो उसको हवा में लटके पाया।

वह बोली — "मैं ज़रा एक मकड़ी के जाले पर चढ़ कर सैर करने यहाँ चली आयी थी। मैं अभी नीचे आती हूँ।"

कह कर वह जाले के सहारे सहारे नीचे आयी और दूतों से बादाम ले कर बोली — "इस बार तो मैं सचमुच ही नहीं जानती कि मुझे भेंट के लिये क्या करना चाहिये।"

कुछ देर सोचने के बाद वह बोली — "चाकू, इधर आओ।" चाकू उसके पास आ गया तो उसने उसको पकड़ लिया।

उस चाकू से उसने अपना एक कान काटा। उस कान में एक सुनहरी लेस लगी थी और वह लेस उसके सिर में से ऐसे निकल कर आ रही थी जैसे वह उसके दिमाग में से खुल खुल कर आ रही हो। वह उस लेस को खींचती रही खींचती रही जब तक कि वह लेस खत्म नहीं हो गयी।

फिर उसने अपना वह कटा हुआ कान अपने कान की जगह लगा लिया और उँगलियों से उसे धीरे से दबा कर चिपका लिया। वह लेस उसने दूतों को दे दी और कहा कि वे यह भेंट उसकी तरफ से राजा के लिये ले जायें।

दूत उसको देख कर एक बार फिर आश्चर्य में पड़ गये। जब उन्होंने उस लेस को राजा को दिया तो क्योंकि वह लेस बहुत सुन्दर

थी कि वहाँ बैठा हर आदमी यह जानना चाहता था कि वह लेस कहाँ से आयी।

हालाँकि रानी माँ ने उन दूतों को कुछ भी कहने से मना कर दिया था पर फिर भी उनको उसकी कहानी तो बतानी ही पड़ी।

सुनते ही नयी दुलहिन बोली — "इसमें क्या खास बात है। मैंने तो अपनी सारी पोशाकों पर इसी तरह से निकाली हुई लेस लगा रखी है।"

दुलहा बोला — "अच्छा? तो यह चाकू लो और फिर ज़रा हम भी तो देखें कि तुम यह कैसे करती हो?"

इस पर उस बेवकूफ लड़की ने अपना एक कान काट डाला पर उसमें से लेस निकलने की बजाय इतना सारा खून बहा कि वह वहीं मर गयी।

इस तरह राजा का बेटा अपनी पत्नियाँ खोता गया और उसका प्रेम उस सूरज की बेटी की तरफ बढ़ता गया। आखिर वह बीमार पड़ गया और कोई उसका इलाज नहीं कर सका क्योंकि अब न वह खाता था और न हँसता था।

राजा ने अपने राज्य के कई बड़े बूढ़े जादूगरों को बुला भेजा तो उन्होंने राजा को सलाह दी कि उन्हें अपने बेटे को उस जौ का दलिया खिलाना चाहिये जो केवल एक घंटे के अन्दर बोया गया हो, उगाया गया हो, तोड़ा गया हो और फिर दलिये में तैयार किया गया हो।

राजा तो यह सुन कर पागल सा हो गया क्योंकि ऐसा जौ तो किसी ने कभी सुना ही नहीं था जो केवल एक घंटे के अन्दर बोया गया हो, उगाया गया हो और तोड़ा गया हो। तो वह उसका दलिया कहाँ से बनायेगा।

आखिर राजा के दिमाग में उस लड़की का ख्याल आया जिसने पहले से ही इतने सारे आश्चर्य कर रखे थे। सो उसने उसको बुला भेजा।

सूरज की बेटी आयी और बोली — "हाँ मैं ऐसे जौ को जानती हूँ।" कह कर उसने बिजली की सी चमक के साथ एक घंटा बीतने से पहले ही जौ बोये, उगाये, काटे और उनका दलिया बना दिया।

उसने राजा से प्रार्थना की कि उस दलिये को वह खुद उसके बेटे के पास ले कर जाना चाहती है। राजा ने उसको इजाज़त दे दी। जब वह राजा के बेटे के कमरे में पहुँची तो वह अपने बिस्तर में ऑखें बन्द किये लेटा हुआ था।

यह दलिया बहुत ही बेस्वाद था सो जैसे ही उसने उसका एक चम्मच पिया उसने उसको तुरन्त ही थूक दिया। उस थूके हुए दलिये के कुछ कण उस लड़की की ऑख में जा पड़े।

वह तुरन्त ही बोली — "तुम्हारी यह हिम्मत कि तुम दलिया सूरज की बेटी और एक राजा की धेवती[70] की ऑख में थूको?"

राजा ने आश्चर्य से पूछा — "क्या तुम सूरज की बेटी हो?"

[70] Daughter's daughter is called Dhevatee

"हॉ मैं सूरज की बेटी हूॅ।"

"और एक राजा की धेवती भी?"

"हॉ मैं एक राजा की धेवती भी हूॅ।"

"अरे, हम तो यहॉ यह सोचे बैठे थे कि तुम कोई पड़ी हुई लड़की हो। अगर ऐसा है कि तुम सूरज की बेटी हो और राजा की धेवती हो तो तुम हमारे बेटे से शादी कर सकती हो।"

"हॉ मैं बिल्कुल आपके बेटे से शादी कर सकती हूॅ।"

राजा का बेटा ठीक हो गया और उसकी शादी सूरज की बेटी से हो गयी। उस दिन के बाद से वह एक साधारण लड़की हो गयी और फिर उसके बाद से उसने कोई जादू नहीं किया।

10 सुनहरी गेंद[71]

एक बार एक राजा था जिसके तीन बेटियाँ थीं। उसकी सबसे बड़ी बेटी एक बेकर[72] से प्यार करती थी जो महल में डबल रोटी देने आता था।

वह बेकर भी उसको बहुत प्यार करता था। पर वह उसका हाथ राजा से कैसे माँगे? सो वह राजा के जादूगर[73] के पास गया और उसको अपनी हालत बतायी।

जादूगर बोला — "क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है? एक बेकर एक राजा की बेटी से प्यार करे? अगर राजा को पता चल गया तो बस तुम्हारा भगवान ही मालिक है।"

बेकर बोला — "इसी लिये तो मैं तुम्हारे पास आया हूँ ताकि तुम उसको इस खबर के लिये तैयार कर दो।"

जादूगर अपने सिर पर हाथ मारते हुए बोला — "तब तो भगवान हम दोनों की सहायता करे। मैं तो राजा से यह बात कहने की हिम्मत भी नहीं कर सकता।"

[71] The Golden Ball. Tale No 78. A folktale from Italy from its Pisa area.
[72] Baker is the man who bakes bread, bun, cakes, pies etc.
[73] Translated for the word "Sorcerer"

जब बेकर जिद करता रहा तो उससे बचने के लिये जादूगर बोला — "ठीक है। मैं राजा साहब से बात करूँगा पर मेरी बात याद रखना कि इस सबसे कुछ अच्छा नहीं होने वाला।"

उसके बाद जादूगर किसी अच्छे दिन की तलाश करता रहा और एक दिन अच्छा दिन देख कर जिस दिन राजा अपने अच्छे मूड में था राजा से बेला — "सरकार, अगर आप इजाज़त दें तो मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ। आप वायदा करें कि आप मुझसे नाराज नहीं होंगे।"

राजा बोला — "बोलो बोलो। मैं तुमसे बिल्कुल नाराज नहीं होऊँगा।" और जादूगर ने बेकर की बात राजा से कह दी।

यह सुन कर राजा तो पीला पड़ गया। वह बोला — "क्या? तुम यह सब मुझसे कहने की हिम्मत भी कैसे कर सके? चौकीदार, ले जाओ इस जादूगर को।"

वे जब उस बेचारे जादूगर को ले कर बाहर जा रहे थे तो राजा को याद आया कि उसने तो उस जादूगर से नाराज न होने का वायदा किया था सो उसने जादूगर को तो छोड़ दिया और बजाय जादूगर के अपनी तीनों बेटियों को पकड़ने का हुक्म दे दिया और उनको केवल डबल रोटी और पानी पर रखने का हुक्म सुना दिया।

इस तरह से उसने अपनी बेटियों को छह महीने तक के लिये बन्द रखा। उसके बाद उसने सोचा कि अब तक तो कम से कम

उनको अक्ल आ गयी होगी अब उनको थोड़ी सी हवा तो लगने दी जाये।

सो उसने उनको एक बन्द गाड़ी में नौकरों के साथ एक बड़ी सी सड़क पर घूमने के लिये भेज दिया। जब गाड़ी आधे रास्ते पहुँची तो सड़क पर अचानक ही घना कोहरा छा गया।

उस कोहरे में से एक जादूगर निकला। उसने गाड़ी का दरवाजा खोला, तीनों लड़कियों को बाहर निकाला और अपने साथ ले कर भाग गया।

जब कोहरा छँटा तो नौकरों ने देखा कि तीनों राजकुमारियाँ तो वहाँ से गायब थीं और गाड़ी खाली पड़ी थी। उन्होंने इधर उधर बहुत पुकारा, बहुत ढूँढा पर उन राजकुमारियों का कहीं पता नहीं चला। वे बेचारे खाली गाड़ी ले कर वापस महल चले आये।

अब राजा बस एक ही काम कर सकता था कि उसने अपना एक आदेश जारी कर दिया कि जो कोई भी उन तीनों लड़कियों को ढूँढ कर लायेगा वह उन तीनों लड़कियों में से किसी एक से शादी कर सकेगा।

उस बेकर को भी महल से उसी समय निकाल दिया गया था। महल से निकाले जाने के बाद वह अपने दो दोस्तों के साथ दुनियाँ की यात्रा पर निकल पड़ा था।

एक शाम को एक जंगल में उन्होंने देखा कि एक घर में रोशनी हो रही था। उन्होंने उस महल का दरवाजा खटखटाया तो वह तो

पहले से ही खुला था सो वह दरवाजा पूरा का पूरा बिना किसी कोशिश के ही खुल गया।

वे लोग महल के अन्दर चले गये और सीढ़ियों पर चढ़ गये पर उनको कहीं कोई दिखायी नहीं दिया। वहाँ तीन आदमियों के खाने के लिये एक मेज सजी रखी थी। उस पर खाना लगा रखा था।

वे उस मेज पर बैठ गये और वहाँ उन्होंने पेट भर कर खाना खाया। उनको वहाँ तीन सोने के कमरे भी दिखायी दे गये जिनमें तीन बिस्तर लगे हुए थे सो वे जा कर उन पर सो भी गये।

सुबह जब वे लोग सो कर उठे तो उन्होंने देखा कि उनके बिस्तरों के पास तीन बन्दूकें रखीं हैं। रसोईघर में खाने का सामान रखा है पर वह अभी तक पकाया नहीं गया है।

सो उन लोगों ने सोचा कि दो लोग तो शिकार पर जायें और एक आदमी घर में रह कर खाना बनाये। बेकर उन दोनों में से एक था जिनको शिकार पर जाना था। सो दो दोस्त शिकार पर चले गये और एक दोस्त घर में खाना बनाने के लिये रह गया।

जो आदमी घर में खाना बनाने के लिये रह गया था वह रसोईघर में आग जलाने के लिये गया। जब वह आग जलाने की जगह कोयला रख रहा था तो उसकी चिमनी के ऊपर से एक सुनहरी गेंद उछलती हुई उसके पैरों के पास गिर पड़ी और आ कर वहाँ रुक गयी।

उसने बहुत कोशिश की कि वह उसके रास्ते से हट जाये पर वह उसके रास्ते से नहीं हटी। उसने उसे ठोकर भी मारी पर फिर भी वह बार बार उसके पैरों के पास आ कर ही रुक जाती थी। जितनी बार वह उसको ठोकर मारता उस गेंद को वहाँ से हटाना चाहता उसको वहाँ से हटाना उतना ही मुश्किल होता।

आखिर उसने उसमें एक बहुत ज़ोर की ठोकर मारी तो वह गेंद फट गयी और उसमें से एक टेढ़ी मेढ़ी छड़ी लिये एक छोटा सा कुबड़ा निकल पड़ा। वह कुबड़ा बहुत ही छोटा था। वह उस आदमी के केवल घुटनों तक ही पहुँच रहा था।

पर उस छोटे से कुबड़े ने उस आदमी को अपनी छोटी सी छड़ी से इतनी ज़ोर से मारा कि वह आदमी जमीन पर गिर पड़ा। यहाँ तक कि उसकी एक टाँग में घाव भी हो गया।

उसके बाद वह कुबड़ा उस गेंद में घुस गया, गेंद बन्द हो गयी और चिमनी में से बाहर निकल कर गायब भी हो गयी।

अधमरा सा वह आदमी अपने हाथों और पैरों पर घिसटता हुआ अपने कमरे में आया और आ कर अपने बिस्तर पर लेट गया। खाना पकाने के बारे में तो इस समय वह सोच भी नहीं सकता था।

इसके अलावा क्योंकि वह एक नीच आदमी था इसलिये अपने बारे में सोचने के अलावा वह कुछ और भी नहीं सोच सकता था। उसने सोचा क्योंकि मेरी पिटाई हुई है इसलिये मेरे दोस्तों की पिटाई भी होनी चाहिये।

सो जब उसके दोनों दोस्त शिकार से लौटे तो उन्होंने देखा कि शाम का खाना तैयार नहीं था और उनका दोस्त बिस्तर में पड़ा था।

उन्हों उससे पूछा कि क्या हुआ तो वह बोला कि कोई खास बात नहीं बस यहाँ के बुरे कोयले की वजह से उसको कुछ चक्कर सा आ गया था तो वह गिर गया। अगली सुबह वह ठीक हो गया और बेकर के साथ शिकार पर चला गया।

बेकर का दूसरा दोस्त जो घर में खाना बनाने के लिये रह गया था वह रसोईघर में आग जलाने के लिये गया तो पिछले दिन की तरह से उस दिन भी बाहर की तरफ से एक सुनहरी गेंद उछलती हुई आयी और उसके पैरों के पास आ कर रुक गयी।

उसने भी उस गेंद को अपनी ठोकर से मार कर बहुत दूर फेंकना चाहा पर वह गेंद भी बार बार उसके पैरों के पास आ कर रुक जाती थी।

आखिर उसने भी बहुत ज़ोर लगा कर उसको ठोकर मारी तो वह गेंद फट गयी और उसमें से फिर वही छोटा कुबड़ा अपनी टेढ़ी मेढ़ी डंडी के साथ निकल आया और उस डंडी से उस दोस्त को इतना मारा कि वह भी अधमरा सा ही हो गया। वह भी वहाँ से उठ कर अपने बिस्तर पर जा लेटा।

जब उसके दोनों दोस्त शाम को शिकार से लौटे तो उन्होंने देखा कि शाम का खाना तैयार नहीं था और उनका यह दोस्त भी बिस्तर में पड़ा था।

उन्होंने उससे पूछा कि क्या हुआ तो वह भी यही बोला कि कोई खास बात नहीं बस यहाँ के बुरे कोयले की वजह से उसको कुछ चक्कर सा आ गया था जिसकी वजह से वह गिर पड़ा और उसको चोट आ गयी।

बेकर बोला — "यह बात मेरी तो कुछ समझ में नहीं आयी। मैं खुद कल घर पर रहूँगा और देखता हूँ कि क्या बात है।"

पहले दोनों दोस्त बोले — "हाँ हाँ तुम भी रह कर देख लेना। तुमको भी ऐसे ही चक्कर आ जायेंगे।"

अगले दिन बेकर खाना बनाने के लिये घर पर रह गया और बाकी दोनों दोस्त शिकार पर चले गये। वह भी आग जलाने के लिये रसोईघर में गया तो उसके पैरों के बीच में भी एक सुनहरी गेंद आ पड़ी और बराबर उछलती रही।

बेकर एक कुर्सी के ऊपर खड़ा हो गया तो वह गेंद भी उसकी कुर्सी पर चढ़ कर उछलने लगी। फिर वह एक मेज पर चढ़ गया तो वह गेंद वहाँ भी कूद कर चढ़ गयी और उछलने लगी।

फिर उसने वह कुर्सी मेज पर रख ली और उस कुर्सी पर खड़े हो कर शान्ति से एक मुर्गी के पंख नोचने लगा ताकि वह गेंद कुर्सी की टाँगों के बीच में आराम से उछलती रहे।

बहुत जल्दी ही वह गेंद उछलते उछलते थक गयी और उसमें से वह छोटा सा कुबड़ा निकला — "नौजवान, तुम मुझे अच्छे लगे।

तुम्हारो दोस्तों ने तो मुझे ठोकर मारी जबकि तुमने नहीं। उनकी तो मैंने पिटाई की पर तुम्हारी मैं सहायता करूँगा।"

बेकर खुशी से बोला — "बहुत अच्छा। तब अभी तो तुम खाना बनाने में मेरी सहायता करो। तुमने पहले ही मेरा काफी समय बर्बाद कर दिया है।

जाओ पहले मेरे लिये लकड़ी ले कर आओ और फिर उसको पकड़ कर रखना जब तक मैं उसे काटता हूँ।"

वह कुबड़ा लकड़ी का एक लट्ठा ले आया और उस लट्ठे को सीधा रखने के लिये उस लट्ठे के ऊपर झुका और बेकर ने लकड़ी काटने के लिये अपनी कुल्हाड़ी उठायी।

पर यह क्या? बेकर ने उस लट्ठे को काटने की बजाय वह कुल्हाड़ी उस कुबड़े की गर्दन पर चला दी। कुबड़े का सिर कट कर अलग गिर गया और वह मर गया। उसका शरीर उसने कुँए में डाल दिया।

बेकर के दोस्त जब शिकार से वापस लौटे तो वह बोला — "तुम बेचारे लोग। यह कोई खराब कोयले की बात नहीं थी। किसी की मार ने तुम लोगों को तकलीफ पहुँचायी थी।"

"क्या? उसने तुमको नहीं मारा?"

"नहीं, एक बार भी नहीं। बल्कि उलटे मैंने उस कुबड़े का सिर काट डाला और उसका शरीर कुँए में फेंक दिया।"

"क्या तुम ठीक कह रहे हो?"

"अगर तुम्हें मेरे ऊपर विश्वास नहीं हो रहा तो तुम मुझे कुँए में नीचे उतार दो। मैं तुम लोगों को वहाँ से उसको अभी निकाल कर ले आता हूँ।"

उन लोगों ने बेकर की कमर में एक रस्सी बाँध दी और उसको कुँए में नीचे उतार दिया।

कुँए में आधे रास्ते जा कर एक बहुत बड़ी खिड़की थी जिसमें से रोशनी बाहर आ रही थी। बेकर ने उस खिड़की में से झाँका तो उसने देखा कि राजा की तीनों लड़कियाँ एक बन्द कमरे में सिलाई और कढ़ाई कर रहीं थीं।

राजा की लड़कियों को देख कर तो बेकर बहुत खुश हुआ।

राजा की सबसे बड़ी बेटी ने उससे कहा — "तुम अपनी ज़िन्दगी चाहते हो तो यहाँ से भाग जाओ। अब जादूगर के आने का समय हो गया है। तुम रात को आना जब वह सो रहा हो। तब तुम आ कर हम सबको आजाद करा देना।"

खुशी खुशी बेकर कुँए में और नीचे उतरने लगा और उसकी तली तक पहुँच गया। उसने उस कुबड़े का शरीर उठाया और उसको अपने दोस्तों को दिखाने के लिये उसको ऊपर ले आया।

उसी रात उसके दोस्तों ने उसको एक तलवार के साथ कुँए में फिर से नीचे उतार दिया ताकि वह राजा की बेटियों को आजाद करा सके।

वह उसी बड़ी खिड़की से अन्दर घुस गया। वहीं सोफे पर वह जादूगर सो रहा था और राजा की तीनों बेटियाँ उसको पंखा झल रही थीं। अगर वह एक पल के लिये भी अपना पंखा झलना बन्द कर देतीं तो वह जादूगर उठ जाता।

बेकर बोला — "तुम लोग रुको मैं इस जादूगर की इस तलवार से हवा करता हूँ।"

कह कर उसने तलवार के एक ही वार से उस जादूगर का सिर काट डाला। वह मर गया और उसका कटा हुआ सिर कुँए की तली में जा पड़ा।

राजा की बेटियों ने आलमारी की ड्रौअर खोलीं तो उनमें उनको बहुत सारे हीरे, नीलम और लाल भरे हुए मिल गये। बेकर ने उनको एक टोकरी में भर लिया और फिर उसे रस्सी से बाँध कर अपने दोस्तों से कह कर उसे ऊपर खिंचवा दिया।

इसी तरह से उसने उन लड़कियों को भी ऊपर भेज दिया।

जब वह लड़कियों को रस्सी से बाँध कर ऊपर भेज रहा था तो जब उसने पहली लड़की की कमर में रस्सी बाँधी तो वह बोली — "यह अखरोट लो।"

जब उसने दूसरी लड़की की कमर में रस्सी बाँधी तो वह बोली — "लो यह बादाम लो।"

तीसरी लड़की तो उसकी प्रेमिका थी। आखीर में जाने की वजह से उसने उसको चूम लिया और एक हेज़ल नट[74] दिया।

राजकुमारियों को ऊपर भेजने के बाद अब बेकर के ऊपर जाने की बारी थी। वह अपने इन दोनों दोस्तों पर बिल्कुल भी भरोसा नहीं करता था।

उन्होंने उस कुबड़े के बारे में उससे छिपा कर पहले ही यह साबित कर दिया था कि वे भरोसा करने लायक नहीं थे। इसलिये उसने अपनी कमर में रस्सी बाँधने की बजाय उसे उस सिर कटे जादूगर की कमर में बाँध दिया।

जब उसके दोस्तों ने उसको खींचा तो वह शरीर ऊपर और ऊपर चलता चला गया लेकिन फिर अचानक धम्म से वह कुँए की तली में गिर पड़ा। इसका मतलब यह था कि बेकर का अन्दाजा सही था। उन पर सचमुच ही विश्वास नहीं किया जा सकता था।

यह सब उन लोगों ने इसलिये किया ताकि वे राजा की बेटियों को राजा के पास सही सलामत पहुँचा सकें और यह कह सकें कि उनको उन्हीं ने आजाद कराया था।

उसके बाद राजा अपनी घोषणा के अनुसार अपनी दो बेटियों की शादी उन दोनों से कर देता।

---

[74] Hazelnut – a kind of nut. See its picture above.

यह देख कर कि बेकर के दोस्तों ने अब रस्सी खींचना बन्द कर दिया है राजा की बेटियों ने चिल्लाना शुरू कर दिया — "यह क्या? तुमने उसको तो नीचे ही छोड़ दिया जिसने हमको आजाद कराया?"

वे दोनों बोले — "चुप रहो। अगर तुम यह जान लो कि तुम्हारे लिये क्या अच्छा है और क्या बुरा तो तुम चुपचाप हमारे साथ महल चली चलो और हमारी हॉ में हॉ मिलाती रहो।"

वे दोनों दोस्त तीनों राजकुमरियों को ले कर राजा के पास गये और यह सोचते हुए कि इन्हीं आदमियों ने मेरी बेटियों का छुड़ाया है राजा ने उन दोनों को गले लगाया और बहुत खुश हुआ।

हालॉकि वे दोनों ही आदमी उसकी पसन्द के नहीं थे पर फिर भी उसने उन दोनों को अपनी एक एक बेटी देने का वायदा किया। पर उसकी बेटियों ने शादी को टालने का कोई न कोई बहाना बना दिया। वे बेकर के लौटने का इन्तजार कर रही थीं।

उधर कुॅए में छोड़े हुए बेकर को उन तीनों लड़कियों की दी हुई भेंटें याद आयीं तो सबसे पहले उसने अखरोट तोड़ा। उसमें से एक राजकुमार के पहनने लायक चमकती हुई पोशाक निकली।

फिर उसने बादाम तोड़ा तो उसमें से छह घोड़ों से खींची जाने वाली एक गाड़ी निकली। फिर उसने हेज़ल नट तोड़ा तो उसमें से बहुत सारे सिपाही निकल पड़े।

उसने राजकुमार वाले वे कपड़े पहने और फिर उन छह घोड़ों में से एक घोड़े पर बैठ कर सिपाहियों के साथ वहाँ से निकल कर राजा के पास जा पहुँचा।

जब राजा को एक भले आदमी के आने का पता चला तो उसने अपना एक खास दूत उसको अन्दर लाने के लिये भेजा।

दूत ने उससे पूछा — "तुम लड़ाई चाहते हो या शान्ति?"

बेकर बोला — "जो मुझे प्यार करते हैं उनसे शान्ति और जिन्होंने मुझे धोखा दिया है उनसे लड़ाई।"

राजा की बेटियाँ उसको देखने के लिये एक मीनार पर चढ़ गयीं थीं। उसको देखते ही वे चिल्लायीं — "यही है तो वह आदमी जिसने हमें आजाद कराया है।"

सबसे बड़ी लड़की बोली — "यह मेरा दुलहा है। यह मेरा दुलहा है।"

दोनों दोस्त जिन्होंने अपने अपने हथियार उठा लिये थे और मैदान में पहुँच चुके थे, बोले — "यह किसान वेश बदल कर यहाँ क्या करने आया है?"

बेकर की पूरी सेना ने फायर कर दिया और उसके वे दोनों दोस्त वहीं मर गये।

राजा ने उस नये आने वाले का अपनी बेटियों को आजाद कराने वाले की तरह से स्वागत किया।

तब वह राजा के सामने सिर झुका कर बोला — "सरकार मैं वही बेकर हूँ जिसको आपने अपनी बेटी की शादी करने से मना कर दिया था।"

राजा तो यह सुन कर आश्चर्य में पड़ गया पर फिर उसने अपनी घोषणा के अनुसार अपनी सबसे बड़ी बेटी की शादी उस बेकर के साथ कर दी।

बेकर ने उस राज्य पर फिर बहुत सालों तक ख़ुशी ख़ुशी राज किया।

11 ग्वालिन रानी[75]

एक बार एक राजा और रानी थे जिनके कोई बच्चा नहीं था। एक बुढ़िया ने उनको बताया कि उनके या तो एक लड़का होगा जो घर छोड़ कर चला जायेगा और वे उसको कभी नहीं देख पायेंगे।

और या फिर वह एक बेटी ले लें जिसको वे अठारह साल की उम्र तक रख पायेंगे – वह भी जब जबकि वे उस पर ठीक से नजर रख पाये तो वरना... ।

राजा और रानी ने कहा कि वे बेटी से ही सन्तुष्ट थे।

समय आने पर उनके घर एक बेटी हुई। राजा ने उसके लिये जमीन के नीचे एक बहुत ही सुन्दर महल बनवाया और वह उसी में रहने, पलने और बढ़ने लगी। उस लड़की को इस बात का ज़रा भी पता नहीं था कि जमीन के ऊपर भी कुछ है।

जब वह अठारह साल की होने को आयी तो उसने अपनी आया से प्रार्थना की कि वह उस महल का दरवाजा खोल दे। हालाँकि आया ने उसको दरवाजा खोलने के लिये काफी मना किया पर वह उससे जिद करती रही तो आखिर आया ने उसके लिये महल का दरवाजा खोल दिया।

लड़की दरवाजे से बाहर निकली तो उसने अपने आपको एक बागीचे में पाया। सूरज देख कर उसको बहुत अच्छा लगा। उसने

[75] The Milkmaid Queen. Tale No 81. A folktale from Legborn area, Italy, Europe.

सूरज पहली बार देखा था। आसमान के बहुत सारे रंग पहली बार देखे थे। फूल और बड़े बड़े पंखों वाली चिड़ियें पहली बार देखी थीं कि वे कैसे नीचे उड़ उड़ कर आ रही थीं।

इतने में एक बड़े पंजे वाली चिड़िया आयी और उसको अपने पंजों में दबा कर उड़ा कर ले गयी। वह चिड़िया उड़ती गयी और उड़ती गयी और उड़ती गयी और जा कर खेत में बने एक मकान पर बैठ गयी।

उसने उस लड़की को उस घर की छत पर ले जा कर छोड़ दिया और उड़ गयी। उस समय दो किसान उस खेत में काम कर रहे थे – एक पिता और एक उसका बेटा,। उन्होंने देखा कि उनके मकान के ऊपर कोई चमकीली सी चीज़ बैठी है।

सो उन्होंने एक सीढ़ी उठायी और छत पर चढ़ गये। वहॉ पहॅुच कर उन्होंने देखा कि वहॉ तो एक सुन्दर सी लड़की चमकीले हीरों का ताज पहने खड़ी है।

उस किसान का यही एक बेटा था जो उसके साथ काम कर रहा था और पॉच बेटियॉ थीं। उसकी पॉचों बेटियॉ ग्वालिनें थीं। उस किसान ने उस लड़की को अपनी उन पॉचों बेटियों के साथ ही रख लिया और सब साथ साथ ही रहने लगे।

वह किसान हर महीने उस लड़की के ताज का एक हीरा बेच देता और उससे आये पैसों से परिवार का खर्च चलाता था।

जब लड़की के ताज के सब हीरे बिक गये तो लड़की किसान की पत्नी से बोली — "मैं आप लोगों से दूर नहीं रहना चाहती माँ। आप इस देश के राजा के पास जायें और उनसे कहें कि वह आपको कढ़ाई करने के लिये कुछ दे दें।"

सो किसान की पत्नी उस देश के राजा के पास गयी और कढ़ाई के लिये कुछ माँगा तो रानी बोली — "तुम अपनी ग्वालिन बेटियों से यह उम्मीद कैसे रखती हो कि वह कुछ कढ़ाई कर लेंगी?"

फिर भी रानी ने चतुराई से कढ़ाई करने के लिये उसको एक कैनवैस[76] दे दिया। किसान की पत्नी उस कैनवैस को ले कर घर आ गयी और उस कैनवैस को उसने उस लड़की को दे दिया।

लड़की ने उस कैनवैस पर इतनी सुन्दर कढ़ाई की कि उसको देख कर तो रानी की बोलती ही बन्द हो गयी।

रानी ने किसान की पत्नी को दो सोने के सिक्के और एक साफ करने वाला कपड़ा[77] दिया जो उस लड़की को काढ़ना था। कुछ दिन बाद किसान की पत्नी कढ़ाई किये गये सफाई करने वाले कपड़े को ले कर रानी के पास गयी तो रानी ने देखा कि वह कपड़ा तो बहुत ही सुन्दर कढ़ा हुआ था।

[76] Translated for the word "Canvas" – canvas is a type of thick coarse cloth
[77] Translated for the word "Dusting cloth"

इस बार रानी ने उसको तीन सोने के सिक्के दिये और काढ़ने के लिये एक पुरानी फटी हुई स्कर्ट दे दी। जब वह स्कर्ट रानी को वापस दी गयी तो वह तो शाम को पहने जाने वाली पोशाक का ही एक हिस्सा लग रही थी।[78]

अबकी बार रानी से नहीं रहा गया। उसने उस किसान की पत्नी से पूछा — "तुम्हारी बेटी ने इतनी सुन्दर कढ़ाई करनी सीखी कहाँ?"

किसान की पत्नी ने जवाब दिया — "एक नन[79] ने उसे यह सब सिखाया था।"

रानी बोली — "हो सकता है पर फिर भी यह किसी देहातिन का काम नहीं है। खैर कोई बात नहीं। मैं चाहूँगी कि वह मेरे बेटे की शादी की सारी पोशाकों पर कढ़ाई करे।"

यह सुन कर कि एक ग्वालिन उसकी शादी की पोशाकें काढ़ रही थी राजकुमार ने उस ग्वालिन से मिलने और उसको कढ़ाई करते देखने की इच्छा प्रगट की।

---

[78] It was looking so nice that it looked like a part of the eveniong dress. Evening dress is supposed to be a good dress in western world.

[79] A nun is a member of a religious community of women, living under vows of poverty, chastity, and obedience. She may have decided to dedicate her life to serving all other living beings, or she might be an ascetic who voluntarily chose to leave mainstream society and live her life in prayer and contemplation in a monastery or convent. The term "nun" or "Sister" is applicable to both Eastern and Western Catholics, Orthodox Christians, Anglicans, Lutherans, Jains, Buddhists, Taoists, Hindus and some other religious traditions. See a picture of nun above.

वह एक शरारती नौजवान था सो उसकी यह इच्छा ज़ोर पकड़ गयी। एक दिन वह अचानक उसके घर पहुँच गया और उसने पीछे से जा कर उसको चूम लिया।

इस पर उस लड़की की कढ़ाई करने वाली सुई उस राजकुमार की छाती में चुभ गयी और दिल तक जा पहुँची जिससे वह मर गया।

यह देख कर लड़की तो सन्न रह गयी पर इसमें उसकी कोई गलती नहीं थी। उसको पकड़ कर राजा की अदालत में ले जाया गया। उस अदालत में राजा की चार लड़कियाँ जज के रूप में थीं।

राजा की सबसे बड़ी लड़की ने इस लड़की के लिये मौत की सजा सुनायी। दूसरी लड़की ने उसको ज़िन्दगी भर के लिये जेल में डालने की सजा दी। तीसरी लड़की ने उसको बीस साल जेल में रहने की सजा सुनायी।

पर चौथी लड़की जो राजा की सबसे छोटी लड़की थी और जो सबसे ज़्यादा दयालु थी समझ गयी कि यह मौत तो उसका भाई अपने लिये अपने आप ही ले कर आया था। उसको मारने में इस लड़की का कोई हाथ नहीं है।

उसने उस लड़की के लिये एक मीनार में आठ साल के लिये बन्द करने की सलाह दी। और साथ में उसने यह भी कहा कि राजकुमार का शरीर हमेशा उसके सामने रखा रहना चाहिये ताकि वह उसको देख देख कर पछताती रहे।

सबसे छोटी लड़की की बात मान ली गयी और उस ग्वालिन लड़की को एक मीनार में बन्द कर दिया गया। जब वह मीनार की तरफ ले जायी जा रही थी तो राजा की सबसे छोटी लड़की जिसने उसको यह सजा दी थी उसके कान में फुसफुसायी — "तुम डरना नहीं मैं तुम्हारे साथ हूँ।"

राजा की बेटी अपनी बात की सच्ची थी। वह उस ग्वालिन कैदी को खाने के लिये रोज शाही रसोई के बढ़िया बढ़िया पकवान भेजती रही।

जब उस ग्वालिन को मीनार में कैद हुए तीन साल हो गये तो मीनार के पास एक दिन फिर से वही बड़े पंखों वाली चिड़िया प्रगट हुई जो उस लड़की को उसके जमीन के अन्दर वाले महल से उठा कर लायी थी। उसने मीनार की चोटी पर एक घोंसला बनाया और वहाँ दस अंडे दिये। उन दस अंडों में से दस बच्चे निकले।

वह कैदी ग्वालिन उस चिड़िया से रोज कहती — "चिड़िया ओ चिड़िया, जैसे तुम मुझे मेरे घर से बाहर निकाल कर लायी थीं उसी तरह तुम मुझे यहाँ से भी बाहर निकालो।"

मीनार के पास ही एक और महल था जिसमें राजा की तीनों बड़ी वाली लड़कियाँ रहती थीं। एक दिन जब वे खिड़की पर खड़ी थीं तो उन्होंने उस ग्वालिन के शब्द सुन लिये और राजा को जा कर उनको बता दिया।

राजा ने हुक्म दिया कि उस चिड़िया और उसके बच्चों को उस मीनार से नीचे फेंक दिया जाये ताकि वे सब जमीन पर गिरते ही मर जायें।

चौकीदारों ने उस चिड़िया का घोंसला उसके बच्चों के साथ साथ उस मीनार से नीचे फेंक दिया। नीचे गिरते ही उस चिड़िया के सारे बच्चे मर गये।

उसी शाम उस ग्वालिन ने उस बड़ी चिड़िया को अपने मरे हुए बच्चों के ऊपर उड़ते हुए देखा। उसकी चोंच मे एक खास किस्म की घास का गुच्छा था। उसने उस घास के गुच्छे को उन मरे हुए बच्चों के ऊपर फेरा और उसके सब बच्चे ज़िन्दा हो गये।

यह देख कर ग्वालिन को बड़ा आश्चर्य हुआ और वह उस चिड़िया से बोली — "मुझे भी थोड़ी सी यह जादू की घास ला दो न।"

यह सुन कर वह चिड़िया वहाँ से उड़ गयी और अपने पंखों में वैसी ही थोड़ी सी घास ले कर वापस आ गयी। उस लड़की ने वह घास उससे ले ली और राजकुमार के शरीर को उस घास से सहलाया। धीरे धीरे राजकुमार उठ बैठा और ज़िन्दा हो गया।

यह कहना मुश्किल है कि उन दोनों में से कौन ज़्यादा खुश था, ग्वालिन या राजकुमार। पर ग्वालिन ने उसको गले से लगा लिया और वे काफी देर तक एक दूसरे से हँस हँस कर बातें करते रहे।

हालाँकि उन्होंने यह ख़ुशी की खबर किसी को नहीं बतायी पर फिर भी राजा की सबसे छोटी बेटी को यह पता चल गया कि उसका भाई ज़िन्दा हो गया है और उसने उस दिन वहाँ बहुत सारे स्वादिष्ट खाने भिजवाये और फिर वह वहाँ रोज रोज वैसे ही खाने भेजती रही।

उसके भाई ने अपनी बहिन को एक गिटार भी भिजवाने के लिये कहा तो उसने उसको एक गिटार भी भिजवा दिया।

अब क्या था ग्वालिन और राजकुमार उस मीनार के ऊपरी हिस्से में गा बजा कर अपने दिन गुजारने लगे। पास वाले महल में से जिसमें वे तीन लड़कियाँ रहती थीं उस मीनार से गाने और गिटार बजाने की आवाज सुनी तो उन्होंने सोचा कि वे वहाँ जा कर देखें कि वहाँ क्या हो रहा है।

पर जब वे तीनों लड़कियाँ वहा पहुँची तो देखा कि राजकुमार अपने ताबूत में पहले की तरह से लेटा हुआ था और वह लड़की भी दुखी सी बैठी थी सो वे तीनों बहिनें बेवकूफों की तरह से अपना सा मुँह ले कर वहाँ से वापस लौट आयीं। पर उस रात उन्होंने मीनार से आती गाने बजाने की आवाज फिर से सुनी।

वे अपने पिता राजा के पीछे पड़ी रहीं कि उस मीनार में कुछ गड़बड़ हो रही थी इसलिये उस लड़की को किसी दूसरी जगह

भिजवा दिया जाये। और उस ग्वालिन को उन्होंने एक दूसरी जेल में भिजवा ही दिया।

जब चौकीदार उसको लेने के लिये वहाँ गये तो उन्होंने देखा कि वह लड़की तो राजकुमार की बाँहों में बाँहें डाल कर बैठी हुई है। यह बात चौकीदारों ने जा कर राजा से कही तो राजा, रानी और उनकी चारों बेटियाँ वहाँ राजकुमार को ज़िन्दा देखने के लिये आये।

उन्होंने देखा कि राजकुमार तो सचमुच ज़िन्दा था और तन्दुरुस्त था। यह देख कर तो सारे शाही परिवार की बोलती बन्द हो गयी। राजकुमार बोला — "पिता जी, माँ, बहिनों, मैं आप सबको अपनी पत्नी से मिलाना चाहता हूँ।"

उसकी सबसे छोटी बहिन ने ताली बजायी पर उसकी दूसरी तीनों बहिनों को एक ग्वालिन को अपनी भाभी बनाने का विचार कुछ जमा नहीं।

जब वे उसको बिल्कुल ही नहीं सह सकीं तो उन्होंने उसकी हँसी उड़ानी शुरू कर दी और उसका अपमान करना शुरू कर दिया।

राजा ने अपने बेटे की शादी उस ग्वालिन के साथ तय कर दी और शादी का दिन पास आने लगा। शादी से पहले दुलहिन ने राजकुमार की बहिनों से कहा — "अब मुझे घर जाना चाहिये और अपने माता पिता से मिलना चाहिये। मुझे बताओ कि मैं तुम लोगों के लिये वहाँ से क्या क्या भेंट ले कर आऊँ।"

सबसे बड़ी लड़की ने कहा — "एक बोतल दूध।"

दूसरी लड़की बोली — "थोड़ी सी रिकोटा चीज़[80]।"

तीसरी लड़की बोली — "मुझे तो एक टोकरी लहसुन चाहिये।"

यह सुन कर वह ग्वालिन अपने घर चली गयी पर वह खेत पर नहीं गयी। अबकी बार वह अपने असली माता पिता के पास गयी जिन्होंने उसको ज़मीन के नीचे उसके लिये महल बनवा कर उसमें उसको अठारह साल तक कैद रखा था।

एक हफ्ते बाद वह एक बहुत सुन्दर गाड़ी में जिसको सफेद घोड़े खींच रहे थे दुलहे के घर लौटी। उसको इतनी बढ़िया शाही गाड़ी में बैठा देख कर उसकी तीनों बड़ी ननदों के मुँह से एक साथ ही निकला — "अरे यह ग्वालिन एक शाही गाड़ी में?"

वह ग्वालिन गाड़ी में से उनकी भेंटें ले कर बाहर निकली। उसने अपनी सबसे बड़ी ननद को एक बोतल दूध दिया। यह दूध एक चॉदी की बोतल में था और यह बोतल एक सुनहरे कपड़े में लिपटी हुई थी।

दूसरी ननद को उसने रिकोटा चीज़ दी। वह सोने के डिब्बे में रखी थी और तीसरी ननद को उसने एक टोकरी लहसुन दी। उस लहसुन की कलियॉ हीरे की और पत्ते पन्ने के थे।

[80] It is kind of processed Paneer.

उसकी सबसे छोटी ननद ने पूछा — "और तुम मेरे लिये क्या ले कर आयीं भाभी जिसने हमेशा तुम्हें इतना प्यार किया?"

ग्वालिन ने गाड़ी का दरवाजा खोला और उसमें से उसने एक बहुत ही सुन्दर नौजवान को बाहर निकाला। उसको उसने अपनी सबसे छोटी ननद के हवाले करते हुए उससे कहा — "यह मेरा छोटा भाई है जो मेरे वहॉ से आने के बाद पैदा हुआ था। इसे मैं तुम्हें सौंपती हूँ।"

ग्वालिन की शादी उस राजकुमार से हो गयी और राजकुमार की बहिन की शादी उसके बाद ग्वालिन के भाई से हो गयी। सब लोग खुशी खुशी रहने लगे।

List of Stories of "Folktales of Italy-1"

1. Dauntless Little John
2. The Ship With Three Decks
3. The Man Who Came Out Only at Night
4. And Seven
5. Body Without Soul
6. Money Can Do Everything
7. The Little Shepherd
8. The Little Girl Sold With the Pears
9. The Snake
10. Three Castles
11. The Prince Who Married a Frog
12. The Parrot
13. Twelve Bulls
14. Crack and Crook
15. The Canary Prince
16. King Krin
17. Those Stubborn Souls
18. The Pot of Marjoram
19. The Billiard's Player
20. Animal Speech

List of Stories of "Folktales of Italy-2"

1. The Three Cottages
2. The Peasant Astrologer
3. The Wolf and the Three Girls
4. The Land Where One Never Dies
5. The Devotee of St Joseph
6. Three Crones
7. The Crab Prince
8. Silent For Seven Years
9. Pome and Peel
10. Cloven Youth
11. The Happy Man's Shirt
12. One Night in Paradise
13. Jesus and Saint Peterin Friuli
14. The Magic Ring
15. The King's Daughter Who Could Never Get Figs
16. The Three Dogs
17. Uncle Wolf

18. The King of Animals
19. Dear As Salt
20. The Queen of the Three Mountains of Gold

List of Stories of "Folktales of Italy-3"

1. The Dragon With Seven Heads
2. The Sleeping Queen
3. The Son of the Merchant from Milan
4. Salmanna Grapes
5. Enchanted Castle
6. The Old Woman's Hide
7. Olive
8. Catherine Sly Country Lass
9. The Daughter of the Sun
10. The Golden Ball
11. The Milkmaid Queen

List of Stories of "Folktales of Italy-4"

1. The North Wind's Gifts
2. The Sorceror's Head
3. Apple Girl
4. The Palace of the Doomed Queen
5. Fourteen
6. Crystal Rooster
7. A Boat For Land and Water
8. Louse Hide
9. The Love of the Three Pomegranates
10. The Mangy One
11. Three Blind Queens
12. One Eye
13. False Grandmother
14. Shining Fish
15. Miss North Wind and Mr Zephir
16. The Palace Mouse and the Field Mouse
17. Crack, Crook and Hook
18. First Sword and the Last Broom
19. Mrs Fox and Mr Wolf
20. The Five Scapegraces
21. The Tale of the Cats
22. Chick

List of Stories of “Folktales of Italy-5”

1. The Princesses Wed to the First Passer By
2. The Thirteen Bandits
3. Three Orphans
4. Sleeping Beauty and Her Children
5. Three Chicory Gatherers
6. Beauty With the Seven Dresses
7. Serpent King
8. The Crab With the Golden Eggs
9. Nick Fish
10. Misfortune
11. Pippina Serpent
12. Catherine the Wise
13. Ismailian merchant
14. The Dove
15. Dealer in Peas and Beans
16. The Sultan With the Itch

List of Stories of “Folktales of Italy-6”

1. The Wife Who Lived on Wind
2. Wormwood
3. The King of Spain and the Engkish Milird
4. The Bejeweled Boot
5. Lame Devil
6. Three Tales by Three Sons of Three Merchants
7. The Dove Girl
8. Jesus and St Peter in Sicily
9. The Barber's Timepiece
10. The Marriage of a Queen and a Bandit
11. The Seven Lamb Heads
12. The Two Sea Merchants
13. A Boat Loded With…
14. The King's Son in Henhouse
15. The Mincing Princess
16. Animal Talk and the Nosy Wife
17. The Calf With the Golden Horns
18. The Captain and The General

List of Stories of "Folktales of Italy-7"

Some Other Books of Italian Folktales in Hindi

1353 **Il Decamerone.** By Giovanni Boccaccio. 3 vols
1550 **Nights of Straparola** By Giovanni Francesco Straparola. 2 vols.
1634 **Il Pentamerone.** By Giambattista Basile. 50 tales. 3 vols
1885 **Italian Popular Tales.** By Thomas Frederick Crane. 109 tales. 4 vols

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आगयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022